तत्वज्ञान उपवन

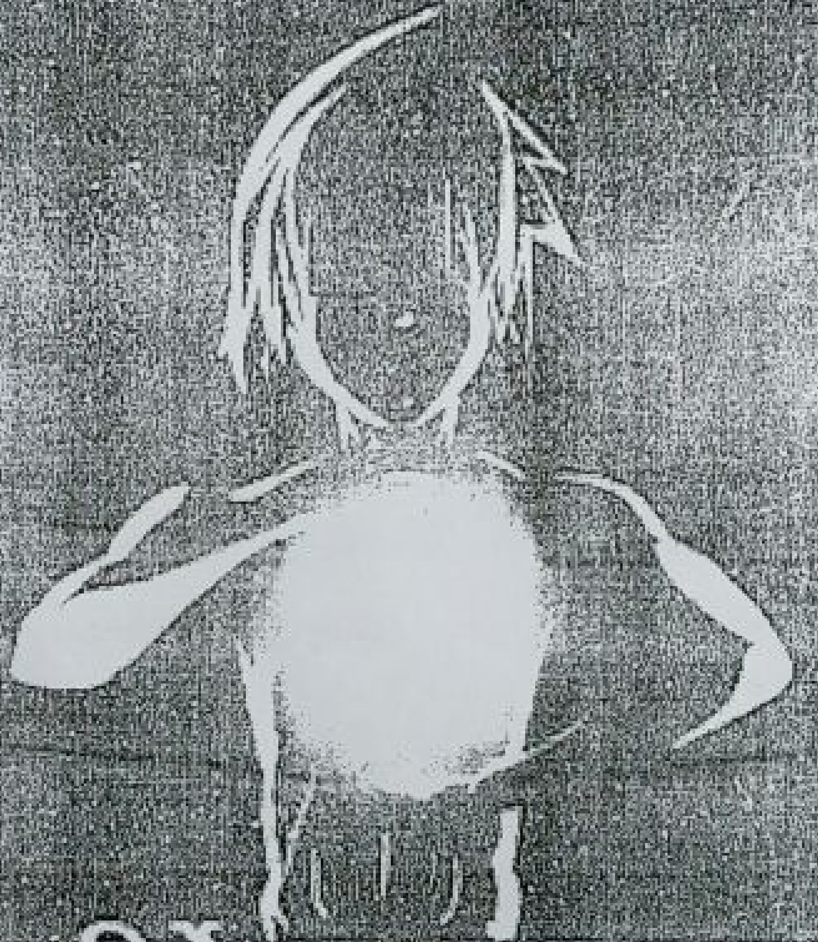

प्रश्न 1- पहले उत्तर के अंतिम अक्षर से ही दूसरा उत्तर शुरु होना चाहिये।

[1] 6 अंगुल बराबर एक नाप = प........

[2] नंदिश्वर द्वीप मे एक पर्वत का नाम = ...

[3] चित्रा पृथ्वी का एक भाग = ...

[4] नापने का सबसे बडा प्रमाण = ...

[5] खर भाग की 16 पृथ्वीयो मे से एक पृथ्वी का नाम = ...

[6] 16 स्वर्गो मे से एक स्वर्ग का नाम = ...

[7] जम्बूद्वीप की 14 नदियो मे से एक नदी का नाम = ...

[8] एक वात वलय का नाम = ...

[9] सुमेरू पर्वत पर स्थित एक वन = ...

[10] एक संहनन का नाम = ...

प्रश्न 2- पहिचनो मै कौन हूँ।

[1] ज या र् ध वि

[2] भ वि प्र त त त् र

[3] य त ल वा व

[4] त द ज न् ग

[5] र् णी स पि व अ

[6] द ख जी र शि स म् मे

[7] री क् मु गि ता

[8] त द अ र् थ ण् ड व्र न

[9] प्र बु अ ध ति द्

[10] ति वि स अ म् ग थि भ

प्रश्न 3- आओ खेले संख्या से।

1] नरक मे अकृत्रिम चैत्यालय = ...

2] सोमनस वन की ऊंचाई = ...

3] अचल मेरू की ऊंचाई = ...

4] 11 वा द्वीप कितने योजन का है = ...

5] सौधर्म इंद्र की पत्नियां = ...

6] समवायांग मे कितने पद है = ...

7] पृथ्वी काय सम्बन्धी कितनी योनिया है = ...

8] 406 जीवसमास मे कुल मनुष्य सम्बन्धी जीवसमास = ...

9] घाति कर्म मे सर्व घाति प्रकृतिया कितनी है = ...

10] 6वे नरक के बिलो की संख्या कितनी है = ...

प्रश्न 4- टन टन टन टन टेलिफोन, सिद्धप्रभु का आया फोन....

जैसे

1] 4608362528 = पंच परमेष्ठी

अरिहंत 46 सिद्ध08 आचार्य 36 उपाध्याय 25 सर्व साधु 28

[2] 5928529342
[3] 5120150253
[4] 3361206021
[5] 35101222512
[6] 0706061421
[7] 8005020507
[8] 2091821003
[9] 3904452440
[10] 856974810
[11] 130970531

प्रश्न 5- सही विकल्प चुनो।

[1] वज्रधर स्वामि कौनसे द्वीप मे रहते है?

[a] धातकी खंड [b]पुष्करवर द्वीप

[2] पहले नरक के नारकियो की ऊंचाई कितनी है?

[a] 7 धनुष 6 हाथ 3 अंगुल

[b] 7 धनुष 3 हाथ 6 अंगुल

[3] 9वे ग्रैवेयक की उत्कृष्ट आयु कितनी है?

[a] 31सागर [b] 21सागर

[4] घाति कर्म की प्रक्रतिया कितनी है?

[a] 47 [b] 48

[5] दुसरा काल कितना बडा होता है?

[a] 2 कोडाकोडी सागर [b] 3 कोडाकोडी सागर

[6] भवन वासी कितने प्रकार के होते है?

[a] 8 [b] 10

[7] कितने कर्मो का उपशम होता है?

[a] 1 कर्म [b] 8 कर्म

[8] समवशरण मे कितनी सीढियां होती है?

[a] 2000 [b] 20000

[9] करण परिणाम है।

[a] सम्यकत्व सहित [b] मिथ्यात्व सहित

[10] पर्याप्तिया कितनीं होती है?

[a] 6 [b] 7

्रश्न 6- निम्न प्रश्नो के उत्तर लिखो।

1] सांतवे नरक से निकला जीव नियम से कौनसी ाति में जांता हैं?

2] भद्रशाल वन कौनसी पृथ्वी पर है?

3] सोधर्म ऐशान के कितने विमान होते है?

4] साधुओ के विघ्न दूर करना क्या कहलाता है?

5] पर्याप्तिया कैसे प्रारम्भ तथा कैसे अंत होती हैं?

7] तदुभय किस तप का भेद है?

8] सिद्धशिला का विस्तार कितना हैं?

9] दूसरों के द्‌वारा त्यागे स्थान में निवास करने को क्या कहते ?

10] पारिणामिक भाव के कितने भेद हैं?

[आधार तत्वार्थसूत्र

Serial number :- 01057

नाम:- ______ पिता/पति का नाम:- ______

दूरभाष:- ______ पता:- ______

प्रश्न 1:- 1. ______ 2. ______ 3. ______

4. ______ 5. ______ 6. ______

7. ______ 8. ______ 9. ______

10. ______

प्रश्न 2:-1. ______ 2. ______ 3. ______

4. ______ 5. ______ 6. ______

7. ______ 8. ______ 9. ______

10. ______

प्रश्न3:- 1. ______ 2. ______ 3. ______ 4. ______

5. ______ 6. ______ 7. ______ 8. ______

9. ______ 10. ______

प्रश्न4:- 1. ____________

____

2. ____________

____

3. ____________

____

4. ____________

____

5. ____________

____

6. ____________

____

7. ____________

____

8. ____________

____

9. ____________

____

10. ____________

____

प्रश्न5:- 1. ______________ 2. ______________ 3. ______________

4. ______________ 5. ______________ 6. ______________

7. ______________ 8. ______________ 9. ______________

10. ______________

प्रश्न6:- 1. ______________ 2. ______________ 3. ______________

4. ______________ 5. ______________ 6. ______________

7. ______________ 8. ______________ 9. ______________

10. ______________

नाटक → पूरब और पश्चिम

Page No.
Date. / /

(2)

संचालक → अनिकेत जैन, निखिल जैन

(प. अजयप्रसाद जी एवं उनके पड़ोस में रहने वाले सेठ लक्ष्मीदास जी बाल्यकाल से ही अभिन्न मित्र थे किन्तु एक तरफ पण्डित जी ~~स्वाध्याय~~ स्वाध्याय और भक्ति के प्रति अपना जीवन समर्पित करते हैं, वहीं सेठ जी व्यापार करते हुए परिग्रह जुटाने में लगे रहते हैं।) पण्डित जी का पुत्र 'ध्रुव' और सेठ जी का पुत्र 'सम्यक' भी एक साथ एक ही class में पढ़ते हैं। दोनों ही 10वीं की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। अब आगे देखिए क्या होता है।

प्रथम दृश्य →

(पण्डित जी और सेठ जी आपस में बातचीत कर रहे हैं।) (तभी दोनों बालक खुशी-2 दौड़ते हुए आते हैं)

बालक: पिताजी! पिताजी!! हम दोनों 10वीं में ~~मिल~~ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो गए।

सेठजी: शाबास! बच्चों! शाबाश!! हमें तुम लोगों से यही आशा थी, तुमने ~~हमारे~~ विश्वास को सच्चा ठहराया। ~~अरे~~ (सेठानी से) अरे भाग्यवान! हम सभी का मुँह मीठा करवाओ। मिठाई लाओ

सेठानी: जी, अभी लाई।

पण्डितजी: अरे बच्चों! तुम दोनों उत्तीर्ण हो गए। जाओ जिनमन्दिर में जाकर भगवान को नमस्कार करके आओ।

[बच्चे: जी। (बच्चे जिनमन्दिर चले जाते हैं।)
(सेठानी मिठाई लाती है, वे लोग मिठाई खाकर प्रसन्न होते हैं तभी ---]

Teacher's Signature

सेठजी : अरे क्यों भाई अजय! ध्रुव के भविष्य के विषय में कोई विचार किया है या नहीं। वह आगे क्या करेगा, क्या पढ़ेगा?

पण्डितजी : हाँ, हाँ, भाई! सोचा है। मैं तो अब अपने ध्रुव को जयपुर में टोडरमल स्मारक महाविद्यालय में भेजूँगा। जहाँ से मेरा पुत्र जिनवाणी का स्वाध्याय कर एक बहुत बड़ा विद्वान बनकर आयेगा।

सेठजी : अरे भाई! क्या रखा है टोडरमल स्मारक में, क्या रखा है पण्डिताई में। केवल मंदिर में दो वक्त का प्रवचन ही तो करेगा। न तो कोई आजीविका का ठिकाना, न दुनियादारी का। मैं तो अपने बेटे को U.S.A. भेज रहा हूँ U.S.A मेरे एक पुराने मित्र, जो अभी वहीं रहता है उसने मुझसे कहा कि मैं उसे वहाँ भेजूँ ताकि वह वहाँ से पढ़कर बहुत बड़ा व्यापरी बने। मुझसे भी बड़ा। मैं तो कहता हूँ, तू भी अपने ध्रुव को सम्यक के साथ U.S.A. भेज दे।

पण्डितजी : नहीं भाई नहीं। मुझे तो अपने बेटे को एक शास्त्री विद्वान ~~बनाऊँगा~~ बनाना है। विदेशी लोग तो संस्कारों से वंचित रह जाते हैं और, यदि उसका पुण्य का उदय हुआ तो धन, सम्मान, प्रतिष्ठा, यश स्वयं ही उसके कदमों में झुकेंगे।

सेठजी : अरे छोड़ो ये पुण्य-पाप वगैरह की बातें। मुझे तो कुछ पल्ले ही नहीं पड़ता। तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो। मैंने तो एक मित्र होने के कारण अपनी ~~एक~~ सलाह तुम्हारे सामने रखी थी।

(इस तरह सेठ जी अपने पुत्र सम्यक को U.S.A. भेज देते हैं और पण्डित जी अपने बेटे को टोडरमल स्मारक में भेज देते हैं। वे दोनो अपने-अपने स्थान पर अध्ययन

करते है। जहाँ एक ओर ध्रुव जयपुर मे जैनदर्शन के
गूढ से गूढ रहस्यों को अपनी तीव्र बुद्धि से समझता
है, संस्कारित होता है। अच्छा वक्ता, विद्वान अध्यापक
बनता है, वही उसका मित्र सम्यक स्वयं को सम्यक
कहलवाना पसंद नही करता, वह अपना नाम SAM
(सैम) रख लेता है। वह पूरी तरह से पाश्चात्य संस्कृति
मे ढल चुका है। वह सातों व्यसनो मे लवलीन रहता
है। गलत संगति रखता है।)

(इस तरह दोनो 5 वर्ष पश्चात अपने नगर मे आते है
और एक दूसरे से मिलते है।)

दृश्य - 2

ध्रुव : अरे सम्यक! जय जिनेन्द्र! कितने दिन हो गए
तुम्हे देखे हुए

SAM : Hey dood! क्या वही पुराना जय जिनेन्द्र। आजकल
तो Modern world है। Hi, Hello का जमाना है।

ध्रुव : अरे सम्यक! तुम भूल गए क्या? पिताजी ने
बचपन मे हमें किसी का अभिवादन करने के
लिए 'जय जिनेन्द्र' बोलना सिखाया था।

SAM : अरे! वो तो पुराना जमाना था। वक्त के साथ
आदमी को भी बदलना पड़ता है। तुमने वो
कहावत नही सुनी 'Changing is the rule of the
universe'। और हाँ, मेरा नाम सम्यक-वम्यक
नही है। मेरा नाम SAM है SAM।

ध्रुव : मित्र! तुम अभी मार्ग से भटक गए हो, ~~कभी-२~~
~~सभी सुधार आ जाओगे~~ गलत रास्ते पर जा रहे हो

SAM : गलत रास्ते पर मैं नही तुम हो तुम। क्या मिलेगा
तुम्हें एक Teacher बनकर, बस 10-15 हजार
की ~~Salary~~ सैलरी और मेरे Buisness में मैं
daily 2 लाख की कमाई करता हूँ 2 Lacs. 2 Lacs

ध्रुव : अरे मित्र। कमाई 2 लाख की हो या 10 हजार की यदि न्याय और ईमानदारी की हो तो ही टिकती है अथवा पानी की तरह बह जाती है। ये सब तो पुण्य पाप पर निर्भर करता है कि किसका वेतन........।

SAM : बस-2, अपने प्रवचन मंदिर में देना, मुझे तुम्हारी फालतू की बातों को सुनने का समय नही है, मेरे पास लाखों काम है।

[(इस प्रकार SAM ध्रुव की अवहेलना कर चला जाता है और ध्रुव ऐसा सोचता है कि यदि उसमें वर्तमान में समझने की योग्यता नही है, ऐसी काललब्धि नही है तो वह स्वयं क्या कर सकता है। ऐसा विचार कर वह स्वयं को तसल्ली देता है

(वे दोनों मित्र अपने जीवन को सफल बताते हैं तो हम सभी दोनों का दैनिक जीवन देखते हैं।)
सर्वप्रथम ध्रुव का जीवन देखते हैं

दृश्य-5

[(प्रातः काल)
(ध्रुव जागता है, मुँह धोकर सामायिक करने बैठता है। नहा धोकर जिनमन्दिर में देवदर्शन करने जाता है वहाँ आधा घण्टा स्वाध्याय कर वह घर आ गया। घर से साधारण दूध नाश्ता कर विद्यालय में अध्यापन कार्य करने चला जाता है। वहाँ से आकर वह स्वाध्याय करने बैठ जाता है। शाम को जल्दी भोजन कर वह टहलते हुए मंदिर जाता है, वहाँ देवदर्शन, भक्ति कर प्रवचन करता है, घर आकर वह पू. गुरुदेव की सी.डी. सुनता है और रात्रि 10 बजे सो जाता है।

(अरे ध्रुव का जीवन एक बहुत ही साधारण, आदर्श एवं शान्तिपूर्ण जीवन है। अब हम देखते हैं कि SAM का जीवन किस प्रकार का जीवन है।

दृश्य - 4

(सुबह 10 बजे रहे हैं। SAM की माँ उसे उठाने का प्रयत्न कर रही है।)

सेठानी: अरे सम्यक! सम्यक!! उठ जाओ बेटा, उठ जाओ। देखो दस बज गए। सूरज सिर पर निकल आया।

SAM (उठकर): O MOM! क्या सम्यक-सम्यक लगा रखा है। मेरा नाम SAM है SAM! सुबह-सुबह उठकर मुझे करना क्या है? लाओ मेरा ब्रेड और जैम लाकर दो।

सेठानी: अरे बेटा! पहले नहा-धोकर जिनमन्दिर में देव दर्शन करके तो आओ।

SAM: क्या करना है मंदिर में जाकर। फालतू का समय बर्बाद क्यों करना। क्या मिलेगा मुझे मन्दिर में जाकर।

सेठानी: अरे बेटा! तू विदेश जाकर सभी धार्मिक संस्कार- - - - -

SAM: अरे! ओ हो! अब MOM आप मुझे समझाने मत लग जाना, आप क्या जानो आज का जमाना कहाँ से कहाँ जा रहा है।

सेठानी: हाँ बेटा! मैं समझ गयी कि आज का जमाना कहाँ जा रहा है।

SAM (गुस्से में): छोड़ो! जिसे देखो बस प्रवचन देने में लगा है, बात तो कोई समझता ही नहीं।

(SAM वहाँ से गुस्से में चला जाता है।)

(शाम को वह अपने दोस्तों के साथ जुआ खेलने जाता है। जुए के अड्डे पर क्या होता है देखिए।

(SAM और उसके सभी दोस्त बैठकर जुआ खेल रहे हैं।) SAM बार-बार हारता जा रहा है।)

(देखा आपने यह है वास्तविक सत्य कि ~~विदेश~~ आप विदेश जावें, और उन्नति करें, इससे आपके जीवन में कोई संकट नहीं आता परन्तु यदि आप विदेश जाकर अपने संस्कारों को विस्मृत किया तो निश्चित ही आपके जीवन में संकट आवेगा।)

इस नाटक का मूल उद्देश्य बस इतना ही है चाहे हम कितने भी उन्नत हो जावे, धनवान हो जावे किन्तु अपनी सभ्यता नही छोड़नी चाहिए। गलत कार्यों में अपनी बुद्धि नही लगानी चाहिए।

ध्रुव का सम्मान समारोह

प्रवचन खतम होकर जिनवाणी स्तुति के पश्चात् एक श्रोता मंच पर आकर

पहला श्रोता : अभी हमने पं. ध्रुव शास्त्री जी के प्रवचन सुने, वे प्रतिदिन हमें जिनवाणी का स्वाध्याय करते हैं अतः नगर की जैन समाज ने उन्हे सम्मानित करने का निर्णय लिया है। हम उन्हें समाजरत्न की उपाधि से सम्मानित करते हैं। मैं समाज के अध्यक्ष सेठ धनदत्त जैन जी से निवेदन करूँगा वे आवें और पण्डित जी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करें।

(इस प्रकार ध्रुव का सम्मान होता है।)

नेता कौन ? नाटक में छः द्रव्यों का परिचय रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है एवं अन्तिम भगवान महावीर और उनकी अहिंसा में भगवान महावीर का संक्षिप्त परिचय व अहिंसा के स्वरूप को स्पष्ट किया है।

मैं लेखक नहीं हूँ, फिर भी लिखने का काम कर रहा हूँ अतः कलापक्ष व भावपक्ष दोनों में ही त्रुटियाँ होने की पूरी संभावना है, जिनके भी ज्ञान में त्रुटियाँ आवें तो सूचित कीजियेगा। आप स्वयं भी सुधार कर या परिवर्तन/परिवर्धन कर इनका तत्त्वप्रचार में उपयोग कर सकते हैं।

यदि दशलक्षण पर्व या अन्य अवसरों पर ये संवाद मंचित होकर कुछ ज्ञानवर्धन में सहयोगी बन सके तो निश्चित ही परिश्रम सार्थक होगा।

'समर्पण' प्रकाशन के लिए हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने इसे प्रकाशित करवाकर मेरा उत्साहवर्धन किया है।

संपर्क-सूत्र

राजकुमार शास्त्री	ऋषभकुमार शास्त्री	अखिलकुमार शास्त्री	पीयूष शास्त्री
(9414103492)	(9425845620)	(9414499349)	(9785643202)

पल-पल जीवन बीता जाता है, बीता पल नहीं वापस आता है।
क्या तूने खोया है ? क्या तूने पाया है ? कर ले तू चिन्तन सही।
क्योंकि आत्मा अनंत गुणों का धनी, फिर भी देखो पर्यायों में रुली टेक।
मोह लोभ में तू भरमाया है, सपनों का संसार सजाया है।
ये सब छलावा है, ये सब भुलावा है, कर ले तू चिंतन सही।
क्योंकि आत्मा अनंत गुणों का धनी.... ।।१।।
देव-शास्त्र-गुरु शरण मिली तुझको, जिनवाणी की राह मिली हमको।
अब भी न सम्हला गर, मौका ये चूका गर
भव-भव में पछतायेगा, क्योंकि आत्मा अनंत गुणों का धनी...

– बाबूलाल पाटनी, कोलकता

Ravindra Jain

1

कर्म विचारे कौन ?

(राजा दरबार लगा हुआ है, मंत्रीगण, दरबारी बैठे हुए हैं, महाराजा श्रेणिक का दरबार में प्रवेश।)

द्वारपाल – (बुलंद आवाज पर गति धीरे-धीरे) सावधान-परम पराक्रमी, स्याद्वाद विद्यालंकृत महाराजा श्रेणिक पधार रहे हैं।

(सभी खड़े होकर, महाराजा का अभिवादन करते हैं, महाराजा सिंहासन पर बैठकर सभी को बैठने का इशारा करते हैं)

महाराजा – हे महामंत्री ! अपने राज्य में सर्व कुशलता तो है या नहीं ?

महामंत्री – महाराज ! आप जैसे न्यायप्रिय, धर्मप्रिय, अनुशासन प्रिय, प्रजावत्सल महाराज के शासन में कुशलता न होने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रजाजन आनंद सहित अपने-अपने धर्माचरण को करते हुए, व्यापारादि कार्य अत्यन्त निर्भय होकर कर रहे हैं।

महाराज – (प्रसन्नतापूर्वक) हे महामंत्री ! यह समाचार सुनक

मन प्रसन्न हुआ। हे सेनापति! अपनी राज्य की सीमाओं के बारे में क्या समाचार हैं ?

सेनापति – महाराज! आपके पराक्रम को देखते हुए पड़ोसी राज्य अपने तक ही सीमित हैं, कोई अपने राज्य की ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकता। सेना 24 घन्टे सावधान रहती है। राज्य के अन्दर भी डाकू-लुटेरों का अभाव है। प्रजा अत्यन्त शान्ति के साथ आपके शासन में लौकिक-लोकोत्तर कार्यों को सम्पन्न कर रहे हैं।

महाराज – सेनापति! राज्य की शाँति हेतु आपके द्वारा किये गये प्रयासों के बारे में सुनकर हम खुश हुए। हे महामंत्री! आज की इस सभा में कोई किसी का सताया हुआ दुःखी प्राणी हो, किसी पर अन्याय किया गया हो या फिर किसी भी कारण से असन्तुष्ट हो उसे प्रस्तुत किया जावे, ताकि हम उसकी समस्या का निराकरण कर उसे सन्तुष्ट कर सकें।

महामंत्री – जो आज्ञा महाराज! आज जीवराज व कर्म के विवाद को प्रस्तुत किया जायेगा। प्रहरी! उन्हें प्रस्तुत किया जाये।

प्रहरी – जीवराज हाजिर होऽऽऽ

कर्म – वल्द पुद्गल हाजिर होऽऽऽ

ON REDMI NOTE 5 PRO
AL CAMERA

(जीव व कर्म सपरिवार दरबार में प्रवेश करते हुए महाराज के समक्ष अभिवादन करते हैं)

महाराज – विधि मंत्री! इन दोनों के बीच विवाद का कारण क्या है? पेश किया जाये।

विधि मंत्री – जो आज्ञा महाराज! महाराज जीवराज का कर्मराज पर आरोप है कि यह कर्म अन्यायी-अत्याचारी-लुटेरा है। यह अनादिकाल से जीवराज को चार गतियों में घुमा-घुमा कर दुःखी कर रहा है, इस कर्म ने जीवराज के ज्ञानधन को चुरा लिया है। जीवराज का कर्मराज पर यह भी आरोप है कि ये कर्म उसे जानने, सुखी होने, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट कर मोक्षमार्ग प्राप्त करने से रोकता है।

जीवराज की आपसे न्याय करने की प्रार्थना है।

महाराज – अरे! इतना अन्यायी भी क्या कोई हमारे राज्य में हो सकता है ? सेनापति इन आरोपों के संबंध में कर्म का क्या कहना है ? आप जरा संक्षेप में हमें बताइये।

सेनापति – जो आज्ञा महाराज! हे राजन् ! कर्मराज का कहना है कि मैं निर्दोष हूँ। मैं क्यों किसी को दुःखी करूँगा, मेरा जीव ने कुछ बिगाड़ा तो है नहीं जो मैं उसे परेशान करूँगा। जीव स्वयं ही अपने गुणों को भूलकर पुरुषार्थ हीनता से दुःखी हो रहा है और आरोप मेरे ऊपर लगा रहा है।

महाराज – मामला बड़ा संगीन है। परन्तु सभी पक्षों को देख-सुनकर दूध का दूध और पानी का पानी

किया जायेगा। हे जीवराज! आपको कर्म से क्या शिकायत है ?

जीवराज – (रोते हुए) सरकार! 'मैं लुट गया, बरबाद हो गया। भव विकट वन में कर्म बैरी ज्ञानधन मेरो हर्यो।' लूट लिया सरकार इस दुष्ट कर्म बैरी ने लूट लिया। महाराज न्याय कीजिये। इस कर्म को फांसी की सजा दीजिये।

महाराज – (सान्त्वना देते हुए) जीवराज घबराओ नहीं। न्याय अवश्य होगा। जीवराज यह बताओ कि जब कर्म ने ज्ञानधन लूटा, तब तुम क्या कर रहे थे? तुमने उसे रोका क्यों नहीं ? तुम सावधान क्यों नहीं हुए?

जीवराज – (हाथ जोड़ते हुये) क्षमा करें महाराज! अकेला ही हूँ मैं, कर्म सब आये सिमट के।'' ये आठ मैं अकेला, इनकी 148 की गैंग है महाराज! मैं इनसे कैसे मुकाबला कर सकता था?

कर्म – महाराज! मैंने तो इसके ज्ञान को देखा ही नहीं, तब चुराने की तो बात ही बेकार है। यह मेरे और मेरे परिवार पर झूठा ही आरोप लगा रहा है।

जीवराज – इसी ने चुराया है सरकार। अब यह झूठ भी बोल रहा है। इसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाये।

कर्म – मैंने नहीं चुराया महाराज। मुझ पर झूठा आरोप लगाकर यह मेरी मानहानि कर रहा है।

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

जीवराज – (गुस्से में) अरे कर्म! मेरे ज्ञान को चुराकर, भव-भव में दु:ख देकर, मुझे बरबाद कर अब ईमानदार बन रहा है।

महाराज – (गुस्से में) शान्त हो जाइये! शान्त हो जाइये!

जीवराज (रोते हुए) – ''मैं प्रभु दीन अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
किये बहुत बेहाल, सुनिये साहिब मेरे।।''

दया करके मेरा ज्ञानधन मुझे दिला दीजिये, मुझे इसके बंधन से छुड़वा दीजिये महाराज।

महाराज – ठीक है, ठीक है; यहाँ सभी के साथ न्याय होता है। किसी के साथ अन्याय नहीं होगा।

अच्छा श्रीमान् कर्म! आप यह बताइये कि आप कर्म (जीव) के साथ कब से रह रहे हैं ?

कर्म – महाराज! मैं तो अनादिकाल से जीव के साथ रह रहा हूँ।

महाराज – क्या आप जीव के साथ संसार में सब जगह रहते हो?

कर्म – जी सरकार।

महाराज – आप जीव के साथ नरक में जाकर बहुत दु:ख भोगते होंगे ?

कर्म – दु:ख! (आश्चर्य व्यक्त करते हुए) मुझे किस बात का दु:ख, महाराज। दु:ख तो जीव ही भोगता होगा।

महाराज – अच्छा तो जीव के साथ स्वर्ग में जाकर आनंद तो लेते होंगे ?

कर्म – (विस्मय से) आनंद! यह आनंद किस चिड़िया का नाम है। ये सुख-दुःख स्वर्ग-नरक क्या हैं ? मुझे कुछ नही पता, महाराज।

महाराज – अच्छा ये बताओ! यह जो आपके सामने खड़ा है यह कौन है ?

कर्म – सरकार! मुझे अपना ही पता नहीं है कि मैं कौन हूँ, तो मैं ये कैसे बताऊँ कि यह कौन है ?

महाराज – अच्छा जीवराज! आपको तो पता ही होगा कि ये सामने कौन है ?

जीवराज – अरे महाराज! यही तो दुष्ट कर्म हैं, पुद्गल होते हुए भी मुझे घुमा-घुमा कर 'कबहूं इतर निगोद, कबहूं नरक दिखावै, सुर-नर पशु गति माँहिं बहुविधि नाच नचावै। बिन कारण जग बंधु, बहुविधि वैर लियो जी।' इन्हें तो कभी नहीं भूल सकता सरकार।

महाराज – अरे! आप तो इन्हें अच्छी तरह जानते हैं। तो फिर अब आप ही बताइये कि आप कौन हैं ?

जीवराज (रोते हुए) – मैं महाराज ? मैं तो जीव हूँ, दुखिया हूँ, चारों गतियों में भटक रहा हूँ। परेशान हूँ महाराज।

OT ON REDMI NOTE5 PRO
DUAL CAMERA

महाराज – अच्छा तो जीवराज! जरा अब आप यह भी बतावें कि नरक में आपको क्या-क्या कष्ट प्राप्त हुये ?

जीवराज – हे महाराज! कुछ मत पूछिये। (रोते हुए) इन कर्मों ने मुझे जब नरक में पटका महाराज, तब – 'तहाँ भूमि परसत दुःख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहीं तिसो।'

'तहाँ राध श्रोणित वाहिनी, कृमि कुल कलित देह दाहिनी।' (पंक्तियों को गाकर नहीं, संवाद की तरह धीरे-धीरे पढ़ा जावे।) और सरकार –

''सिंधु नीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूंद न लहाय।
तीन लोक को नाज जु खाय, मिटे न भूख कणा न लहाय।।''

सरकार इस दुष्ट कर्म ने एक-एक बूंद पानी और एक-एक दाने को तरसाया। महाराज अब आपसे ही न्याय की आशा है –

''अब आयो तुम पास सुनि जिन सुजस तिहारो।
नीति-निपुण जगराय कीजे न्याय हमारो।।''

महाराज – (मुस्कराते हुए) अरे भाई जीवराज! तो स्वर्ग का आनंद भी तो ये कर्म ही दिलाते होंगे। उनके बारे में भी तो कुछ बताओ।

जीव – आनंद! अरे कहाँ महाराज! जैसे-तैसे बड़ी मेहनत से, तप-त्याग के कष्ट सहन करके स्वर्ग पहुँचता हूँ, थोड़ा सा मजा आता है कि ये दुष्ट (कर्म की तरफ इसारा करके, गुस्से में देखते हुए) वहाँ भी आ टपकता है और समय हो गया की घंटी बजा देता है। वहाँ से मुझे टपका कर स्थावरकाय पेड़ पौधे में रहने की सजा दे देता है। महाराज! मजा कम सजा ज्यादा है। ऐसे दुष्ट कर्म को महाराज कठोर सजा देने की कृपा करें।

महाराज – अच्छा जीवराज! ये कर्म लुटेरे हैं, चोर हैं, इन्होंने तुम्हें स्वर्ग में घुमाया, नरक में रुलाया, दुःखी किया, ये तुम्हें कैसे पता है? जबकि इन कर्मों को तो कुछ पता ही नहीं है।

जीवराज – अरे सरकार! ये सब, कर्म कैसे जान सकते हैं, यह तो निरे मूर्ख हैं, जड़ हैं। (अहंकार से)मैं तो यह सब अपने ज्ञान से जानता हूँ । इस विश्व में एकमात्र मैं ही तो समझदार हूँ।

महाराज – (गुस्से में) श्रीमान् जीवराज! अभी आपने स्वयं कहा कि मैं अपने ज्ञान से जानता हूँ। इसका मतलब तुम्हारा ज्ञान तुम्हारे पास ही है और जबरदस्ती तुम कर्म पर आरोप लगा रहे हो कि इसने मेरा ज्ञानधन चुरा लिया। आप झूठ बोल रहे हो। सजा आपको ही मिलेगी।

MI NOTES PRO
ERA

जीवराज – अरे नहीं-नहीं महाराज! मैं तो लोकालोक को जानना चाहता हूँ, परन्तु ये कर्मराज के दुष्ट बेटे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी मुझे पूर्ण ज्ञान ही नहीं होने देते। ये अंतराय तो और अधिक खतरनाक है मैं कुछ लेना-देना, भोगना चाहता हूँ वहीं टांग अड़ा देता है। ये छोटा बेटा वेदनीय तो पक्का बदमाश है, जब देखो कभी पेट दर्द, कभी सिर दर्द, कभी ब्लड प्रेशर तो कभी शुगर, कैंसर जैसी बीमारियों से जीना हराम कर देता है। ये सब ही मेरे दुःख के कारण हैं; महाराज! न्याय कीजिये इनसे छुटकारा दिलाइये।

महाराज – अच्छा जीवराज! आप अपने पक्ष में कोई गवाह पेश करना चाहेंगे?

जीवराज – जी महाराज! मैं अपने पक्ष में श्रीमान् व्यवहारचन्द को प्रस्तुत करना चाहूँगा।

महाराज – व्यवहारचन्द को हाजिर किया जाये।

प्रहरी – व्यवहारचन्द हाजिर होऽऽऽ

(व्यवहारचन्द हाजिर होता है)

महाराज – क्यों व्यवहारचन्द आपने कर्म को जीव के लिए सुखी-दुःखी करते एवं संसार परिभ्रमण कराते देखा है।

व्यवहारचन्द – जी महाराज! अरे यह कर्म ही जीव को अनादिकाल

से दुःखी किये हुए हैं, इसका ये ज्ञानावरण नाम का बेटा इस जीव को सर्वज्ञ नहीं होने देता, जितना जानता है, उसमें भी भ्रम पैदा कर देता है। इसका सबसे खतरनाक बेटा मोहनीय यह तो इसे मोहित करके मोक्षमार्ग में कदम ही नहीं रखने देता, वस्तुस्वरूप ही नहीं समझने देता। किसी से राग किसी से द्वेष कराकर नये कर्म बंध कराके संसार में घुमाता है।

जीवराज- (प्रसन्न होते हुए) बिल्कुल सही कह रहा है महाराज।

व्यवहारचन्द- इस जीव को यही कर्म चारों गतियों में पटक-पटक कर रुलाता है, दुःखी करता है। मैं तो 24 घन्टे देखता हूँ, कि ये कर्म सारे परिवार सहित जीव को बाँधकर कष्ट देते हैं, ये कर्म ही जीव को जगाते, उठाते, सुलाते हैं।

महाराज - कर्मराज! क्या आप भी अपने पक्ष में किसी पक्षकार को प्रस्तुत करना चाहेंगे ?

कर्म - हाँ महाराज! मैं अपने पक्ष में नीर-क्षीर विवेकी श्रीमान् निश्चयकुमार को प्रस्तुत करना चाहूँगा।

महाराज - निश्चयकुमार को हाजिर किया जावे!

प्रहरी - निश्चयकुमार हाजिर हो...ऽऽ (निश्चयकुमार नमस्कार करते हुए हाजिर होता है)

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

महाराज - श्रीमान् निश्चयकुमार! आप जीव और कर्म के इस विवाद के संबंध में कुछ जानते हों तो अपना पक्ष प्रस्तुत करें।

निश्चयकुमार - हे न्यायप्रिय राजन्! मैं इन दोनों के विवाद के संबंध में जो कुछ जानता हूँ, वह ज्यों का त्यों बतला रहा हूँ। महाराज! जीव का आरोप निराधार है। जिनवाणी का कथन है कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जीव स्वयं ही दुकान, व्यापार, परिवार से समय नहीं निकालता, व्यापारिक कार्यों में व्यस्त रहकर आर्त-रौद्र परिणाम करके आकुलित होता है। अपनी अज्ञानता से स्वयं ही अपने सर्वज्ञ स्वभाव व अनंत सामर्थ्य को भूलकर अन्य पदार्थों को अच्छा-बुरा मानकर मोह-राग-द्वेष करके जन्म-मरण कर रहा है, और अपना दोष कर्म के ऊपर लगा रहा है। कर्म निर्दोष है, महाराज।

महामंत्री - हे महाराज! ये व्यवहारचन्द एवं निश्चयकुमार ने जो जिनवाणी के अनुसार तर्क प्रस्तुत किये हैं, वे परस्पर में विरोधी लग रहे हैं। परन्तु सर्वज्ञ परमात्मा के द्वारा किये गये कथन विरोधी तो हो नहीं सकते अतः इन कथनों के सही स्वरूप को समझने के लिए मैं महाराज से सादर निवेदन करूँगा कि

आपकी राजसभा की शोभा बढ़ाने वाले ज्ञानवृद्ध पण्डित स्याद्वाद शास्त्री से परामर्श करके ही निर्णय किया जाये।

महाराज – महामंत्रीजी! आपका यह सुझाव स्वागत योग्य है। पण्डित स्याद्वाद शास्त्रीजी आज तक सभी समस्याओं का समाधान करते आये हैं, मैं उनसे निवेदन करूँगा कि व्यवहारचन्द व निश्चय कुमार द्वारा किये कथनों का स्याद्वाद विद्या के आधार से समाधान प्रस्तुत करें ताकि इस विवाद का हल निकालकर न्याय किया जा सके।

पण्डितजी (नमस्कार करके) – हे न्यायप्रिय राजन्! जैन संविधान में किसी भी वस्तु के संबंध में कथन करने के दो प्रकार हैं। जब पर्याय अपेक्षा या संयोगों या निमित्तों की अपेक्षा कथन करते हैं तो जिस प्रकार व्यवहारचन्द ने कहा है कि कर्म ही जीव को बांधता है, कर्म ही रुलाता, सुलाता, सुखी–दु:खी करता है, ज्ञान प्रकट नहीं होने देता, संसार में भ्रमण कराता है। ऐसा ही कहा जाता है।

पर यह सब औपचारिक कथन हैं, जब जीव दु:खी हुआ हुआ उस समय उनकी उपस्थिति का ज्ञान कराने वाले कथन हैं।

MI NOTES 5 PRO
ERA

नापति – हे आगमसेवी पण्डितजी! यह तो व्यवहारचन्द

की बात हुई पर निश्चयकुमार ने इन सब बातों का निषेध किस आधार से किया है ?

पण्डितजी – हे तत्वजिज्ञासु महोदय! निश्चयकुमार ने वस्तु के सत्य स्वरूप का कथन किया है, जब जीव स्वयं अपनी पुरुषार्थ हीनता द्वारा अपनी ज्ञानादि अनन्त शक्तियों को भूलकर परपदार्थों में मोह–राग–द्वेष करता है; तब जीव को आकुलता होती है, दु:खी होता है, कोई परद्रव्य या कर्म जीव को दु:खी नहीं कराते। जड़ कर्म जीवराज के ज्ञानधनरूपी संपत्ति का अपहरण नहीं कर सकते। क्योंकि सभी द्रव्य अपने स्वचतुष्टय में ही रहते हैं।

महामंत्री – हे पण्डितप्रवर! व्यवहारचन्द एवं निश्चयकुमार के कथनों में इतना अन्तर क्यों है ?

पण्डितजी – हे निकट भव्य! व्यवहारचन्द संयोग देखकर कथन कर रहे हैं, जिस तरह कमल का पत्ता जल में होने से जल में डूबा हुआ, छुआ हुआ दिखता है इसलिए वह जल से छुआ हुआ है ऐसा कहा जा सकता है। परन्तु निश्चयकुमार वस्तु स्वरूप को देखकर कथन करते हैं, वह वस्तुस्वभाव को देखते हैं जैसे – उसी कमल के पत्ते को स्वभाव से देखा जाये तो वह पानी को छूता ही नहीं, वह पानी में रहकर भी पानी से गीला नहीं

होता। इसलिए ऐसा कहना कि कमल का पत्ता पानी को नहीं छूता यह परम सत्य है।

विधि मंत्री – हे विद्वत् शिरोमणि! हम इन दो प्रकार के वचनों को सुनकर हम क्या अर्थ समझें ?

पण्डितजी – संयोगों को देखकर कथन करने वाले व्यवहारचन्द के कथन औपचारिक हैं, अयथार्थ हैं अतः वह जानने-सुनने योग्य तो हैं; पर श्रद्धेय नहीं। जबकि वस्तुस्वरूप के अनुसार कथन होने से निश्चयकुमार के कथन पारमार्थिक है, सत्यार्थ हैं। वही श्रद्धेय हैं। ऐसा अर्थ समझना चाहिए।

मुझे बस इतना ही कहना है।

महाराज – जीव और कर्म के आक्षेपों व उनके साक्ष्यों को सुनने के बाद पण्डित स्याद्वाद कुमार द्वारा प्रस्तुत सुन्दर स्पष्टीकरण सुनकर हम सभी इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि जीव अपनी भूल से ही दुःखी है। अपनी भूल न स्वीकार कर यह जीव अपनी सज्जनता दिखलाने के लिए कर्म को जबरदस्ती ही दोष लगा रहा है।

यह सभा इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि 'कर्म विचारे कौन, भूल मेरी अधिकाई।''

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

इसलिए जीव को यह आदेश दिया जाता है कि वह अपनी भूल सुधार कर अनंतज्ञान, अनंत

दर्शन, अनंत सुख रूप अपने अनंत वैभव को प्रकट करे अन्यथा चार गति का परिभ्रमण करना पड़ेगा।

कर्म को इस राजसभा में निर्दोष घोषित किया जाता है।

सभी – न्यायप्रिय श्रेणिक महाराज की... जय हो।

दूत का प्रवेश – हे महाराज! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आश्चर्य! महान आश्चर्य! नगर के चारों ओर रत्नवृष्टि हो रही है, देवदुंदुभी बज रही है, सुर-गण नगर की ओर आ रहे हैं महाराज।

महाराज – अरे यह तो सुखद समाचार है। इस तरह की पुष्पवृष्टि, देवों का आगमन तीर्थंकर के कल्याणकों में ही होता है। लगता है मुनिराज महावीर स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई है अतः देवगण आ रहे हैं। चलो हम सब भी ज्ञान कल्याणक मनाने चलें।

बोलो भगवान महावीर स्वामी की जय हो।

[illegible]

– अभयकुमार शास्त्री

एकांकी
नाटक

चोर – हाँ मुझे यह बात मंजूर है।
साधु – सोच लो, एक बार फिर सोच लो।
चोर – ठीक है, सोच लिया एक बार नहीं सौ बार सोच लिया। अगर आप सही है तो मैं घर छोड़ने के लिए तैयार हूँ।
साधु – तो ठीक है मैं जैसा कहता हूँ तुम वैसा ही करना (कान मे कुछ - - -)

॥ तीसरा दृश्य ॥

यहाँ पर चोर पलंग पर लेटा है, वह मरने का नाटक कर रहा है अब उसकी पुत्री उसे दूध देने आती है।
बेटी – "पिता जी- लो यह दूध पी लो। पिता को हिलाते हुए, उठो न पिता जी आप सो क्यों रहे है, सुबह हो गई है। (फिर भी वह सो रहा है) बेटी माँ को बुलाती है।) माँ – देखो पिता जी उठ नही रहे, कबसे जगा रही हूँ वो उठ ही नही रहे।
माता – अच्छा, लगता है, ये मेरे ही हाथ से उठेंगे। (प्यार से) अरे सुनते हो, सुबह हो गई चलो उठो।
अरे अब उठ भी जाओ न। (क्या करते हो) अरे यह तो उठ ही नहीं रहे। क्या हुआ इन्हे, (चौंक उठते हुए)
[illegible] अरे इनकी तो साँसे बन्द है।

पात्र – 2 चोर, 1 मुनि, 1 बेटा, 1 पत्नि, पिता
कुछ गांव के भाई, एक होशियार (गांव का निवासी) [illegible]

:: पहला दृश्य ::
रात का समय है, 2 चोर एक घर मे चोरी करने जा रहे है, चुपके से घर मे प्रवेश करते है, और चोरी करके बाहर आते है।
पहला चोर – वाह! आज तो उस्ताद क्या ही चोरी की है, अगर 1 दिन भी चोरी नही की तो नही चलेगा।
2 चोर – हाँ भाई! बात तो तेरी ठीक है, पर ज्यादा चोरी की आदत अच्छा नहीं जब हमारा बुढ़ापा होगा तब यह बहुत काम आयेगा।
1 चोर – बात तो तेरी भी सही है, चलो कल फिर कहीं जगह पर मिलेंगे, और आज-कल के मिलाके पैसे होंगे वे हम आपस मे बाँट लेंगे।
2 चोर – ठीक है। तो तय रहा कल शाम को यहीं पर मिलेंगे। ठीक है न।
1 चोर – ठीक है, चलो – (प्रस्थान) ॥

॥ दूसरा दृश्य ॥
पहले दृश्य के जैसा ही है।

यहाँ पे एक साधु आता है और कहता है,
साधु – अरे ये तुम लोग क्या कर रहे हो।
1 चोर – ये साधु (चाकू दिखाके) अब तेरे पास जो-२

है, वरना जल्दी से निकाल दे, वरना तुम्हें मौत के घाट उतार दूँगा।

साधु – अरे बालक! मैं एक साधु हूँ मेरे पास क्या होगा, जो है वो तुम्हारे सामने है, तो यह पोटली है जो यह ले लो, इसमें कुछ ग्रन्थ हैं व कुछ खाने का सामान। सो तुम यह ले लो।

चोर – नहीं मुझे यह सब नहीं चाहिए। अगर तुम्हारे पास कुछ पैसे या कोई आभूषण हो तो दे दो।

साधु – नहीं भाई। हमारे पास ये चीज नहीं है, हम तो एक साधु हैं।
लेकिन यह बताओ तुम्हारा नाम क्या है।

चोर – चोर-चोरी करेगा, ईमानदारी तो करेगा नहीं,
तुम भी कैसा सवाल कर रहे हो।

साधु – तुम यह चोरी किस लिए कर रहे हो, इससे तुम्हें क्या प्राप्त होगा।

चोर – अरे भाई इन साधुओं के चक्कर में हमें नहीं पड़ना है, तुम ही पड़ो, मैं तो चला, कल फिर मिलेंगे।

चोर – हाँ ठीक है। कल यहीं पर आना रात 8 बजे।
हाँ तो साधु जी आप कह रहे थे कि यह चोरी मैं किस लिए कर रहा हूँ। तो फिर कान खोलकर सुन लो की यह चोरी मैं अपने घर परिवार को चलाने के लिए कर रहा हूँ। मुझे मरने के समय पर मदद कर सके।

साधु – अरे बालक। कोई तुम्हें न तो मार सकता है और नहीं बचा सकता है क्योंकि समझदार ने लिखा है कि

(1) मैं मारता हूँ किसी को, या मुझे कोई मार जान यह मान्यता मिथ्या है, जिसका कोई है प्रयोजन

(2) मैं हूँ बचाता अन्य को, मुझको बचावे अन्यजन यह मान्यता मिथ्या है, जिसका कोई है प्रयोजन

चोर – चलो छोड़ो यह बातें मैंने अपने परिवार के लिए इतना सब कुछ किया, कहीं चोरियाँ की तो क्या मेरे कर्म तो छोड़ेंगे ही।

साधु – ऐसा कुछ नहीं होगा। सारा संसार स्वार्थी है और लोग स्वार्थी हैं सब अपना-२ सोचते हैं मुझे नहीं लगता, कि तुम्हारे साथ जायेंगे।

चोर – अच्छा ऐसी बात है तो मैं सिद्ध करके बता दूँ कि मेरा परिवार मेरे साथ है, तो फिर आप क्या दोगे।

साधु – जो तुम्हें चाहिए वो दूँगा।

चोर – क्या तुम मेरे साथ मिलकर चोरी करोगे क्या तुम अपना ये साधु पना छोड़ सकोगे

साधु – हाँ बालक। अगर ऐसी बात है, तो ठीक है। मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा अगर तुम सही हुए तो। लेकिन

चोर – लेकिन क्या

साधु – लेकिन अगर तुम गलत हुए और मैं सही हुआ तो तुम घर छोड़कर मेरे साथ जंगल में रहोगे।

T ON REDMI NOTE 5 PRO
UAL CAMERA

साधु → लेकिन जो यह दवाई पियेगा अरे यह
तो जीवित हो जायेगा लेकिन जो दवाई
पियेगा वह मर जायेगा।
~~अभी यही है यह दवाई यही~~
क्या बताओ कौन इसे पियेगा।

साधु → अरे कुमी, तुम पी लो, तुम्हारे तो यह पिता है।
कुमी → नहीं मैं नहीं जी सकती, अभी तो मुझे
और जीना है और आज तो हमारी पार्टी
है और मुझे पार्टी की तैयारी करनी है।

~~ससुर~~ →

साधु → अरे बापू जी आप तो इतने बड़े हैं, आप
की तो उम्र हो गई आप पीजिए अपने पुत्र
के लिए आप इतना तो कर ही सकते हैं।
ससुर → नहीं, मैं बूढ़ा हूँ यह किसने कहा है मैं
तो अभी जवान हूँ। मुझे अभी जीना है
मैंने इस घर को बनाया अगर मैं चला गया
तो फिर इस घर की देखभाल कौन करेगा,
इसलिए मैं तो अभी नहीं पी सकता हूँ।

साधु → अरे भाई तुम पी लो। तुम्हारे तो ये
बड़े भाई हैं, तुम्हें तो ये इतना पढ़ा रहे
हैं। तुम तो इस दवाई को पी लो।
भाई → मैं कैसे पी सकता हूँ, अगर मैं इसे
पीयूँ तो मैं मर जाऊँगा।

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

भाभी → अरे बापू जी, ससुर जी, देखो ये उठ ही
नहीं रहे,
अरे यह क्या कर रहे हो कोई नाराजगी है
तो कहो न, आप उठ जाइए न।

ससुर → अरे बहू। क्या हुआ
माँ → अरे पापा ये देखिए न क्या हुआ इनको,
ये अब उठ ही नहीं रहे।
ससुर → अरे अभी उठ जाएगा, मैं जानता हूँ।
(नाटक करता है)
माँ → पिताजी इनकी आँखें बन्द हैं।
अब इनके बिना मैं क्या करूँगी। इनके बिना
तो दुनिया में इसका क्या करूँ। इन गहने
को मैं क्या करूँ। उठ भी जाओ। मुझसे क्या
गलती हो गई बताओ अब मैं कोई गलती
नहीं करूँगी। आप उठ जाओ न।
भाई → अरे भाभी क्या हुआ, आप रो क्यों रही
हैं?
माँ → अरे देवर जी ये तुम्हारे भैया उठ ही नहीं
रहे, इनकी आँखें बन्द हो गयी हैं। अब
मैं तो इनके बिना जी नहीं सकती।
भाई → नहीं ऽऽऽ — ऐसे नहीं हो सकता भैया मुझे
छोड़कर नहीं जा सकते वे ही तो मुझे पढ़ा रहे
हैं अगर वे नहीं रहे तो मैं पढ़ाई कैसे
करूँगा। भैया उठो।

Teacher's Signature

पड़ोसिन → ओ इनके क्या हुआ।
माँ → पता नहीं क्या हुआ जिससे नाराज़ है
सुबह से जगा रही हूँ फिर भी उठ नहीं रहे
पड़ोसिन → हाँ जिनके भरोसे ये सारे घर को पालते
थे, पता नहीं अब इस घर का क्या होगा।

साधु → भिक्षाम् देहि
बहन → माँ बाहर कोई साधु आया है,
माँ → ठीक है मैं आती हूँ।
प्रणाम साधु जी, ये जो ...

साधु → क्या हुआ माते आप इतना रो रही है।
कोई बड़ी बात है क्या।
माँ → हाँ साधु मेरे स्वामी मुझे छोड़कर चले गये
आप उन्हें बचा लीजिए।
साधु → क्या हुआ उन्हें।
माँ → मालूम नहीं, वह तो रात मे देर से आये थे
और आते ही सो गये और सुबह अब उन्हें
जगाया तो वे उठ ही नहीं रहे, उनकी साँसे
भी बन्द है।
साधु → समझ गया मैं उनको बचा सकता हूँ।
माँ → क्या, आप उन्हें बचा सकते है
साधु → हाँ माते मैं उन्हें बचा सकता हूँ।
माँ → तो फिर जल्दी चलिए वो अन्दर है।
साधु → चलिए

दोनों अन्दर जाते है।

(पिता को देखते हुए)
साधु → समझ गया, इन्हें क्या हुआ
माँ → क्या हुआ है इन्हें बताइये न
साधु → बताता हूँ, इन्हें बहुत बड़ी बीमारी हो गई
है जिसे बचाना मुश्किल है।
माँ → तो क्या यह नहीं बच पायेंगे।
साधु → मैंने यह कहा है कि इन्हें बचाना मुश्किल
है नामुमकिन नहीं। मेरे पास एक ऐसी
दवाई है जिसको खाते ही ये जीवित हो
जायेंगे।
माँ → तो वह दवाई दीजिए न।
साधु → मेरी पहले पूरी बात ध्यान से सुनिए
दवाई ये नहीं पियेंगे इस दवाई को
आप लोगों मे से कोई एक जन पियेगा और
यह जीवित हो जायेगे।
चलो जाओ। ग्लास पानी लेकर आओ।

बेटी → ग्लास मे पानी लेकर आती है।
साधु → (दवाई निकाल कर ग्लास मे डालता है)
सुनो दवाई तैयार है अब कौन इसे पीने
तैयार है, कौन पियेगा।
सभी लोग → मैं पिऊंगा इसे मैं
साधु → एक बात कान खोलकर सुन लो यह दवाई
जो पियेगा उसके ये तो जीवित हो जाए
लेकिन
माँ → लेकिन, लेकिन क्या लेकिन

Teacher's Signature

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

सहारा बनकर रह सकती हूँ और वे चले गये, तो फिर मैं क्या करूँगी वे आपका सहारा था। तो मैं यहाँ रहकर दूसरी शादी कर लूँगी मगर यह नहीं भी सकती हूँ।

साधु : आप लोगों में से इसे कोई नहीं पी रहा है, तो अब मैं ही इसे पी लेता हूँ।

सभी लोग – हाँ पी लो आप तो ही पी लो

साधु (पीकर पिता को उठाकर चलाने वाला है और कहता है।)
अरे भाई देख लिया न कितना स्वार्थी संसार है, अरे तुम्हारे अपने ही तुम्हारे साथ न दे सके तो वे तुम्हारे अपने कैसे वे तुम्हारे अपने नहीं है।

माँ– तुम चुप रहो।
ओ स्वामी आप ठीक हो गये चलो यह दूध पी लो।
(सभी लोग – आप ठीक हो गए)

पिता- दूर रहो तुम लोग।
मैंने देख लिया है सभी स्वार्थी हैं।
मैं यह नाटक कर रहा था। मुझे कुछ नहीं हुआ था। साधु आपकी बात एकदम ठीक थी। चलो अब मैं यहाँ नहीं रहूँगा। चलो मैं आपके साथ चलूँगा चलो।

(सभी लोग - रो रहे है।)

उड़ जाना पंछी रे सभी भी दाव से
होको रे - रोको कोई भूमि को छिलते

कु. अंकित पी सक्सेना
अजमेर
08875628753

(सोने की ईंट)

धनीराम- ये आप क्या कह रहे हैं, पण्डित जी! क्या मुझे अपने बेटों पर इतना भी विश्वास नहीं।

ज्ञानचन्द- बात विश्वास की नहीं है, बात सेवा की है, सभी माँ बाप अपने पुत्रों को सभी सौंपकर धन देते हैं, परन्तु वृद्धावस्था में बहुओं के कहने पर अपने पिता-माता की सेवा नहीं करते और कटक व्यंग्य बोलकर रोने के लिए विवश कर देते हैं।

धनीराम- नहीं नहीं! पण्डित जी आप ऐसा न सोचिए, मुझे अपने पुत्रों पर पूरा भरोसा है।

ज्ञानचन्द- तो ठीक है कर दीजिए बँटवारा।

'दूसरा दृश्य'

स्थान- (धनीराम के बड़े बेटे छगन का कमरा) छगन तथा उसकी पत्नि बात-चीत कर रहे हैं, धनीराम चुपचाप सुन रहे हैं।

ON REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

पत्नि- (जोर से) मैंने आपसे कई बार कह दिया है कि पिताजी को रोटी खिलाना मेरे

(सोने की ईंट)

बस की बात नहीं!

छगन- देखो जरा संभल के काम लो आज ने तीन महिने ही तो खिलाना है।

पत्नि- तीन महीने तो क्या मैं तो अब एक दिन भी नहीं कर सकती, इन्होंने थोड़ा सा धन दिया है तो इसका मतलब हमें इन्हें पूरी जिन्दगी खिलाते रहें, क्या! यदि ऐसा है तो उन्होंने ऐसा अहसान ही क्यों किया।

छगन- पर दुनिया क्या कहेगी कि इन्होंने हमें सब कुछ दिया और हम उन्हें खाना भी नहीं खिला सकते।

पत्नि- अगर दुनियां की बात में आयोगे तो घर चौपट हो जायेगा, मैं कहती हूँ कि आप अपने पिता को दूसरे भाईयों के यहाँ भेज दो वरना मैं तो अपने घर चली।

छगन- नहीं नहीं तुम घर मत जाना मैं अपने पिता जी को अभी भेजता हूँ।

(सोने को ईट)

(छगन पिता के पास जाकर)

छगन - पिता जी . . . . . .

घनीराम - बेटा मैंने सब सुन लिया है, तुम्हें भेजने की जरूरत नहीं मैं स्वयं चला जाता हूँ।

"तीसरा दृश्य"

स्थान - मगन का घर, मगन और उसकी पत्नि परस्पर बातचीत कर रहीं हैं। घनीराम सुन रहा है।

पत्नि - क्यों जी! आप अपने पिता जी से यह नहीं कह सकते कि वे खाना अपने तीनों बेटों के पास खा लें!

मगन - यह कैसे हो सकता है धन तो हम चारों को मिला है, न!

पत्नि - मैं कहती हूँ कि इसमें ऐसी बात क्या है देखती नहीं मैं पिता जी को खिलाते - खिलाते कितनी दुबली हो गयी हूँ! क्या आपको मेरा बिल्कुल भी ख्याल नहीं।

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

(सोने की ईट)

मगन - ख्याल क्यों नहीं है

पत्नि - तो कहो न अपने बूढ़े पिता से कि वे कहीं और खाना खा लें, वरना मैं तो खाट पकड़ लूँगी।

मगन - नहीं - नहीं तुम ऐसा भूल से भी नहीं करना। मैं पिता जी से कहीं और खाना खाने को बोल देता हूँ।

(सुनते ही पिता जी अपने तीसरे पुत्र के यहाँ चले जाते हैं और बैठते ही हैं कि इतने में सोहन आता है और कहता है):-

सोहन पिता जी मेरी पत्नि एक महीने के लिए मायके जा रही हैं अत: आप किसी दूसरे भाई के यहाँ खाना खा लीजिए!

घनीराम - अच्छा बेटा।

(खड़े होते ही हैं और इतने में मोहन भी वहाँ आ जाता है)

मोहन - पिता जी मेरी घरवाली (पत्नि) 1 महीने से बीमार है इसलिए आप छोगा के यहाँ भोजन कर लीजिए!

(सोने की ईंट)

धनीराम - कोई बात नहीं बेटे तू जा सब हो जायेगा। जल्दी से बहू को ठीक करा।

धनीराम - (स्वयं से) ओह! वास्तव में यह संसार स्वार्थी है मैंने काश। पण्डित जी की बात मान ली होती तो आज से ये दिन न देखने पड़ते, अब मैं क्या करूँ।
मैं ज्ञानचन्द जी के पास जाकर कुछ उपाय सोचता हूँ।

ज्ञानचन्द - आओ मित्र धनीराम क्या बात है।

धनीराम - (अपनी पूरी बात बता देता है।)

ज्ञानचन्द - अब तो एक ही उपाय है कि तुम अपने पलंग के नीचे एक पेटी में पत्थर भरकर ताला लगा के रख लो जब तुम्हारे पुत्र देखेंगे तो वे सेवा का दिखावा करके धन लेने जरूर आयेंगे।

धनीराम - ठीक है मित्र वास्तव में तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो यदि मैं तुम्हारी पहले बात मान लेता तो ठीक होता।

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
DUAL CAMERA

(सोने की ईंट)

ज्ञानचन्द - कोई बात नहीं मित्र! जो होना है सो निश्चित है केवल ईश्वर ने माया है।

(धनीराम जाकर पण्डित जी द्वारा बताई गई विधि को अपनाता है और सो जाता है और जब उसका छोटा पुत्र वहा से निकलता है और देखता है, तो अपने चारों भाईयों को बुलाकर पिताजी की सेवा करने को आते हैं।)

चारों एक साथ - प्रणाम पिता जी

धनीराम - सदा सुखी रहो।

छगन - लो पिता जी भोजन कर लो।

(इस प्रकार चारों पुत्र कई दिनों तक सेवा करते हैं और कुछ दिनों बाद पिता जी की मृत्यु हो जाती है तो पुत्र रोते नहीं है, बल्कि आपस में चर्चा करने लगते है।)

छगन - लो ठीक रहा एक बड़ा बला तो टल गई!

मगन - चलो अब पिताजी का अंतिम संस्कार कर दे और फिर मौज से धन का बंटवारा करें!

हमें स्वयं ही अपने पर गर्व होना चाहिये क्योंकि जब तक हम ही अपने कार्य को श्रेष्ठ नहीं मानेंगे, तब तक हम अन्य को भी नहीं बता/समझा सकेंगे।

जनसाधारण शास्त्री की पढाई करने वाले विद्यार्थियों के संबंध में अनेक प्रकार की मिथ्या धारणायें रखते हैं। प्रस्तुत है इस संदर्भ में पूछे जाने वाले सामान्य प्रश्न और उनके सटीक उत्तर –

शास्त्री सम्बन्धी भ्रान्तियाँ/निराकरण

– अच्युतकान्त जैन

प्रश्न 1 : आप शास्त्री कर रहे हो यह तो ठीक, पर पढाई क्या कर रहे हो ?

उत्तर : भाई साहब ! मैं शास्त्री की ही पढाई कर रहा हूँ। आप जानते हैं शास्त्री की ग्रेजुएट डिग्री को देशभर में बी.ए. की डिग्री के बराबर मान्यता प्राप्त है।

वरिष्ठ उपाध्याय = बारहवीं (हायर सैकेण्डरी)

शास्त्री = बी.ए. (ग्रेजुएशन)

यह संस्कृत में किया जाने वाला ग्रेजुयेशन कोर्स है। जिस प्रकार कोई छात्र इतिहास विषय लेकर बी.ए. करता है, कोई कॉमर्स विषय लेकर बी.कॉम. करता है, साइंस विषय लेकर बी.एससी. करता है, उसी प्रकार हम जैनदर्शन विषय से शास्त्री करते हैं।

प्रश्न 2 : शास्त्री = आर्ट्स ?

उत्तर : नहीं, शास्त्री मतलब आर्ट्स नहीं होता है। यह स्वतंत्र ग्रेजुयेशन कोर्स है, जिसे सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

प्रश्न 3 : तो क्या इसमें मात्र जैनधर्म/दर्शन ही पढाया जाता है ?

उत्तर : क्या मात्र 1 विषय वाला भी ग्रेजुयेशन कोर्स होता है ? इसमें हम जैनदर्शन के साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत भी पढते हैं।

हिन्दी व अंग्रेजी की जो किताबें सी.बी.एस.ई. बोर्ड में होती हैं, हम भी वे ही किताबें पढते हैं।

प्रश्न 4 : फिर अन्य पढाई में और इस पढाई में क्या अन्तर है ?

उत्तर : ग्रेजुएशन की दृष्टि से देखा जाये तो कोई अन्तर नहीं है, दोनों का महत्व बराबर ही है, बस इतना अन्तर है कि –

(1) हम संस्कृत से ग्रेजुयेशन व बारहवीं करते हैं और अन्य विज्ञान, गणित आदि से।

(2) वे मात्र लौकिक पढाई ही करते हैं, हम लौकिक-पारलौकिक (धार्मिक) पढाई भी पढते हैं।

(3) वे मात्र आजीविका हेतु पढाई करते हैं, हम आजीविका के साथ-साथ अपने और दूसरों के पारलौकिक जीवन की उन्नति की ओर अग्रसर होकर अपना, परिवार, समाज का हित करते हैं।

प्रश्न 5 : संस्कृत ही क्यों पढ रहे हो ? कुछ और क्यों नहीं ?

उत्तर : (1) हमारे जैन आगम/ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे गये हैं, आचार्यों के मूल अभिप्राय को समझने के लिये हम संस्कृत पढते हैं।

(2) आज संस्कृत की उपयोगिता तो हर कोई जानता है, अभी-अभी स्मृति ईरानी (मानव संसाधन विकास मंत्री) ने

केन्द्रीय विद्यालयों में से जर्मन भाषा को हटाकर संस्कृत भाषा को रखा है।

(3) वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि संस्कृत प्राचीनतम भाषा है, सभी भाषाओं की जननी है तथा इसका उपयोग कम्प्यूटर की भाषा के रूप में भी किया जा सकता है।

(4) संस्कृत भाषा में शास्त्री करने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक अवसर मिलते हैं।

प्रश्न 6 : जिनके पास पैसे नहीं होते, ऐसे गरीब परिवार के बच्चे ही शास्त्री करते होंगे ?

उत्तर : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। जैसे अन्य लौकिक पढ़ाई सभी तरह के बच्चे करते हैं, वैसे ही यह पढ़ाई भी अमीर-गरीब सभी तरह के बच्चे करते हैं।

हाँ, यह बात अवश्य है कि शास्त्री करने वाले बच्चे अपने माता-पिता का खर्चा कम कराते हैं तथा उससे अधिक उन्हें कमाकर देते हैं।

अन्य पढ़ाई तो इतनी महंगी होती है कि बच्चे को पढ़ाने के लिये माता-पिता को बहुत मेहनत करनी पड़ती है और परिणाम जरूरी नहीं कि अच्छे ही हों। परन्तु इस पढ़ाई को करने वाले छात्रों की सफलता की दर अन्य पढ़ाई करने वालों से अधिक है।

प्रश्न 7 : जिनका कहीं और एडमिशन नहीं होता होगा ऐसे कमजोर बच्चे ही शास्त्री करते होंगे ?

उत्तर : नहीं, सी.बी.एस.ई., यू.पी., एम.पी., मराठी, कन्नड़, गुजराती ऐसे सभी बोर्ड के होनहार छात्र जो फर्स्ट डिविजन से उत्तीर्ण होते हैं, उनका ही महाविद्यालय में प्रवेश होता है। यहाँ तक कि ९८% प्राप्त करने वाले छात्रों ने भी महाविद्यालय में प्रवेश लिया है।

और इसीलिये महाविद्यालय के छात्र प्रतिवर्ष मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 8 : भविष्य में क्या स्कोप है ? शास्त्री करने वाले टीचर ही बनते होंगे ?

उत्तर : आजीविका की दृष्टि से देखा जाये तो अध्यापन की लाइन सर्वोत्तम है; क्योंकि इसमें अपना काम करने के लिये समय पर्याप्त होता है और अब तो पैसा भी खूब मिलता है। शास्त्री करने वाले प्रमुखता से इसी लाइन में जाते हैं। शास्त्री करने वाले मात्र टीचर ही नहीं बनते। वे कॉलेज, विश्वविद्यालयों में लेक्चरर, प्रोफेसर आदि तो बन सकते हैं, साथ ही साथ दर्शन या संस्कृत विषय के साथ हम आई.ए.एस., आर.ए.एस. या कोई भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं। एम.बी.ए. आदि जैसे कोई भी कोर्स कर सकते हैं। मास कम्यूनिकेशन में भी जा सकते हैं। भारत सरकार के अनेक प्रतिष्ठित उपक्रमों (इसरो, रेलवे, बैंक आदि) विभागों में हिन्दी भाषा अधिकारी (ट्रांसलेटर) भी बने हैं।

वैसे टीचर बनना कोई बुरी बात तो नहीं है। टीचर ही राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं। यदि डॉक्टर गलत ऑपरेशन करे तो मात्र 1 व्यक्ति की जान खतरे में पड़ेगी, परन्तु 1 टीचर गलती करे तो ????????

टीचर तो इसलिये बनते हैं कि पढ़ने-पढ़ाने के साथ-साथ हम अपने और समाज के कल्याण के लिये भी समय निकाल सकें।

प्रश्न 9 : यह शास्त्री का कोर्स कौन कर सकता है ?

उत्तर : (1) यह शास्त्री का कोर्स आत्मकल्याण की इच्छा रखने वाला कोई भी विद्यार्थी (चाहे वह किसी भी जाति-वर्ग या समाज का हो) कर सकता है।

(2) कई लोग जो डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. आदि पूर्ण कर चुके थे, वे भी सब कुछ छोड़कर शास्त्री करने के लिये आये हैं और अभी भी आ सकते हैं।

(3) जिन्हें जॉब करना हो या अपने घर का ही व्यापार देखना हो, उन सभी के लिये शास्त्री उपयोगी है।

प्रश्न 10 : अच्छा तो शास्त्री करने से फायदा क्या है ?

उत्तर : शास्त्री करने से निम्न लाभ हैं –

(1) महाविद्यालय में अलग-अलग प्रान्त से अलग-अलग भाषा बोलने वाले अलग-अलग संस्कृति वाले छात्र आते हैं, जिससे छात्र एक दूसरे से परिचय प्राप्त करते हुये 'अनेकता में एकता' स्थापित करते हैं।

(2) हॉस्टल में रहने के कारण विद्यार्थी स्वयं ही अपना कार्य स्वयं करने एवं अच्छे-बुरे का निर्णय करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। आत्मनिर्भर होना सीखते हैं।

(3) हॉस्टल में रहना सामान्य होने पर भी अन्य हॉस्टल और इस हॉस्टल में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि यहाँ मात्र लौकिक (इस भव सम्बन्धी) पढाई ही नहीं कराई जाती, अपितु पारलौकिक पढाई भी करायी जाती है जो अगले भव में काम आये।

(4) जहाँ एक ओर अन्य हॉस्टल के सीनियर बच्चे अपने जूनियर की रैगिंग लेते हुये नजर आते हैं, वहीं इस हॉस्टल के सीनियर अपने छोटे भाईयों के लिये सहायक होते हैं। यहाँ छात्र एक विशाल परिवार के रूप में रहते हैं।

(5) महाविद्यालय के 5 वर्षों में चारों अनुयोगों को सुव्यवस्थित रूप से पढाया जाता है।

(6) यहाँ धार्मिक वातावरण होने से बच्चे स्वयमेव ही विनयवान तथा संस्कारशील बनते हैं।

(7) अन्य लौकिक पढाई तो मात्र व्यक्तिगत लाभ ही प्रदान करती है, परन्तु इस पढाई से छात्र स्वयं के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार, समाज तथा देश का कल्याण भी करता है।

(8) यहाँ नियमित गोष्ठी-प्रवचन, प्रतियोगिताओं के साथ-साथ छात्रों को धार्मिक प्रवचनार्थ बाहर भी भेजा जाता है, जिससे उनका चिंतन-विचार तथा वक्तृत्व शैली में सुधार आता है।

(9) यहाँ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि विशिष्ट विद्वानों का सानिध्य मिलता है, जिससे छात्र प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।

(10) पण्डित टोडरमलजी के अनुसार अध्यात्म विद्या ही सभी विद्याओं में प्रधान है। यहाँ इसी सर्वश्रेष्ठ विद्या का अभ्यास/अध्ययन कराया जाता है, जिसके चारों ओर सभी विद्यायें (डॉक्टर, इंजी., सी.ए., एम.बी.ए. आदि) घूमती हैं।

(11) इस विद्या का सहज इतना प्रभाव है कि शास्त्र सभा में विद्वान तो ऊपर बैठता है तथा अन्य सभी विद्याधारी (डॉक्टर, इंजी., सी.ए., एम.बी.ए. आदि) नीचे बैठकर प्रवचन सुनते हैं।

(12) यहाँ हॉस्टल/महाविद्यालय में छात्रों को इतना स्नेह-प्यार तथा अपनत्व मिलता है कि दीक्षान्त समारोह के समय बच्चों का यहाँ से अलग होने का मन नहीं करता।

(13) अधिक क्या कहें ? आप स्वयं ही महाविद्यालय के 37 वर्षों का गौरवशाली इतिहास उठाकर देख लीज़िये। आपको कोई भी विद्यार्थी असहाय-बेरोजगार नहीं मिलेगा।

यहाँ पढाई करने वाले बच्चों की सफलता दर अन्य लौकिक पढाई करने वाले बच्चों की तुलना में अधिक है।

(14) जिन छात्रों ने इस महाविद्यालय में 5 वर्ष रहकर अध्ययन किया, उन्होंने अपने भाईयों-बेटों तथा रिश्तेदारों को भी भेजा। और तो और अब तो जो छात्र यहाँ पढे थे वे स्वयं अपने बच्चों को भी इस विद्यालय में पढने के लिये भेज रहे हैं। इस विद्या और इस महाविद्यालय की श्रेष्ठता और महत्व का इससे अधिक और क्या प्रमाण चाहिये ?

अत: यह हम अपना और अपने बच्चों का भविष्य सुखमय चाहते हैं तो उन्हें अर्थोन्मुखी विद्या के स्थान पर सुखोन्मुखी अध्यात्म विद्या पढायें।

आप अपने बालकों को शास्त्री करने हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अवश्य प्रवेश दिलायें।

दि. जैन सोश्यल ग्रुप, वर्धमानपुर (बदनावर)

सचिव — पवन पाटोदी
सहसचिव — सुधांशु जैन

दिशा निर्देश
पं. अभिषेकजी जैन
जयपुर
संयोजन
ओम पाटोदी

उल्टा पुल्टा

नोट : प्रत्येक खाने की लाइन के सामने शब्द उलट पुलट कर लिखा गया है आपको सही शब्द बनाकर खाने में लिखना है।

जैसे : हनजीशिखरमदो — ज | न्म | दे | शि | ख | र | जी

1. नमापुदरर्ध
2. नासेर्यनजिया
3. शरिशाहवंणपु
4. रिनसेह
5. क्षकतहपृपठो
6. तदअर्थण्डतन
7. दलपुणराग
8. भावेन्यराजाव
9. ठयाह्र आथका
10. शयास्त्रीना
11. क्मार्गक्षकामोप्रश
12. स्त्लिकापंयचा
13. न्दकुआकुचान्दर्य
14. नसेधआरर्यचा
15. लीहभवातरत
16. नुदनशंतिस्वाभू
17. मीसाआमांप्त
18. मरसयसा
19. वीज्ञाजभारव
20. सात्रिकलोर
21. नरमटोकरस्याड
22. वशागुरुत्रदेरू
23. यसेजनार्यचा
24. धवसंनाभ
25. त्नक्षाकण्डरत्तावरकार

नाम : ....

पिता का नाम : ....

हल प्राप्त होने की तारीख ....

हल प्राप्त होने का समय ....

What is my Full Form

उदाहरण - प. → अ. सि. आ. उ. सा.

परमेष्ठी → अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु

1.	ध	→	क्ष.	मा.	आ.	शौ.	सं.	स.	त.	त्या.	आ.	ब्र.
2.	श.	→	मा.	मि.	नि.							
3.	क.	→	ग.	ज.	त.	ज्ञा.	मो.					
4.	नि.	→	नि.	इ.								
5.	पु.	→	ध.	अ.	का.	मो.						
6.	क्षे.	→	भू.	है.	ह.	वि.	र.	है.	ऐ.			
7.	ध्या.	→	आ.	रौ.	ध.	शु.						
8.	प्र.	→	प.	प्र.								
9.	चे.	→	ज्ञा.	क.	फ.							
10.	म.इ.	→	छ.	च.	झा.	ज.	प.	द.	स्वा.	ध्य.		
11.	क	→	क्रो.	मा.	मा.	लो.						
12.	प.	→	य.	अ.	उ.							
13.	र.	→	ख.	मी.	क.	क.	च.					
14.	आ.	→	सा.	व.	ह.	प्र.	ह.	ध्या.				
15.	दि.	→	पू.	द.	प.	उ.						
16.	स्था.	→	त.	अ.								
17.	नि.	→	का.	म.	पा.	मा.	शं.	प.	नै.	पि.	ना.	
18.	नि.	→	कै.	गि.	च.	पा.	स.					
19.	म.	→	म.	मा.	म.							
20.	पं.	→	जी.	पु.	ध.	अ.	आ.					

नोट - प्रश्न एवं उत्तर दोनों के प्रथम शब्द दिये है आपको उन्हें पूरा लिखना है।

ANSWER SHEET

1. [illegible] → [illegible]
2. [illegible] → [illegible]
3. [illegible] → [illegible]
4. [illegible] → [illegible]
5. [illegible] → [illegible]
6. [illegible] → [illegible]
7. [illegible] → [illegible]
8. [illegible] → [illegible]
9. [illegible] → [illegible]
10. [illegible] → [illegible]
11. [illegible] → [illegible]
12. [illegible] → [illegible]
13. [illegible] → [illegible]
14. [illegible] → [illegible]
15. [illegible] → [illegible]
16. [illegible] → [illegible]
17. [illegible] → [illegible]
18. [illegible] → [illegible]
19. [illegible] → [illegible]
20. [illegible] → [illegible]

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

वर्ग पहेली

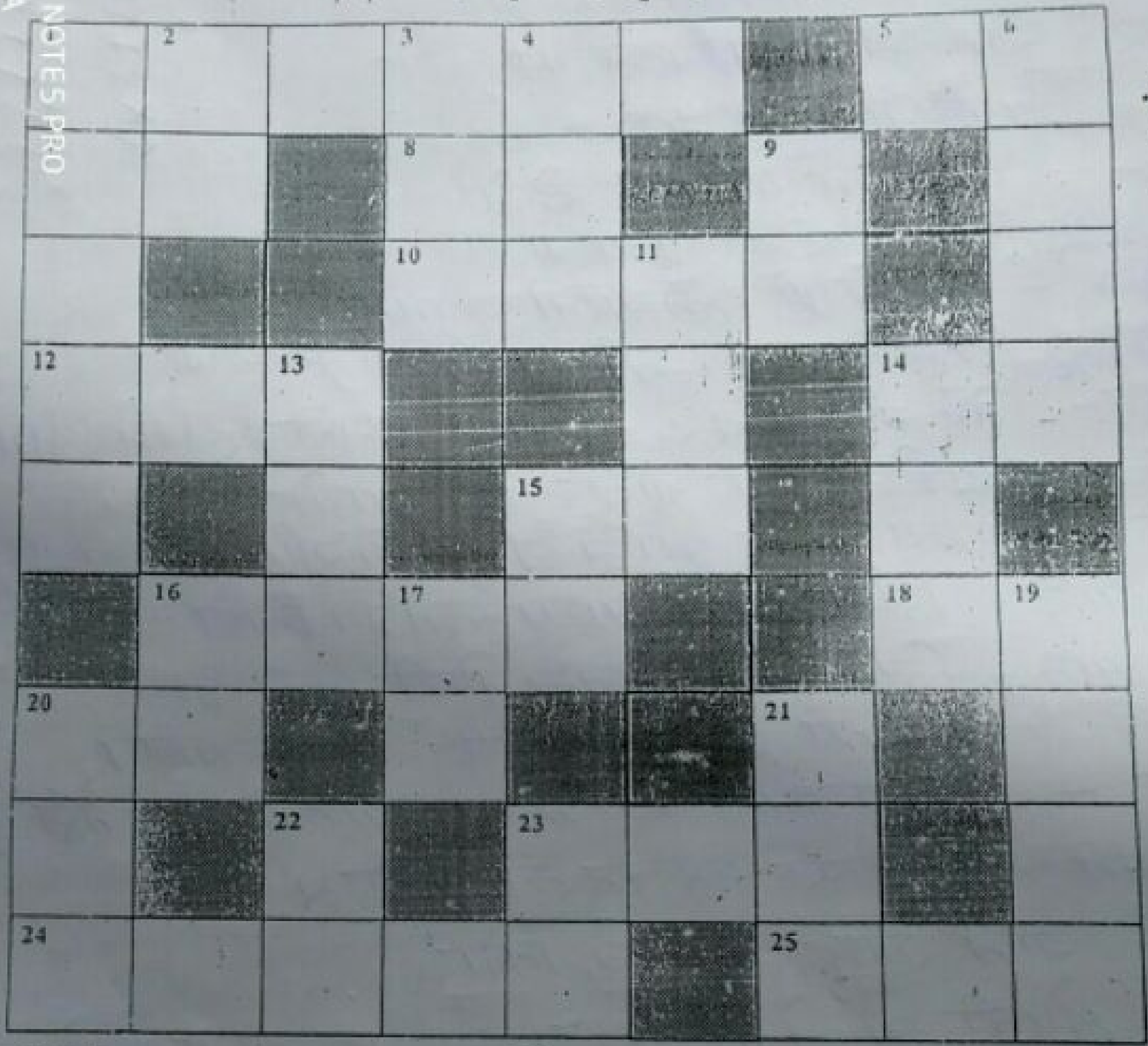

बांये से दायें

1. कवि हरिचन्द्र का एक ग्रन्थ
5. दश धर्मों में से प्रथम धर्म
7. पुद्गल द्रव्य का एक गुण
8. तालाब, ह्रद
10. द्रव्यकर्मों के आठ भेदों में से एक
12. दश धर्मों में से द्वितीय धर्म
14. छह द्रव्यों में से एक द्रव्य, आकाश
15. बाईस परीषह में से एक
16. देशव्रत का एक अतिचार
18. दो से लेकर पाँच इन्द्रिय पर्यन्त के जीव
20. इच्छा, अभिलाषा
23. सल्लेखना करने वाला साधु
24. पाँच ज्ञानों में चौथा ज्ञान
25. एकेन्द्रिय जीव, स्थावर

ऊपर से नीचे

1. जिनागम में इनकी संख्या चौदह है, जीवस्थान
2. चक्षु इन्द्रिय का विषय
3. पाँच इन्द्रियों में से एक
4. अन्तिम, श्रेष्ठ
6. मान को स्तंभित करने वाला स्तम्भ
9. वस्तु का स्वभाव
11. पद्मप्रभ और नमिनाथ भगवान का चिन्ह
13. तीनों लोकों में से एक
14. ज्योतिषियों का एक भेद
15. अन्तःकरण, अनिन्द्रिय
16. सम्यक्त्व के दश भेदों में से एक
17. साधु, मुनि
19. मूलाचार ग्रन्थ का चौथा अधिकार
20. दश धर्मों में से छठा धर्म
21. कुकथा, खोटी कथा
22. दश धर्मों में से सातवाँ धर्म
23. कर्मों का समूल नाश, विनाश

प्रश्न 30. नरकगति का बनता कारण महाव्रती ही करता वारण ।
रौद्र ध्यान के भेद बताओ चार कौन से हमें गिनाओ ।।

प्रश्न 31. भगवान आदिनाथ द्वारा बताये गये षट्कर्म के नाम बताओ

प्रश्न 32. पूज्य दिगम्बर जिनकी काया,लेश न रहती मन में माया ।
साधु परमेष्ठी कहलाते,कैसे हम पहिचान है पाते ।।

प्रश्न 33. णमोकार मंत्र के पांच पर्यायवाची नाम बताओ ।

प्रश्न 34. चउ प्रकार का आहार त्यागें मुनिवर निशदिन निज में जागें
नाम सहित है हमें बताना आहार का है ज्ञान कराना ।।

प्रश्न 35. श्रावक के बारह व्रतों के नाम बताओ ।

प्रश्न 15. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद है नाम बताओ।

प्रश्न 16. नित परिवर्तन जग में करता जीव जगत मे दुख ही सहता।
परिवर्तन के नाम बताओ पांचो से छुटकारा पाओ ।।

प्रश्न 17. एक से अधिक नाम वाले तीर्थंकरो के नाम बताओ।

प्रश्न 18. महावीर ने पथ बतलाया,अंगुली पकडकर चलना सिखाया।
जैनी के लक्षण बतलाओ,सच्चे जैनी तुम बन जाओ ।।

प्रश्न 19. श्रावक किसे कहते हैं ।

प्रश्न 20. कहां कहां से मोक्ष पधारे तीर्थंकर जो हमको प्यारे।
सिद्धक्षेत्र का नाम बताओ कर्म काट सिद्धि पा जाओ ।।

प्रश्न 21. वेदनीय कर्म के कितने भेद होते हैं नाम बताओ।

प्रश्न 22. सम्यकज्ञान प्रमाण कहाता परोक्ष प्रत्यक्ष भेद है पाता ।
ज्ञान परोक्ष है कितने होते ज्ञानी तो नित कर्म है खोते ।।

प्रश्न 23. षट्काय के जीवों के नाम बताओ।

प्रश्न 24. पुण्योदय से पद है पाया सोने जैसी चमके काया
जन्म से कितने ज्ञान के धारी तीर्थंकर पदवी है न्यारी।।

प्रश्न 25. गोत्र कर्म के भेद बताओ।

प्रश्न 26. ओर छोर न जिसका पाता,वह आकाश द्रव्य कहलाता ।
आकाश द्रव्य के भेद बताओ,उनके नाम हमें समझाओ ।।

प्रश्न 27. तीन शल्यों के नाम बताओ।

प्रश्न 28. जीवन दुखमय बनता अपना,भव भव में द:ुख वृक्ष है फलता।
आर्तध्यान के भेद बताओ,उन सबके तुम नाम गिनाओ ।।

प्रश्न 29. गुप्तियाँ कितनी होती हैं नाम बताओ।

प्रश्न 16. कोयल मीठा मीठा गाती, किन्तु काया काली पाती।
कैसे तुमने ऐसा जाना, किस इन्द्रिय से है पहचाना।।

प्रश्न 17. रत्नत्रय किसे कहते हैं।

प्रश्न 18. तीन पद के हैं धारी, जीती जिनने धरती सारी।
तीर्थंकर का नाम बताओ, कामदेव पदवी पा जाओ।।

प्रश्न 19. आचार्य विद्यासागर जी वर्तमान में कहां पर हैं।

प्रश्न 20. जिन मंदिर हैं हमको प्यारा, जिनदर्शन ही एक सहारा।
कितने मंदिर कौन बताए, नगर में अपने आप गिनाए।।

प्रश्न 21. मुनिओं को क्या कहकर नमस्कार किया जाता है।

प्रश्न 22. कुण्डल सा आकार है जिसका, बड़ा अतिशय है वहां के
बड़े बाबा कह सभी पुकारें, नगर कौनसा नाम बतायें।।

प्रश्न 23. णमोकार मंत्र का महत्त्व वाला छन्द बताओ।

प्रश्न 24. षट् द्रव्यों का कथन है जिसमें, द्रव्यसंग्रह नाम है जग में।।
कितनी गाथा कौन बताए, गणना बताकर इनाम पाए।।

प्रश्न 25. बिना चिन्ह की मूर्ति किन किन की होती है।

प्रश्न 30. कुटिल भाव है विष का प्याला, खुले न इससे सुख का ताला
बालक सम हैं भाव बनाया, धर्म कौन सा है समझाया।।

प्रश्न 31. वर्तमान के कोई पॉच आचार्यो के नाम बताओ।?

प्रश्न 32. लोभ पाप का बाप बखाना, इसके चक्कर में न आना।
संतोष भाव ही श्रेष्ठ कहाता, धर्म कौन सा है बतलाना।।

प्रश्न 33. आचार्य ज्ञानसागर छत्रावास कहाँ स्थित है।

प्रश्न 34. णमोकार शुभ मंत्र कहाता, पढ़े सुने जो सुख वो पाता।
किसने है णमोकार सुनाया, मरकर कुत्ता स्वर्ग में जाया।।

प्रश्न 35. सुविधिनाथ भगवान का दूसरा नाम क्या है।

प्रश्न 36. दृढ़ श्रद्धा धर शीश नवाया, पिण्डी से प्रभु को प्रगटाया।
चन्द्रप्रभ को शीश झुकाओ, उन मुनिवर का नाम बताओ।।

प्रश्न 37. किस चीज की एक बूंद खाने से सात गांव को जलाने बराबर पाप लगता है।

प्रश्न 38. शेर ने जिनको शीश नवाया, दूध जलेबी खा हर्षाया।
धर्मवीर का नाम बताओ, मार्ग अहिंसा का अपनाओ।।

प्रश्न 39. वह कौन थे ? जिन्होने अपने माता पिता को कंधे पर बिठा कर तीर्थो की यात्रा कराई थी।।

प्रश्न 40. सियालनी ने तन को खाया, स्वर्ग सम्पदा उनने पाया।
मुनिवर तीन दिवस वे ध्यानी, नाम बताओ उनका ज्ञानी।।

प्रश्न 15. छह द्रव्यों के नाम बताओ ।

प्रश्न 16. सब अचलों में जो महान है तीर्थंकरों का मुक्ति धाम है।
भाव सहित वन्दन जो करता नाम बताओ दुःख का हरता ।।

प्रश्न 17. तीर्थंकरों का चिन्ह कौन तथा कब रखता है ।

प्रश्न 18. नेमिनाथ ना राजुल ब्याहा, चलना मोक्षमार्ग पर चाहा।
मोक्ष कहा से उनने पाया हम सबको भी है वह भाया ।।

प्रश्न 19. पानी की एक बूंद में कितने जीव होते हैं

प्रश्न 20. बाहुबलि की अतिशय कारी, प्रतिमा देखो बड़ी निराली।
किसने यह प्रतिमा बनवाई, दक्षिण प्रांत में है पधराई ।।

प्रश्न 21. उन तीर्थंकर का नाम बताओ जो श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे।

प्रश्न 22. पक्ष जिन्होंने धर्म का रक्खा विद्याधर था नियम का पक्का।
लंका का था राज्य वो पाया, कौन वीर था बताओ भाया ।।

प्रश्न 23. लघु सम्मेदशिखरजी के नाम से किस सिद्धक्षेत्र को जाना जाता है।

प्रश्न 24. जीता मरता जीव अकेला संघ में चलता गुरू न चेला।
भावना कौन सी है कहलाती मोह भाव को दूर भगाती ।।

प्रश्न 25. भगवान आदिनाथ को प्रथम आहार किसने तथा किस चीज का दिया था ।

प्रश्न 26. सात भूमि में कहीं न साता, दुःख ही दुःख मिलता है भ्राता।
अष्टम भूमि का नाम बताओ, प्राप्त करो तो सुख पा जाओ ।।

प्रश्न 27. भगवान महावीर का संदेश क्या था।

प्रश्न 28. पांच महाव्रत के हैं धारी, पच्चीस मूलगुण के अधिकारी।
परमेष्ठी वे कौन कहाते, सत्य-असत्य का ज्ञान कराते ।।

प्रश्न 29. राजा ऋषभदेव की पुत्रियों के नाम बताओ।

प्रश्न 16. अष्टकर्म को किया है नाश, रही न जिनको कुछ भी आश।
परमेष्ठी वे कौन कहाते, बीच हमारे कभी न आते।।

प्रश्न 17. भक्तामर स्तोत्र के रचयिता कौन हैं?

प्रश्न 18. कुम्भ कर्ण अरू रावण भाई, बात न उनकी है बन पाई।
बहिन के उनका नाम बताओ, भाई विभीषण भूल न जाओ।।

प्रश्न 19. अरिहंत परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं?

प्रश्न 20. जिनवर की भक्ति है करना, अष्ट द्रव्य से थाल है भरना।
आवश्यक हैं क्या कहलाता, पाप नशाता पुण्य को लाता।।

प्रश्न 21. तत्त्वार्थ सूत्र जी के रचयिता कौन हैं।

प्रश्न 22. पांच महाव्रत के हैं धारी, पच्चीस मूलगुण के अधिकारी।
परमेष्ठी वे कौन कहाते, सत्य असत्य का ज्ञान कराते।।

प्रश्न 23. नरक कितने होते हैं।

प्रश्न 24. जन्म महोत्सव इन्द्र मनाया मेरू पर अभिषेक करवाया।
जल है उसने कहाँ से लाया, नाम उदधि का बताओ भाया।।

प्रश्न 25. लोक कितने होते हैं।

प्रश्न 26. श्रावक का आचार पढ़ाता, ग्रंथ श्रावकाचार कहाता।
रत्नकरण्ड नाम है पाया, किन आचार्य ने इसे बनाया।।

प्रश्न 27. कैलाश पर्वत से किन तीर्थंकर ने मोक्ष प्राप्त किया?

प्रश्न 28. तीर्थंकर हैं प्रथम कहाते, ऋषभदेव जयकार लगाते।
मात-पिता का नाम बताओ, सही बताकर इनाम को पाओ।।

प्रश्न 29. नेमिनाथ भगवान ने कहाँ से मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न 30. अन्धकार है मोह कहाता मोही प्राणी सुख न पाता।
द्रव्य कौन सी चरण चढ़ाते, मोह नाशकर ज्ञान हैं पाते।।

MI NOTE 5 PRO

प्रश्न 31. स्वर्ग कितने होते हैं।

प्रश्न 32. जिन प्रतिमा पर जल की धारा, नित प्रति करना हमें सहारा ।
कार्य कौन सा है कहलाता, श्रावक का कर्तव्य कहाता ।।

प्रश्न 33. कितने परमेष्ठी आहार करते हैं ।

प्रश्न 34. नगर सदलगा जन्म है पाया मुनि वन जीवन सफल बनाया ।
विद्याष्टक है जिनकी रचना, नाम बताओं पाप से बचना ।

प्रश्न 35. यशोधर मुनि के गले में सर्प किस राजा ने डाला ।

प्रश्न 36. कीड़ो की वो लार कहाता, धर्म अहिंसा शीघ्र नशाता ।
वस्त्र कौन सा वह कहलाता, नाम बताओं मिले न साता ।।

प्रश्न 37. गुणस्थान कितने होते हैं।

प्रश्न 38. है भक्तामर रचना प्यारी भुक्ति मुक्ति की है तैयारी ।
गाते है किस छन्द में इसको नाम बताओ पता हो जिसको ।।

प्रश्न 39. जीव के कितने भेद होते हैं

प्रश्न 40. अन्तिम केवली जम्बूस्वामी, मात-पिता की बात न मानी ।
पच्चीस वर्ष में दीक्षा धारे, कहो कहाँ से मोक्ष पधारे ।।

(7)

शुरु करे अन्ताक्षरी ले कर महावीर का नाम

नोट :- प्रथम प्रश्न के उत्तर के अंतिम अक्षर से दूसरे प्रश्न का उत्तर प्रारंभ होगा -

नाम : अनुभव जैन भिण्ड

पिता श्री मनोज जैन

1. कषाय का एक नाम बताइये - मान
2. रविवार के दिन त्याग किया जाता है - नमक
3. एक अनुयोग का नाम - करुणानुयोग
4. उन मुनिराज का नाम जिनके सिर पर जलती हुई सिगड़ी रखी गई थी - गजकुमार मुनिराज
5. पूजा का एक द्रव्य - जल
6. एक नारायण का नाम बताइये - लक्ष्मण
7. हमारा महामंत्र - णमोकार
8. एक इन्द्रिय का नाम - रसना
9. भगवान की दृष्टि कैसी होती है - नासा
10. एक गुणस्थान का नाम बताइये - सासादन
11. 21 वे तीर्थंकर का नाम बताइये - नमिनाथ
12. तिर्यंचगति का एक भेद - थलचर
13. नरक की एक पृथ्वी का नाम - रत्नप्रभा
14. भरत के नाम से हमारा देश कहलाया - भारत
15. षट् आवश्यक में से एक नाम बताइये - तप
16. एक लेश्या का नाम - पद्म
17. जंबूस्वामी यहाँ से मोक्ष गये - मथुरा
18. जिन्होंने अपने होने वाले पति का अनुसरण किया - राजुल
19. एक द्वीप जहाँ रावण राज्य करता था - लंका
20. जिनके साथ आ. मानतुंग का शास्त्रार्थ हुआ - कालिदास
21. द्वितीय चक्रवर्ती - सगर
22. आ. कुंदकुंद कृत आचरण विषयक 167 गाथाओं में निबद्ध ग्रन्थ - रयणसार

कपूर चंद - मेरे लिए भी कोई सन्देश है क्या ??

धर्मचन्द - तू कहता है की आपकी रक्षा धरणेन्द्र पद्मावती ने की तो यह ठीक नहीं। भगवान की रक्षा न धरणेन्द्र कर सकते है, न पद्मावती, न अन्य और कोई, न करेंगे। भगवान भी किसी की रक्षा नहीं करते। भगवान तो अपने आत्मा में लीन रहते है। भगवान के द्वारा तू सजा दिलाने की बात कहता है वह भी ठीक नही है भगवान किसी के कर्ता धर्ता नहीं है। वे मात्र ज्ञाता दृष्टा है। भगवान् वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते हैं उनके गुन हम भी प्राप्त कर सकते है।

डॉ दयाराम - मेरे लिए क्या सन्देश है

धर्मचन्द - तुम अपने आप को दूसरा भगवान समझते हो, तुम सोचते हो मैंने रक्षा की, मैंने बचाया यह मान्यता मिथ्या है। कोई किसी को न मार सकता है न रक्षा कर सकता है सब अपने आयु कर्म के उदय से जीवन मरण करते है। आप स्वाध्याय धर्म में रुचि लगाऐ। परोपकार करें लेकिन उसे धर्म न माने। भगवान् के गुणों को पहिचान कर उनके मार्ग पर चलें तो मोक्ष प्राप्त कर सकते हो।

रूपवती - भाई साहब मेरा सन्देश भी सुना दो _

धर्मचन्द तुम भगवान से अपना न्याय कराना चाहती हो वो किसी का कुछ नहीं करते, सास का पूरा यथा योग्य सम्मान करो। माँ की तरह व्यवहार करो धर्म ध्यान में समय लगाओ। आराम कम, काम अधिक करें, सत्मार्ग पर चलकर आत्मा कल्याण करो इसी से तुम्हारी व परिवार की उन्नति है।

तिकड़मदास - मेरे लिए क्या सन्देश है _

धर्मचन्द- आप धर्मायतनों के ठेकेदार मत बनो, आप वाणी बोलने में चतुर हो, सत्यव्रत का पालन करने का वचन लें। की हम सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे और सुखी होयेंगे।

स्वप्न सुंदरी- मेरे लिए क्या सन्देश है _

धर्मचंद्र - बहिनजी, यह स्त्री पर्याय नाटक, सीरियल करने के लिए नहीं मिली, अनेकों बार हीरोइन बनकर नाम कमाय, तुम भरत चक्रवर्ती को देखो, यशादि खूब कमाया लेकिन सब यही रखा रह जाएंगे। आप मंदिर में प्रतिदिन जाये, स्वाध्याय, मनन चिंतन करे। जिनधर्म में अपने को समर्पित करो। यही तुम्हारे कल्याण का मार्ग है।

(सभी लोग रंग मा रंग मा .... गीत गाते व नृत्य करते है)

मार्कसीट में चढ़ जाएँ । यदि मैं पास हो गया तो पूरे दो नारियल चढ़ाऊंगा और प्रतिदिन आपके दर्शन करूँगा ।

दीनदयाल का प्रवेश

वीतराग सर्वज्ञ ....चरण शरण में आन पड़े ।।

हे भगवान- आप दीन दुखियों की सहायता करने वाले हो पीड़ा कों हरने वाले हो. कृपा निधि हो, दयालु हो, तुमने श्रीपाल के कोढ ठीक किया हैं । मैं दीन दुखी हूँ, गरीब हूँ । मुझ दीन हीन की सहायता कीजिये मैं आपका बहुत उपकार मानूँगा । आपका सच्चा दास बन जाऊंगा । यदि आप मेरी गरीबी मिटा दोंगे तो मैं धनवान होने पर शुद्ध सोने चांदी के चमर व छत्र चढ़ाऊंगा, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाऊंगा । गरीबों को कम्बल साडी आदि बाटूंगा ,अपंग व्यक्तियों को ट्राई साईकिल, वैशाखी ,आदि बाटूंगा । भगवान मेरी भावना को पूर्ण करो ।

शांति देवी का प्रवेश

(हाथ में लकड़ी ,बाल सफेद)

शांति देवी - नाभिराय मरुदेवी के नंदन ,आदिनाथ स्वामी महाराज

सर्वार्थ सिद्धिते आप पधारे मध्य लोक माहि जिनराज ।।

आदिनाथ सुत बाहुबली प्रभु मात सुनंदा के नंदन

चरम शरीरी कामदेव तुम पोदान पुर पति अभिनन्दन

छह खण्डो पर विजय प्राप्त कर भरत चढ़े वृषभाचल पर

अगणित चक्री हुए नाम लिखने को न मिला थल तिल भर ।।

जयति बाहुबलि स्वामी जय जय करु वंदना बारम्बार ।

निज स्वरूप का आश्रय लेकर आप हुए भवसागर पार।।

(बड़ी कठिनता से धीरे से नीचे बैठती हैं फिर बोलती हैं)

आदिनाथ भगवान , शक्तिशाली बाहुबली भगवान , संकट मोचन पार्श्वनाथ भगवान , मेरी बहू मुझे बहुत परेशान करती रहती हैं । न चैन से खाना देती न घर में रहने देती ।सुबह से उठकर काम करती हूँ ।मेरा पुत्र भी अब मेरी नही सुनता । उसपर बहु ने कुछ जादू कर दिया हैं। मेरी बात न मेरे पति सुनते हैं , न बेटा , न बेटी ,न पोते, अब तो मेरा बुरा हाल हो गया है । जब से इस घर में बहु आयी है तब से घर का ढांचा ही बिगड़ गया ! बहु, सास ससुर को कुछ नही समझती वह अपने पति का ही ध्यान रखती है। भगवान उसको सदबुद्धि दे या फिर मुझे इस दुनिया से उठा ले । मैं बूढ़ी हो गयी हूँ अब कहीं जा भी नहीं सकती । रोज रोज आ नहीं पाती ।

हे प्रभु ! मुझ दुखियारी के दुःख दूर करे, इस बहु को नरक में कीड़े पड़ेंगे । ऐसा मेरा शाप हैं ।

डॉ दयाराम का प्रवेश:

डॉ दयाराम - सकल गये............................ तुम धुनि है सुनि विभ्रम नशाय।।

हे परम कृपालु भगवान मैं दीन दुखी रोगियों का उपचार करता रहता हूँ । तुम्हारे बाद इस संसार का दूसरा भगवान मैं ही हूँ। लोग मुझे देवता कहते है की आपने मुझे बचा लिया । अन्यथा मैं मर जाता । मैं जगत के जीवों को बचाता हूँ ,रक्षा करता हूँ । अगर मैं किसी को मारता हूँ भी तो दूसरों के हित के लिये । भगवान मुझे ऐसी धन सम्पदा दें । जिससे मैं सुख से रह सकूँ । मेरा नाम

मैं महावीर जी
हे मेरे महावीर भगवान _ मैं नगर सेठ कहलाता हूँ मेरे पास अपार धन सम्पदा है। सभी लोग मेरी आज्ञा मानते हैं। पर कोई संतान नहीं हुई इस
तीर्थ क्षेत्र होकर आया हूँ। आपकी कृपा से सब तरह से सुखी हूँ। परन्तु मेरी शादी हुए दश वर्ष हो गए, पर कुछ भी नही हुआ मैं आपका
कारण बहुत परेशान हूँ। मुझे पत्नी भी परेशान करती है सब डॉक्टर का इलाज करा चुका हूँ अतः आप मेरे दुखों को दूर करे
सच्चा भक्त हूँ। आप तो दुनिया के रक्षक हैं प्राणियों के दुःख को हरने वाले हो तो नित्य करूँगा ही सिद्ध चक्र
हे भगवान। आप मेरी इच्छा को पूरी करे, यदि मेरी इच्छा पूरी कर दी तो मैं आपकी सेवा, पूजा पाठ, समाज के सभी लोगों को प्रीतिभोज
का विधान, भक्तामर का अखंड पाठ भी करूँगा। मंदिर पर एक सोने का कलश चढ़ाऊंगा
दूंगा।

अतः हे भगवान आप मेरी मनोकामना पूर्ण करे

कपूर चंद का प्रवेश

ऋषभ आजित .... पद पुण्य चढ़ाये
नाथ तुम्हारो पूजा में सब .... यह सीख सीखने आया हूँ।

हे भगवान- आप कैसे भगवान हो। आप अपनी रक्षा नही कर सकते। हमारे जैन मंदिरों से चोर आपको उठा ले जाते हैं। आप दूसरों की रक्षा क्या करोगे। आपकी रक्षा तो धरणेन्द्र और पद्मावति ने की थी तो आप अनन्त वीर्य के धनी कैसे हो, भगवान को ऐसा होना चाहिए की कोई गलती करे तो तुरन्त सजा मिले, जिससे आगे कभी गलती न करे, आप तो कुछ करते ही नहीं। देखो मैं समाज का अध्यक्ष हूँ। समाज के डर से मंदिर आता हूँ दिखावटी नमस्कार करता हूँ लेकिन आप को कुछ करना चाहिए।

(माला फेरने बैठ जाता हैं)

कर्म चंद का प्रवेश

कर्मचंद -अति पुण्य उदय .... सुख निधि सुधा नही पाकर ।।

हे प्रभो- अरहंत सिद्ध परमात्मा आप तो अंनदाता हो भूखों का पेट भरने वाले हो मैं बेरोजगार हूँ भूखा हूँ। घर पर सभी लोग परेशान करते हैं; मैं सब जगह नौकरी के लिए गया कहीं भी नौकरी नही मिली, अब मैं आपके दरबार में आया हूँ। मेरी पुकार सुनें

अगर आप मुझे नौकरी दिला देंगे तो 101रु मंदिर में भेट चढ़ाऊंगा। पगार मिलेगा उसका पहिले महीना का पूरा मंदिर में दान कर दूंगा। आपका सच्चा भक्त बन जाऊंगा। आप मेरी इच्छा को पूरी करें तो आपका भी फायदा और मेरा भी।

(माला फेरने बैठ जाता हैं)

विवेक का प्रवेश

णमोअरिहंताणं............................धम्मो लोगुत्तमा

साष्टांग नमस्कार करके -मैं कक्षा में सबसे होशियार लड़का था। लेकिन मेरे घर पर रंगीन टीवी पर पिक्चरें, सास भी कभी बहु थी, कार्टून, आदि इतने कार्यक्रम आते हैं की मैं रात को देर से सोता हूँ तब भी पुरे नही देख पाता, स्कूल भी देर से पहुँच पाता हूँ। सबेरे नींद नही खुलती पढ़ाई में भी मन नही लगता। छमाही परीक्षा के पेपर अच्छे नही रहे। वार्षिक परीक्षा निकट ही हैं। हे भगवान ऐसा कोई आशीर्वाद दें जिससे मैं अच्छे नंबर से पास हो जाऊं। कोई पेपर मिल जाये, या कोई अच्छे लड़के के नंबर मेरी

॥ धर्मचंद_ पुजारी के वस्त्र पहिनकर मन में णमोकार मन्त्र बोलता है तदनंतर भगवान को नमस्कार करके स्वाध्याय करने बैठ जाता है

जयचंद_ (मंदिर जी में प्रवेश करते हुए) निःसहि निःसहि निःसहि ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु (वेदी के पास आ कर) णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं

चौबीसो परिग्रह रहित चौबीसो जिनराय

वीतराग सर्वज्ञ जिन, हितकर सर्व समाज ||

दर्शनम् देव देवस्य, दर्शनम् पाप नाशनम्

दर्शनम् स्वर्ग सोपनम, दर्शनम् मोक्ष साधनम् ||

चौबीसो तीर्थंकरों की जय, अन्तर्मुख मुद्रवंत सर्व जिनेन्द्र भगवन की जय, द्वादशांग जिनवाणी माता की जय, भावलिंगी संतों की जय, हे! जिनेन्द्र परमात्मा आप तो अनंत सुखी हो मैं भी सुखी होना चाहता हूँ इसलिए आपकी शरण में आया हूँ। मुझे इस संसार में कही भी सुख नहीं दीखता। मुझे यह संसार असार लगने लगा है। इसलिए मैं आपकी शरण में आया हूँ

क्षण भर.......................................यह ही अरहंत अवस्था है

हे भगवान। मैं अपने आप में लीन होकर अरहंत सिद्ध पद की प्राप्त करू।

(नमस्कार करके एक तरफ स्वाध्याय करने बैठ जाता है।

स्वपन सुंदरी का प्रवेश

स्वपन सुंदरी

एक तुम्ही आधार हो जग में ऐ मेरे भगवान

की तुमसा और नही बलवान।

सम्हल न पाया गोते खाया तुम बिन हो हैरान

की तुमसा और नही बलवान ||

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम बोध कला विस्तारी मैं चेतन तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकै सारी

निज अंतर में ज्योति ज्ञानमयि अक्षय निधि महान ||

हे मेरे भगवान! मैं सुंदर रूपवान हूँ। फिल्मों सीरियल में काम करना चाहती हूँ, बम्बई कुछ दिन रहकर आयी, लेकिन वहां कोई कार्य नही मिला, भरतनाट्यम, कत्थक, मैं प्रवीणता हासिल की है विदेशों में पहुंचने का अवसर दिलवा दीजिये। आप तो सबके मन की जानने वाले है मेरी विनती भी स्वीकार करें, अगर अवसर मिल गया तो भगवान आपके ऊपर ही फ़िल्म, सीरियल बनाउंगी। जिससे आपका नाम भी प्रसिद्ध होगा। तथा जिनधर्म का भी प्रचार होगा। मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें।

(माला फेरने बैठ जाती है)

करोड़ीमल का प्रवेश

जो मोह माया मान.................. तीर्थंकर स्वयं महावीर है।

इस अर्घ्य का क्या मूल्य.................. विचरे हमारे धयान में

माईकल - मैं कैसा भी प्यार करूँगा, संस्कार के अभाव में मेरा जीवन तो बिगड़ गया लेकिन मैं अपने बच्चे का भविष्य नहीं बिगड़ने दूँगा।

सर्दस - तो ठीक है कल से तुम उसे जिन मन्दिर में व धार्मिक पाठशाला मे भेजा करो तथा खुद भी मन्दिर जाया करो।

माईकल - मैं तुम्हारी बात मानूँगा।

संचालक -

तो देखा आप लोगो ने [illegible] भी अपना व अपने बच्चो का जीवन अंधकार से बचाना चाहते हैं तो खूब सोचिये उन्हें [illegible] अगर अनन्त काल तक सुखी परिवार चाहते है तो उन्हें पाठशाला भेजिये और समझाइये धर्म का महत्व और दीजिए उन्हें संस्कार

=> समाप्त <=

पात्र -

1. आस्था (रश्मी [illegible])
2. जमुना / जैन (ज्योति [illegible]) (जैन्सी [illegible])
3. ईसा (ज्योति [illegible])
4. मुक्ति / अनुभूति (सरकार [illegible])
5. माईकल (जीनस [illegible])
6. सर्दसा ([illegible] कुर्ती)
7. मुर्खा (आशी [illegible])
8. वेटर :- (ताई)
9. पुजारी ([illegible], [illegible])
10. जैन की दोस्त 'जनी' (जैन्सी आशी)
11. पुलिस (वर्षी)

सर्वेश :– ठीक है आता हूँ!

पंचम दृश्य

संचालक :–

तो देखा आप लोगों ने एक संस्कारित व असंस्कारित परिवार का अन्तर, लेकिन अभी आइएगा नहीं अभी नाटकीय अन्तिम दृश्य तो ध्यान से देखें!

माइकल सात साल की जेल काट कर आता है। और संयोग वश एक दिन उसकी मुलाकात सर्वेश से होती है, तो आइये देखते हैं आपस में क्या बातें होती हैं!

(आपस में टकराकर)

सर्वेश :– अरे कहीं तुम ऐय्याशी के लड़के माईकल तो नहीं।

माईकल :– और तुम आस्था वादी के लड़के सर्वेश तो नहीं!

सर्वेश :– क्या मैंने सही सुना कि तुमने अपनी बुआ का खून कर दिया और सात साल की सजा काट कर आ रहे हो!

माईकल :– हाँ यार उस दिन नशे में न जाने मुझसे क्या हो गया, ये शराब होती ही बुरी आदत है।

सर्वेश :– चलो छोड़ो इन बातों को, ये बताओ तुम्हारा बेटा कैसा है?

माईकल :– उसकी क्या कहूँ? वह बेटा तो कुछ सुनता ही नहीं, एक गिलास पानी भी मांगो तो कहता है, पैदा करके क्या निहाल किया जो अहसान जताते हो। अब तुम ही बताओ मैं क्या करूँ, अब तुम ही उसको सही करने का उपाय बता सकते हो।

सर्वेश :– उपाय तो है, पर तुम्हारे लिए कठिन होगा।

रेखा- (गेट खोलकर) तुम्हें इतनी भी सेन्स नहीं है कि अपने से बड़ो को कैसे बोलते हैं? चल बाहर खड़ा रह!

माईकल- मेरी बहन होकर मुझे सिखाती है, चल हट! (धक्का देकर अन्दर चला जाता है)

माईकल- (दर्शकों की तरफ) वो मेरा बुड्ढा बाप तो साला मर गया, अब तो मात्र ये बुड्ढी माँ, बहन और भुआ बची है तो ये तीनो ही मेरे पैसे से जी रहे हैं, इस रेखा व भुआ को तो मैं बाद में देख लूंगा, लेकिन इस माँ को आज मैं नहीं छोड़ुंगा! माँ तेरी तो ठाई! (माँ को खींचकर खड़ी करता है)

माईकल- ऐ माँ! चल पैसे निकाल!

जैम - नहीं दूंगी! (चल हट भिखारी)

माईकल- सीधी तरह कहता हूँ, दे दे वरना....

रेखा - वरना- वरना क्या कर लेगा तू, यह पैसे नहीं देगी तो।

तीनों एकसाथ- आज हम मर भी जाए तो तुझे एक फूटी कौड़ी नहीं मिलेगी जा!

माईकल- क्यो भुआ! तुझे मरने का ज्यादा ही शौक है तो ये ले मर! (जेब से चाकु निकालकर मार देता है, व भाग जाता है, माँ बहन मिलकर रोती हैं)

पुलिस- अरे! इतनी रात को कहाँ भागता है, चल इधर आ!

माईकल- मुझे छोड़ दो! मैंने कुछ नहीं किया!
पुलिस- (भागते हुए डंडा पटकता, माईकल गिर जाता है) ले पकड़ लिया ना बच्चू, सुन, नहीं कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं, हमसे बचकर कहाँ जाएगा! चल अब थाने में! वहाँ बैठकर चक्कीचलाना!

चतुर्थ दृश्य

[illegible]

[illegible] देखा आप लोगों ने एक बारात किस तरह एक हंसते-खेलते परिवार को क्षण भर में तबाह कर देती है. ये तो उस [illegible] मॉडर्न परिवार का हाल था. चलिये अब हम [illegible] परिवार का माहौल भी देख लेते हैं.-

[illegible] व मुक्ति चावल बीन रही है. तथा भजन गा रही है [illegible] ... रामा ---, साथ ही चर्चा चल रही है।

आरती — बेटी अनुभूति ज़रा इधर तो आना।

मुक्ति — अभी आई माँ। (आकर बैठती है) लाइये छोड़िये माँ मैं बीन देती हूँ।

[illegible] — [illegible] तो मैं कर लूंगी. मैंने तुझे इस लिये बुलाया [illegible] अभी तक आया नहीं आज तो बहुत देर हो [illegible] पिताजी की दवाई लाना याद रहा कि नहीं।

[illegible] और उसे आज पाठशाला से पुरस्कार मिलनी [illegible] है। कहाँ गया है?

[illegible] दरवाजे में ठक-ठक की आवाज)

[illegible] माँ ये पिताजी की दवाई।

आरती — [illegible] सर्वेश! तुझे पाठशाला नहीं जाना है. आज तुझे [illegible] है।

सर्वेश — [illegible] भगवान! धन्यवाद! आपने मुझे याद दिलाया।

(कुछ समय पश्चात्)

आरती — तू आ गया बेटा! आज बड़ी देर कर दी।

[illegible] — [illegible] माँ छोटी की बातें होती ही ऐसी है. समय का कुछ [illegible] ही नहीं चलता! अच्छा पिताजी कैसे हैं?

आरती — [illegible] तो तेरा ही इन्तजार कर रहे थे. जा मिल आ।

जुआरी- (पत्ते बांटकर) ये रही मेरी 50,000 की चाल!

माईकल- तो ये रही मेरी हीरे की अंगूठी और ये ले तीन बेगम। मैं जीता!

जुआरी- तो ये ले मेरे तीन इक्के! हा-हा ये बाजी भी मैं जीत गया हा हा..

माईकल- अरे! मैं तो दोनों ही बाजी हार गया। अपुन का तो Bad luck ही खराब है. चलो Don't फिकर गोली मारो घर चलते हैं। (नशे में घर की ओर)

जुआरी- चलो अपुन का काम तो निकला।

संचालक-
तो आपने देखा. अमेरिका की सभ्यता और संस्कृति ये तो नमूना है और आगे क्या-क्या होता है. वो देखते हैं। लेकिन उनके घर का हालचाल!

जैम- बेटी रेबा जरा पानी तो लाना।

रेबा- अभी लाई मॉम! (ट्रे में रखकर लाती है व मॉ को दे उच्चासन पर बैठ जाती है)

जैम- देख बेटी आजकल तेरा भाई शराब पीने लगा है तथा जुआ भी खेलता है. मैं तो उसे समझा-समझाकर थक गई. अब तु ही बता मैं क्या करूं! बेटी ऐसा क्यों नहीं करती कि तु अपने भाई को समझाए, क्या पता वो तेरी बात मान जाए।

रेबा- ठीक है मॉम, आने दो भैया को आज मैं समझाऊंगी! (नशे में गेट पर ठक-ठक की आवाज)

माईकल- (नशे में) कहाँ मर गये सारे, कोई गेट क्यों नहीं खोलता?

जैम- बेटी देख तेरा भाई आया होगा।

पुरी करके — हैं. नाटक के आगामी भाग में →
का परिचय

तृतीय दृश्य

माइकल ·

जो बेटा अमेरिका गया और वहाँ से पढ़कर आया था, तो उसमें वहाँ की सभ्यता के अनुरूप कई बुरी आदतें लग जाती हैं, और वह आदतें यहाँ क्या गुल खिलाती हैं, आइये देखते हैं, नाटक के इस भाग में –

रे ... भी

माइकल – (क्लब में शराब पीता है। हाथ में बोतल लेकर) अरे यहाँ तो कोई नाचने वाला ही नहीं है। चलो कोई बात नहीं। मैं ही नाच लेता हुं।
चल हैया ... (नाचता है)

(Sight)
कड़ी
चला

जुआरी – (ताश की टेबल पर बैठा हुआ) अबे है कोई माई का लाल, जो मेरे साथ पत्ते खेले। 2

है

माइकल· हाँ हैं ये माई का लाल "माइकल" चल पत्ते बाँट।

हुई
आपुन

जुआरी· ए चिरकुट! भाई के लिए drink लेकर आ।
वेटर – जी सर।

जुआरी· (पत्ते बाँटकर) ये रही मेरी 10,000 की चाल।

माइकल· तो ये रही मेरी 20,000/- की चाल! और ये मेरे तीन गुलाम!

जुआरी· तो ये रहे मेरे तीन बादशाह। हा हा ये बाजी तो मैं जीत गया। और कोई है जो मेरे साथ खेले।

माइकल · चल दुबारा बाँट।

देख लेते

...डी. अमेरिका से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करके
...और ये तुम्हारे साथ कौन है. तुमने इनका परिचय
...करवाया।

...मेरा बेटा है। सर्वेश।

...जिनेन्द्र! (पैर छूता है)

...तो जयपुर में पढ़कर जैन दर्शन में प्रोफेसर जी
...था सुबह शाम पाठशाला भी पढ़ाता है।

...वेर बिगाड़ ही डाला था. अपने बच्चे के bright
...।

मैंने पांच साल पहले कही थी, वही अब कहती
...क्त ही अब बताएगा कि वास्तव में किसका
...है और किसका black.

...लती हूँ. प्रवचन की लेट हो रही है
...नेन्द्र!

(बाद में) न जाने किस खेत की कटी हुई.
...अब भी धर्म ध्यान से चिपकी हुई है. अपुन
...तो ये है.
...ब तक जिओ. मौज से जिओ"
...। हट चल।

...ह! क्या सिद्धांत है! जरा सोचो भाईयो,
...की किरणें गर्मास लिये होती है.
...की कलियाँ सुवास लिये होती हैं।
...ज की तो हर हाल बीत रहा हैं साथियों,
मौत का पैगाम हर साँस लिये होती है।।
कोई बात नहीं इस सिद्धान्त का फल भी देख लेते

ok bye see you

आस्था : अच्छा ठीक है, जय जिनेन्द्र !

संचालक :

तो देखा आप लोगों ने की अगर व्यक्ति के संस्कारों में अंतर होता है तो उसके विचारों में भी अंतर होता है। वह अपना परिवार अंधेरे में डाल सकता है।

बालकों के भविष्य की डोर तो माँ के ही हाथ में होती है। कहा भी है -

माँ चाहे तो बेटे को इंसान बना सकती है
माँ चाहे तो बेटे को हैवान बना सकती है।
और माँ ही वह रूप है बन्धु जो,
वह चाहे तो बेटे को भगवान बना सकती है॥

इसी का और रूप देखते है नाटक के आगामी दृश्य में...

द्वितीय दृश्य

संचालक : दोनों सहेलियाँ 5 वर्ष पश्चात् संयोगवश फिर से आकर मिलती है, तथा उनके साथ उनके पढ़े हुए बच्चे भी होते है, तो क्या बाते होती है उनके बीच; आइये देखते है नाटक के इस दृश्य में....

आस्था : अरे अमृता ! जय जिनेन्द्र !

पैम : ओफो अमृता नहीं आन्टी पैम कहो ! और ये जय जिनेन्द्र करना तुमने अभी तक नहीं छोड़ा।

आस्था : अच्छा छोड़ो इन बातो को ! ये बताओ ये कौन है ? अभी तक तुमने परिचय नहीं करवाया।

पैम : अरे ये मेरा बेटा है, माईकल
माईकल : हाय ! आन्टी !

सूरज के बिना कमल नहीं खिलता,
वायु के बिना पत्ता नहीं हिलता,
जप तप में भले ही सदियाँ गुजार दो,
संस्कारों के बिना जीवन नहीं चलता।

आदरणीय बुद्धिमान सद्धर्म प्रेमी बन्धुओं! आप सभी का इस रात्रिकालीन संस्कारों की झाँकियों में हार्दिक स्वागत है। आज हम इस नाटक में धार्मिक संस्कारों के परिप्रेक्ष्य में रहने वाला परिवार व आधुनिक सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में रहने वाला परिवार व दोनों में क्या अन्तर है। तो आइये प्रस्तुत है नाटक जिसका नाम है

संस्कार

प्रथम दृश्य

सूत्रधार: बचपन से साथ खेली पढ़ी दो सहेलियाँ शादी के बाद बिछुड़ जाती है तथा शादी के तीन साल बाद बाजार में आकर मिलती है। और क्या बात करती है आइये देखते हैं नाटक के प्रथम दृश्य में....

जमुना: (आश्चर्य से) हाय आस्था!

आस्था: अरे जमुना तुम! जय जिनेन्द्र!

जमुना: तुमसे कितनी बार कहा है जमुना नहीं जैम कहो! और ये जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र क्या लगा रखा है, कभी हाय हैलो भी किया करो यार!

आस्था: क्यों इसमें क्या बुराई है? जब हिन्दु जय राम जी की बोल सकते हैं, सिक्ख वाहेगुरु की जय बोलते हैं तो हम जैनी भाई जय जिनेन्द्र क्यों नहीं बोल सकते?

जैम: अच्छा अच्छा अब ये आगम धर्म का उपदेश देना मत शुरू कर देना!

जिनवर एक मिनिट

१. मात्र एक मिनिट में आपको निर्दिष्ट कार्य पूरा करना है।
२. समय एक मिनिट से ज्यादा नहीं दिया जायेगा।
३. एक कार्य को करने के लिये एक साथ दो प्रतियोगी होंगे।
४. निर्णायक का निर्णय ही अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

१. ॐ बनवाना।
२. ॐ बुलवाना। (साँस रोककर)
३. स्वास्तिक बनवाना।
४. णमोकार मन्त्र शुद्ध बुलवाना।
५. णमोकार मन्त्र शुद्ध लिखवाना।
६. चौबीस तीर्थंकरों के नाम बुलवाना।
७. चौबीस तीर्थंकरों के नाम लिखवाना।
८. निःसहि अथवा नमोऽस्तु बोलना।
९. अष्टांग नमस्कार करवाना।
१०. आचार्यों के नाम लिखवाना।
११. सिद्धक्षेत्रों के नाम लिखवाना।
१२. अतिशय क्षेत्रों के नाम लिखवाना।
१३. विधानों के नाम लिखवाना।
१४. माला पहनना।
१५. मम स्वरूप है सिद्धसमान - बोलना।
१६. मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ - बोलना।
१७. हूँ स्वतन्त्र निश्छल निष्काम - बोलना।
१८. चौबीस तीर्थंकरोंवाला छन्द बोलना।
१९. अष्टद्रव्य को अलग-अलग करवाना।
२०. पूजनों के नाम लिखवाना।
२१. चावल में से द्रव्य निकलवाना।
२२. स्वास्तिक बनवाना।
२३. पञ्चपरमेष्ठी को उलटा बोलना। लिख
२४. अप्पा सो परमप्पा — बोलना।
२५. पज्जय मूढा हि परसमया — बोलना।
२६. अहिंसा परमो धर्म: बोलना।
२७. चत्तारि मंगल पाठ बोलना।
२८. दंसणमूलो धम्मो बोलना।
२९. जयजिनेन्द्र बोलना।
३०. दश धर्मों के नाम बोलना।
३१. दश धर्मों के नाम लिखना।
३२. ॐ नम: सिद्धेभ्य: — बोलना।
३३. चारित्तं खलु धम्मो — बोलना।
३४. मैं आत्मा हूँ — बोलना।
३५. सात तत्वों के नाम
३६. छः द्रव्यों के नाम

अक्षय-निधि

परमेष्ठी — जो परम पद में स्थित हैं।
अरहन्त — जो चार घातिया कर्मों का अभाव करते हैं।
सिद्ध — जो घातिया और अघातिया कर्मों का अभाव करते हैं।
आचार्य — जो मुनिसंघ के नायक होते हैं।
उपाध्याय — जो संघ में पठन-पाठन कराते हैं।
साधु — जो रत्नत्रय की आराधना करते हैं।
तीर्थंकर — जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं।
मङ्गल — जो पापों को गलाये एवं सच्चासुख उत्पन्न करे।
उत्तम — जो लोक में महान हो।
शरण — शरण सहारे को कहते हैं।
भगवान — जो वीतरागी एवं सर्वज्ञ हैं।
सच्चा देव — जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो।
जिनवाणी — सच्चे देव की वाणी को जिनवाणी कहते हैं।
सम्यग्दर्शन — सात तत्त्वों का श्रद्धान करना।
सम्यग्ज्ञान — वस्तु का जैसा स्वरूप है, वैसा जानना।
सम्यक्चारित्र — रागादि का परिहार करना अथवा आत्मलीनता।
रत्नत्रय — सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र
विश्व — छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।
द्रव्य — गुणों के समूह को द्रव्य कहते है।
गुण — द्रव्य की विशेषताओं को गुण कहते हैं।
पर्याय — द्रव्य या गुणों के परिणमन को पर्याय कहते हैं।
जीव द्रव्य — जिसमे ज्ञान-दर्शन पाया जाये।
पुद्गल द्रव्य — जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण पाया जाये।
धर्म द्रव्य — जो स्वयं चलते हुए जीव एव पुद्गलों के चलने में निमित्त हो।
अधर्म द्रव्य — जो गमनपूर्वक ठहरते हुए जीव एवं पुद्गलों के ठहरने में निमित्त हो।
आकाश द्रव्य — जो सब द्रव्यों के अवगाहन में निमित्त हो।
काल द्रव्य — जो सब द्रव्यों के परिणमन में निमित्त हो।
तत्त्व — जो वस्तु जैसी है, उसका भाव। ये सात होते हैं।

* खोजो और जानो *

नोट : इसमें 27 तीर्थक्षेत्रों के नाम दिये गये हैं उन्हें ढूंढकर अनुक्रमांक सहित रेखांकित करें एवं नीचे भी स्पष्ट लिखें।

समय सीमा —

आपका नाम ....

पिता/पति का नाम ....

क	अ	स	म्मे	द	शि	ख	र	रा	यु	म	चै
स	च	वो	गी	पु	ह	सि	वि	नि	ला	ठ	ण
गि	र	नै	गा	र	ता	तं	कैं	रि	न	ह	ह
र	शि	ढी	र	ख	ड	चा	ल	गि	च	सि	ड
गि	रि	प	ज	पु	ब	रा	र्व	क्ष	री	र	आ
र	द्ध	य	ल	भ	जा	व	त	ड़ा	प	ज	ल्ड
पु	ओ	ण्ड	रि	त्रि	ला	म्पि	क	ए	ठा	झ	को
म्पा	कु	गि	श्र	व	ण	बे	ल	गो।	ला	ट	द
च	ण	पा	वा	पु	र	ही	गह	जा	रा	गु	ज
द्रो	च	व	तो	कुव	र	रा	म	टे	क	इ	स
गी	तु	गी	मा	गी	इ	ट	कु	र	व	द्र	सि
रा	ति	जा	ग	न	ग	बा	आ	ग	ज	पं	चा

दशलक्षण

~~पर्युषण~~-पर्व.भूमिका

2 Dnd.

1. पर्व का अर्थ- अवसर, संधि, पोर या किन्हीं से जोड़ने वाला बिन्दु।
2. पर्व के भेद- दो 1. शाश्वत पर्व (प्राकृतिक पर्व)
   2. सामयिक या तात्कालिक पर्व - ये दो प्रकार के होते हैं :-
      1. व्यक्ति विशेष को आधार बनाकर- जैसे दीपावली, महावीर जयंती आदि। 05/09
      2. घटना विशेष को आधार बनाकर- रक्षाबन्धन, अक्षय तृतीया आदि।
   • लेकिन यह आत्मविशुद्धि का विशेष पर्व है अर्थात् आन्तरिक गन्दगी निकालने का पर्व है।
3. पर्व से लाभ। 1. बहिरंग सफाई- मंदिर, शास्त्र आदि की। (पर्व से पूर्व)
   2. अंतरंग सफाई- कषाय आदि दूर करने के मार्ग का परिचय, परिग्रह से अलिप्तता आदि। (पर्व के दौ
   3. जो पर्व में सीखेंगे, उसका जीवन भर पालन। (पर्व के बाद की सफाई)
4. पर्व की वैज्ञानिकता-
   1. योग शुद्धि- एक से चार (4) तक मन शुद्धि, पाँचवें (सत्य) से वचन शुद्धि और शेष से काय शुद्धि।
   2. रत्नत्रय प्राप्ति- एक से चार तक सम्यग्दर्शन (अनंतानुबन्धी के छूटने से), सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति सत्य जानने से, सम्यक्चारित्र की प्राप्ति शेष पाँच से।
   3. अणुव्रतों की प्राप्ति- अहिंसाणुव्रत के लिए - प्रथम चारों कषायों के कारण हिंसा होती है, सत्याणुव्रत के लिए अचौर्याणुव्रत के लिए संयम, तप व त्याग, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत के लिए आकिंचन्य व ब्रह्मचर्याणुव्रत के लिए ब्र
      अमंत्रमक्षरं नास्ति, नास्तिमूलमनौषधं। अयोग्यः पुरुषोनास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः॥
5. पर्यूषण पर्व कब मनायें ?
   • साल में 3 बार - भादों, माघ और चैत्र के महिने में शुक्ल पंचमी से लेकर चतुर्दशी तक।
6. मनाने का कारण ?
   • यदि कोई कषाय 6 महिने से अधिक समय तक रहे तो अनन्तानुबन्धी बन जाती है अतः 6 माह से पूर्व क्षमावाणी मनाने के लिए इस पर्व की व्यवस्था 3 बार की गई है।
7. पर्यूषण की पुरातनता व मनाने का कारण-
   • जब कोई नया काल शुरू होता है तो श्रावण वदी एकम से शुरू होता है तो जब प्रलय काल के बाद उत्सर्पिणी का प्रारम्भ श्रावण वदी एकम् से होगा तो 7-7 दिन की 7 प्रकार की वर्षा के उपरांत भादों सुदी पंचमी को सभी लोग बाहर आकर हर्ष मनायेंगे। यह उसी उत्सव का प्रतीक है। • इन दिनों व्यापार में मंदा रहता है।
8. पर्यूषण का अर्थ-
   • परि समन्तात् उष्यन्ते दह्यन्ते पापकर्माणि यस्मिन् तत् पर्यूषणम्।
   • पर्व वस्तुतः हमारी उदास टूटी हुयी जिन्दगी को उत्सव से जोड़कर चले आते हैं।
   • पर्यूषण पर्व आत्मालोचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मजागृति एवं आत्मोपलब्धि का महान पावन पर्व है।
9. धर्म की परिभाषा-

धम्मो वत्थुसहावो खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
रयणत्तयं च धम्मो जीवाणं रक्खणं धम्मो॥ -कार्तिकेयानुप्रेक्षा

धर्मः सर्व सुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः॥ -वीर

देशयामि समीचीनं धर्मं कर्म निवर्हणम्।
संसार दुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे॥ -रत्नकरण्डक श्रावकाचार

10. उपसंहार-
   • इतने वर्षों तक दशलक्षण पर्व मनाने के बाद भी अभी तक हममें किसी भी धर्म का प्रवेश नहीं हुआ इसका कारण किसी कवि ने कहा है-

धर्म के नाम पर हमको अभी मरना नहीं आता,
सुदर्शन की तरह हमको सूली चढ़ना नहीं आता।
मुसीबत की वजह बस एक केवल है यही चेतन,
हमें सुनना तो आता है मगर करना नहीं आता॥

• हर मील ए मंजिल पे इबादत ये लिखदे
नापाक इरादों की कोई मंजिल नहीं हो
• अपनी तस्वीर बनाओगे तो होगा एहसा
कितना दुश्वार है खुद को कोई चेहरा दे

   • अतः इस वर्ष हम पिछले वर्षों जैसे नहीं रहेंगे। इस वर्ष धर्म के बारे में सुनेंगे भी करेंगे भी।
   • चले चलो की चलना ही दलीले कामयाबी है। जो थककर बैठ जाते हैं, वो मंजिल पा नहीं सकते॥

1. परिभाषा-

1. [illegible] [illegible] [illegible] क्षमा [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] क्षमं
[illegible] [illegible] [illegible] क्षमं

- क्षमा अर्थात् सहिष्णुता, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ही अन्य धर्म [illegible] बसी हुई है।
- क्षमा के [illegible] पर ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो सकते हैं।

2. क्रोध के कारण- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] हो सकते हैं। [illegible] [illegible] [illegible], चिन्तन [illegible] गलतफहमी (समझने वाले की नासमझी)

यथा 1- उच्च [illegible] होना 2- [illegible] [illegible] [illegible] 5- [illegible] असहिष्णुता
3- आकांक्षाओं की पूर्ति होना 4- [illegible] [illegible] [illegible] 8- [illegible] का होना
6- असफलता 7- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

3. क्रोध से हानियाँ-

1- [illegible] हो जाता है 2- शरीर नष्ट हो जाता है 3- [illegible] [illegible] हो जाता है (द्वीपायन मुनि)
4- [illegible] रिश्ते [illegible] जाते 5- कोई क्रोधी को पसंद नहीं करता है 6- विवेक नष्ट हो जाता है (राजा ने तोते को [illegible])

4. क्रोध नियन्त्रण के उपाय-

1- तत्त्वज्ञान 2- चिंतधारा को बदलें 3- परिस्थिति का सही-सही विश्लेषण 4- उत्तर विलंब से देना [illegible]
5- [illegible] 6- [illegible] त्याग करें 7- उल्टी गिनती करें 8- पानी पी लें
9- [illegible] 10- प्यार से जीना शुरू करें 11- [illegible] से [illegible] हो जाये 12- क्रोध को बैर न बनने दें

5. क्रोध के 4 भेद- [illegible], अस्थि, [illegible], बेल के समान।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] नहीं है। [illegible]

6. [illegible] [illegible]

1- [illegible] [illegible]

- [illegible]पुर में आचार्य शांतिसागर ने [illegible] के लोगों को भड़काने वाले [illegible] के व्यक्ति को क्षमा कर दिया।
- कोल्हापुर में [illegible] मुनिराज द्वारा उन पर पत्थर फेंकने वाले बच्चों को क्षमा कर देना।
- [illegible] सागर मुनि [illegible] से विवाद, रात्रि में मंत्री मारने आये, कीलित हुये, प्रातः क्षमा।

2- गृहस्थों की क्षमा

- कृष्ण पर जरतकुमार ने तीर चलाया, शीघ्र भाग जाने को कहा।
- रामचन्द्र जी [illegible], [illegible] को क्षमा करना।
- श्रीपाल ने धवल सेठ को क्षमा किया।

3- अन्यमतों की क्षमा

- गौतम बुद्ध ने जहर खिलाने वाले तक को अमर बनाया।
- द्रौपदी द्वारा अपने पुत्रों की हत्या करने वाले अश्वत्थामा को क्षमा करना।
- तुकाराम का गन्ने वाला उदाहरण
- एकनाथ द्वारा पीक थूकने वाले व्यक्ति को क्षमा करना।

7- क्षमा के भेद- मजबूरी की क्षमा (ताकतवर के साथ), स्वार्थ प्रेरित (दुकानदार की), वास्तविक।

8- क्षमा वीरों का आभूषण है, कायरों का नहीं। उबलते पानी में चेहरा नहीं दिखता।

9. क्षमावाणी मनाने का ढंग दिखावा मात्र है, जिससे बैर है उससे तो माँगते नहीं, अन्य से नाटक करते हैं। क्षमा [illegible] [illegible] [illegible] प्रमुख गुण धैर्यशाली हो।—

क्रोध छोड़ने की चीज है।

दोहे

क्रोध भयंकर है बुरा, समझो इसको आप।
मिनटों में झट मारता, ये समझे माँ न बाप॥

दुश्मनी जमकर करें, पर इतनी गुंजाइश रखें।
जब कभी दोस्त बन जायें, तो शर्मिन्दा न हों॥

न शान जाती न रूतबा घट गया होता।
जो गुस्से से कहा तुमने, यदि हंसकर कहा होता॥

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दन्त हीन, विषहीन, विनीत सरल हो॥

दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रखूं मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे॥

मुझसे अगर जुदा भी हुए तुम तो क्या हुए।
रोना तो बस यही है कि लड़कर जुदा हुए॥

खींच पाओ तो मधुर व्यवहार से खींचो।
सींच पाओ तो हृदय की धार से सींचो॥
तलवार की जीत से तो हार अच्छी है।
जीत पाओ तो मनुष्य को प्यार से जीतो॥

नफरतों ने घेर रखा है, चारों तरफ से हमें।
जब ये दीवारें गिरेंगी, रास्ता हो जाएगा॥

नफरत से नफरत बढ़ती है और प्यार से प्यार पनपता है।
आग लगाने वालों को ये बात मगर समझाये कौन॥

दुश्मनी लाख सही खत्म न कीजे रिश्ते।
दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिये॥

उत्तम आर्जव

1. परिभाषा -
   - जो चिंतेइ ण वंकं ण कुणदि वंकं ण जंपदे वंकं ।
     ण य गोवदि णिय दोसं अज्जवधम्मो हवे तस्स ॥ - बारसाणुवेक्खा
   - योगस्यावक्रता आर्जवम् । - सर्वार्थसिद्धि
   - सरलता, सीधापन, ऋजुता, कथनी करनी में एकता, खुला हुआ जीवन, जटिलता का अभाव।
     (उदा. बालक की तरह - पापा ने कहा है कि वो घर पर नहीं हैं।)

2. आर्जव धर्म की उपयोगिता -
   - शीघ्र सफलता हेतु आवश्यक - रेल
   - सीधी लकड़ी ही उपयोगी होती है, भगवान सीधे मोक्ष जाते हैं। मनुष्य तीन प्रकार के -बेर, नारियल, अंगूर।
   - आत्मा का ध्यान एकाग्रता से - सूई धागा। पं. जगमोहनलाल जी- बच्चे को देख रहे थे, फिर एकाग्रता कैसी।
   - विश्वास। मनुष्य तीन प्रकार के - भोले, चालाक, चतुर।
   - श्रेष्ठता आत्मकथा पं. बनारसी दास, गांधी जी, राजेन्द्र प्रसाद, वर्णी जी
   - ठगा नहीं जाता - पं. टेडीराम जी कालेज में सामायिक, डाकू ने नहीं लूटा।
     बाबा भारती के घोड़े को डाकू खड्गसिंह ने वापिस लौटा दिया।

3. जीवन में माया का प्रवेश (माया के विभिन्न रूप) -
   प्रवृत्तिमूलक माया- क्रोध, मान तो दिखते हैं पर माया नहीं दिखती।
   छल, कपट, मुँह छिपाना पड़े, लज्जित होना पड़े, रिश्वत, कालाबाजारी, ठगी, लूट, मिलावट, राजनीति, धोखा, फरेब, अपने दो
   छिपाना, झूठे बही खाते, लड़का भगाने में, शादी में दिखावा, नकल, बिना टिकट यात्रा, विसंवाद, बोली बोल दी पर देते नहीं
   - काठ की हांडी एकबार ही चढ़ती है।
   - जब बालक, पालक और शासक हो जाता है तो चालाक हो जाता है।
   - आ. श्री के प्रवचन में एक महिला फिरोजाबाद में हुये पंच बार बताया- भाषा भी, दर्शन भी, प्रवचन भी, अच्छा [illegible]

4. माया करने से हानि -
   - अविश्वसनीयता (भेड़ चराने वाले ने कहा कि - बचाओ! शेर आ गया।)
   - छुपाये नहीं छुपती - स्वयं फंसना (केवल कुंये बेचे हैं, पानी नहीं बेचा है, तुरन्त पानी निकालो नहीं तो किराया [illegible])
   - पकड़ा जाता है - मन में शल्य (लालन को चोटियाँ बताय दूँगी) - आर्तध्यान तथा परिणामों में संक्लेश।
   - जो तुझे-कह गया, वही मुझे कह गया।
   - पानी का धन पानी में, नाक कटी बेईमानी में - दूधवाला
   - व्रती नहीं बन पाता - निःशल्यो व्रती। माया दो प्रकार की- श्रद्धामूलक (धर्म मार्ग में), प्रवृत्तिमूलक (लोक में)
   - यदि माया के 100 तरीके हैं तो पकड़े जाने के 101 तरीके हैं
   - बैरिस्टर चितरंजनदास ने ट्रेन में बहुत बन ब्लैक मेल करने वाली युवती को जेल भिजवाया।
   - सेठ का हार खोया-काजी ने पता लगाया- गधे की पूंछ पर कपूर लगाया था।

5. मायाचारी करने का फल -
   - माया तैर्यग्योनस्य।
   - योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः (गुणनिधि- मृदुमति मुनि की कथा)
   - परात्मनिंदाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य
   - स्त्रैणपण्डत्वं तैरश्च, नीच गोत्र पराभवाः। मायादोषेण लभ्यन्ते, पुंसां जन्मनि जन्मनि॥
   - संसार वृद्धि होती है - टी. वी. सीरियल जितने जटिल उतने लम्बे

6. आर्जव प्राप्ति के उपाय -
   - आ. श्री ठगा जाना बुरा नहीं, ठगना बुरा है।
   - कथनी करनी में एकपना
   - ईमानदारी, सादगी, सहृदयता और स्पष्टवादिता।
   - गुणों को छिपाना, दोषों को छपाना।
   - संसार की वस्तुओं को अपना मानना भी मायाचार है।
   - विद्यानंद जी (सचिवालय में) ओवर टाइम का पैसा लेते हो, तो कम काम करने के पैसे काटो भी।

7. सरलता के उदा. -

- सेठ जी, लोहा खरीदा, स्वर्ण छड़ मिली, मूर्ति बनवायी। प्रशस्ति अज्ञात के नाम से लिखवायी।
- पाणाशाह, रांगा खरीदा चांदी निकली, मन्दिर बनवाये।
- धर्मसागरजी, चांदी की माला, कंकड़ से माला फेरते थे
- धर्मसागरजी - पं. पन्नालाल जी 7 दिन तक हमारी कमियाँ बताये।

8. उपसंहार -

- कर्मों के बन्ध का विचारकर मन, वचन और काय रूप तीन शक्तियों का सदुपयोग से मोक्ष प्राप्त करें
- मन में हो सो वचन उचरिए, वचन होए सो तन सों करिए।
- संसारी होकर कहे कि मैं मायाचारी नहीं करता तो यह भी मायाचार है।

<u>दोहे</u>

- जीवन हो स्वच्छ साफ शुद्ध, कथनी-करनी में फेर न हो।
  मन में जो हो, कथन वही हो, कथन क्रिया में अंधेर न हो॥

- आदमी में जहर इतना भर गया है,
  विषधरों का वंश भी अब डर गया है।
  कल सुनोगे आदमी के काटने से,
  एक विषधर राह में ही मर गया है॥

- चेहरों पे चेहरे लगाये बैठें हैं लोग।
  जिसको भी देखो हजार बार देखो॥

- मा रब दोस्तों से बचाना मुझको।
  दुश्मनों से तो हम खुद निपट लेंगे॥

- तीर खाके जो देखा कमीनगाह की तरफ। कमीनगाह - दुश्मनों के छिपने का स्थान
  अपने ही दोस्तों की कतारें नजर पड़ी॥

- कितनों ने दिये धोखे ये मत पूछो।
  वरना अपनों के भी चेहरे उतर जायेंगे॥

उत्तम संयम

1. परिभाषा- वदसमिदि पालणाए, दंडच्चाएण इंदिय जएण।
परिणममाणस पुणो, संजम धम्मो हवे णियमा ॥- बारसाणुवेक्खा

अर्थ- व्रत समिति का पालन, मन वचन काय की प्रवृत्ति का त्याग, इन्द्रियजय, यह सब जिसके होते हैं उसके [illegible]
संयम से संयम धर्म होता है।

4. संयम के भेद -
"काय छहों प्रतिपाल पंचेन्द्रिय मन वश करो"
(1) इंद्रिय संयम (2) प्राणी संयम
(1) निश्चय संयम (आत्मरमणरूप) (2) व्यवहार संयम (सकल संयम, देशसंयम रूप)
सकल संयम- व्रत, समिति, गुप्ति रूप। देश संयम-11 प्रतिमा रूप।

5. संयम की दुर्लभता- दुर्लभ है निगोद से थावर अरु त्रस गति पानी।
[illegible] काया को सुरपति तरसे सो दुर्लभ प्राणी ॥
सुरग नरक पशुगति में नाहीं। तिर्यंचों में भी देश संयम है, मात्र मनुष्य पुरुष ही उत्तम संयम धारण कर स[illegible]

6. संयम की आवश्यकता-
- इसके बिना मोक्षमार्ग नहीं।
- जिस बिना नहीं जिनराज सीझे....।
- जो संसार विषै सुख होता ......।
- वरं व्रतैः पदं दैवं.. ....।
- सम्यग्ज्ञानं क्रिया [illegible]।
- भुक्तोज्झिता ....।

7. करने योग्य कार्य- बाहर के पट बंद कर, अं[illegible]
मुनि बनने की भावना रखें, जब तक गृहस्थ हैं, [illegible] अभ्यास करें। प्रतिमा का अभ्यास करें। सब संभव है, मन बनाया और कार्य हुआ। शुद्ध आहार विहार व्यापार [illegible]

8. वर्तमान समय में संयम पालन अति दुर्लभ-
हर वस्तु में अशुद्धता, विदेशी वस्तुओं की भरमार, अश्लीलता का तांडव, अर्थ कमाने की होड़, शरीर से प्रेम, नैसेसिटी/लक्जरी साधुओं में भी शिथिलाचार।

9. निश्चय संयम-
- अविद्याभिदुरं ज्योतिः ....।
- होय निःशल्य अंगक [illegible]..........।
- संयम्य करणग्राम..........................।

10. संयम का फल-
- रावण ने अनंतबल मुनिराज से नियम लिया था कि स्त्री की सम्मति के बिना भोग नहीं करूंगा। इसी के प्रभा[illegible] नरक में जाकर भी सम्यग्दृष्टि हुआ।
- महावीर भगवान् का जीव (20वाँ पूर्व भव-पुरुरवा भील) जीव कौआ के मांस का त्याग करने से आगामी काल में तीर्थंकर महावीर हुआ।

11. उपसंहार-
- संयम नहीं तो कुछ नहीं उदाहरण-सुकुमाल मुनि।
- ऐसा न सोचें कि संयम धारण में कष्ट है अभी क्यों धारण करें। मोक्ष तो जब होना है, तब ही होगा, अभी से शरीर को कष्ट क्यों [illegible]
- जैसे पानी के बिना कुआ, बिंदी के बिना माथा, शिखर के बिना मंदिर, कलफ के बिना कुर्ता व्यर्थ है, उसी तरह [illegible] के बिना यह पर्याय व्यर्थ है।

उदाहरण-

- यमपाल चांडाल के व्रत का प्रभाव।
- बिना फल वाले पेड़ का व्रत देखना।
- अर्जुनलाल सेठी- जेल में मंदिर।
- नियम तोड़ा- सड़क पर पानी छिड़क रहा था।
- रूस का जार, खाने की गलती करता था।
- कथा फिल्म देखी। सोचा- अभी देख लें बाद में प्रायश्चित ले लेंगे।
- लश्कर की सेठानी, 100 साड़ी तो छोड़ी, पर त्याग न हुआ।
- पू. अभयसागर जी के पिता जी, शक्कर नहीं छोड़ी। पूज्य आचार्य श्री ने कहा- नहीं माने। हार्टअटैक हो गया।
- कश्मीर चन्द जी का नौकर- 2किलो बर्फी खा गया और मर गया।
- मूर्तिकार नाहटा, जैन मूर्तियों की कीमत बहुत लेता है, कहता है दिगम्बर प्रतिमा के दाम नहीं चलता है।
- गांधी जी के तीन बंदरों से तो एक बंदर ही अच्छा है, जो मन को वश में करता है।

दोहे

- अंतर विषय वासना वर्ते, बाहर लोक लाज भय भारी।
  तातैं परम दिगम्बर मुद्रा, धर नहिं सकें, दीन संसारी॥
- प्रभु सुमरन को आलसी, भोजन को तैयार।
  ऐसे पापी नरन को, बार बार धिक्कार॥
- लाख बात की बात सुनोगे, सद्गुरु कहते हे प्राणी।
  बगैर संयम का जीवन है, कागज फूल कहें ज्ञानी॥
- गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता है।
  औषध के बिना आराम नहीं होता है।
  दुनिया भोगकर ज्ञान को जान करने वालों।
  संयम के बिना कल्याण नहीं होता है॥
- उपवन की शोभा पत्थरों से नहीं पौधों से होती है।
  पौधों की शोभा, पत्तों से नहीं, फूलों से होती है।
  मंदिर की शोभा मार्बल से नहीं, भावों से होती है।
  जीवन की शोभा चर्चा से नहीं, संयम से होती है॥
- जीवन का क्या अर्थ यहां है, क्यों कंचन सा तन पाया है।
  क्या तुम इसको समझ चुके हो, क्यों नर भूतल पर आया है॥
- घुटनों के बल चलते चलते, पांव खड़े हो जाते हैं।
  छोटे छोटे नियम एक दिन, बहुत बड़े हो जाते हैं॥
- मन वश करना कठिन है, मन है सबका राय।
  जो जन मन को वश करे, संयम सही सहाय॥
- चेहरे को सजाने की इतनी क्या जरूरत है।
  सादगी भी कयामत की अदा होती है॥
- भोजनं कुरु दुर्बुद्धे, का चिन्ता मरणे तव।
  गृहे च प्राप्यसि जन्म, परान्नं न पुनः पुनः॥

(1) प्रायश्चित्त - आर्यिका विशुद्धमति माता जी के पैर में कांच घुस गया। परन्तु प्रायश्चित्त मिला।

(2) विनय - 4 ज्ञान दर्शन चारित्र उपचार। मुनि समयसागरजी ने अपने से छोटे मुनिराजों को कटंगी से नमोस्तु भिजवाया।

(3) वैयावृत्य - श्री कृष्ण मुनियों की वैयावृत्ति खूब करते थे, तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। परन्तु जिस वैद्य ने ... बनाई थी उसकी प्रशंसा न होने पर वह दुःखी हुआ, मरकर बंदर बना।

(4) स्वाध्याय - 5 प्रकार का होता है वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय, धर्मोपदेश। पं जवाहर लाल जी भीण्डर 1... स्वाध्याय करते थे। परम तप है।

(5) व्युत्सर्ग - ममत्व त्याग।

(6) ध्यान-च. चक्र. आ. शान्तिसागर महाराज निरंतर णमोकार मंत्र का जाप करते थे। जीवन में 18 करोड़ जप कि...

6\. उपसंहार- तन मिला है तप करो। करो कर्म का नाश। रवि शशि से भी अधिक है तुममें दिव्य प्रकाश।

जब तक गृहस्थी में हैं- पर्व के दिनों में एकाशन या उपवास करें, रस छोड़कर भोजन करने का अभ्यास डालें, सा... की विनय करें- मन लगाकर णमोकार मंत्र आदि का जप करें, आत्मकल्याण के लिये क्रम से स्वाध्याय करें। पर्व ... दिनों में ब्रह्मचर्य से रहें। आर्त रौद्र ध्यान से बचें। किसी लाभ की दृष्टि से उपवास आदि न करें। उपवास के दिन ... या शरीर पर न लगावें। महिलायें घरका काम न कर दिनभर शुभोपयोग में मन लगायें। गृहस्थ का तप पर्व में उपवास ... रात्रि भोजन त्याग एवं जल छानकर पीना है। तप करने वालों की ही सल्लेखना होती है। अन्यमत वालों के तप आत्म... कल्याणकारी नहीं।

दोहे

- तप करते यौवन गयो, द्रव्य गयो मुनिदान।
  प्राण गये संन्यास में, तीनों गये न जान॥

- आज गुरुओं के बिना भी ज्ञान हो रहा है।
  अभिरुचि के बिना भी अभिमान हो रहा है।
  ... बीत गया सारा जीवन ...।
  और कुछ ... हो रहा है।

- दिनकर हक है जलने वालों का,
  पथ पर हक है चलने वालों का।
  दीपक पर अधिकार है सभी का,
  ... पर हक है जलने वालों का॥

- कर्मों का आना रुके, पिछले निर्जर होय।
  आतम शुद्ध जिससे मिले वह उत्तम तप होय॥

- विषय चाह से तप करे, इन्द्री वश में नाहिं।
  झूठा तप इसको कहें, भ्रमत फिरें भव माहिं॥

- ... जो ... धारेई।
  तं सव्वं बाल तवं, बालवदं बिंति सव्वण्हू॥

सरस शब्दों से ही काव्य की रचना होती है।
सहन करने से ही कर्मों की निर्जरा होती है।
बिना तप के सिद्धि नहीं मिलती
तप से ही कर्मों की निर्जरा होती है॥

ग्रीष्म ताप के बिना पानी बरस नहीं सकता।
अग्नि में तपे बिना स्वर्ण शुद्ध नहीं हो सकता।

- भोजन आधा पेट कर, दुगना पानी पी...
  तिगुना श्रम चौगुना हंसी, वर्ष सवा सौ जी...

- सर्वेषामेव जीवानां, हिंसायां विरतिस्तथा।
  शान्त्या हि सह दुःखानां, सहनं तप उच्यते॥

- धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।

- मानुष्यं दुर्लभं लोके, पाण्डित्यमति दुर्लभम्।
  अर्हच्छासनमत्यंतं, तपस्त्रैलोक्य दुर्लभम्॥

(I) आत्मा का स्वरूप
स्वसंवेदन ....

(II) आत्मध्यान का उपाय
पंचेन्द्रियकरणग्राम ...

(III) प्रायश्चित्त
...

उत्तम त्याग धर्म

1. परिभाषा - णिव्वेगतियं भावइ, मोहं चइऊण सव्व दव्वेसु।
   जो तस्स हवे चागो, इदि भणिदं जिणवरिंदेहिं ॥ बा. अणु
   संयतस्य योग्यं ज्ञानादि दानं त्यागः । सर्वार्थसिद्धि
   अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् : तत्त्वार्थसूत्र
2. मुनि का त्याग धर्म- विषयकषाय का त्याग करना, बाह्य-आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग करना, ज्ञान दान एवं अभय दान देना।
3. गृहस्थ का त्याग धर्म- बाह्य पदार्थों में इष्ट-अनिष्ट कल्पना का त्याग करना, चार प्रकार का दान देना, इस लोक-पर लोक में, पुण्य फल प्राप्ति के लिये धन का व्यय करना।
4. पात्र के तीन भेद-सुपात्र, कुपात्र, अपात्र
   सुपात्र के 3 भेद- उत्तम, मध्यम, जघन्य। कुपात्र व अपात्र की परिभाषा
5. चारों दानों में ज्ञान दान श्रेष्ठ है। ज्ञान दान कैसे करें।
6. तीन प्रकार के पात्रों को दान देने का फल। तीर्थंकर को प्रथम आहार देने वाला उसी भव, तीसरे भव में मोक्ष।
7. दाता का लक्षण एवं 7 गुण। दान के 5 दोष - अनादर, कालातिक्रम, अनमनापन, कठोर वचन, बाद में पश्चाताप।
8. दान के योग्य सात क्षेत्र-जिनबिम्ब, जिनालय, तीर्थयात्रा, प्रतिष्ठा, पात्रदान, पूजा, शास्त्र लेखन।
9. दान के लिये धन न कमाये। त्यागाय श्रेयसे- - - - - कितना भाग दान करें 1/4, 1/6, 1/10
10. दान व त्याग में अंतर-कुछ रखकर देना दान है। सब देना त्याग है।
11. दान के 3 भेद- सात्विक, राजसिक, तामसिक।
12. वर्तमान में दान देने के ढंग में विकृतियां - दबाव से, अन्य को देखकर, बोलकर भी न देना, [illegible] देना, [illegible] मालिका में कहा है।
13. निश्चय त्याग- [illegible] ..... पादूण आसवाणं।

उदाहरण - [illegible] दीवान। [illegible] फांसी लगी। पहले सामायिक की।
सेठ हुकुम चंद। मेरी संपत्ति 70 लाख- [illegible] मैंने दान दी।

(आहार दान) भामण्डल 14 माह जंगल में [illegible] दान दिया था।
भामाशाह की पत्नि- सारे जेवर लाकर दे दिये।

(अभयदान) सेठ ने फकीरचंद जी पर कर्ज दीक्षा समय छोड़ दिया था।
मदनमोहन मालवीय। राजा दरभंगा : 50 हजार के 5 लाख कर दिये।

(औषधि दान) सुशील जी वैद्य
पं. जवाहर लाल जी [illegible]- आगरा [illegible] के अवसर पर 1 लाख रुपये वापिस कर दिये।

(ज्ञानदान) ग्वाले ने मुनि को शास्त्र दिया। आचार्य कुंदकुंद बना।
ईश्वर चंद विद्यासागर-मकान नीलाम वालो का कर्ज चुका दिया।
कवि ओलिवर स्मिथ। दवा देते थे। गरीब देखकर पुड़िया में सोने की गिन्नी दी।
सम्मेदशिखर पर। साहू जी की बोली 1.11। 1.10 वाले का स्वागत। उसने 1.10 का चैक दिया। मैं तो संकल्प कर चुका हूं।

- बिन मांगे दे दूध बराबर, मांगे दे सो पानी। वह देना है खून बराबर, जा में खेंचा तानी।	- बिना दान के द्रव्य औ, बिन मंत्री को राज। कुछ दिन में ही देख लो, रावण जैसो हाल॥
- जो करता है बांटकर, भोजन का उपयोग। कभी न व्यापें भूख का, उसे भयंकर रोग।	- कृपणेन समो दाता, न भूतो न भविष्यति। अस्पृशन्नेव वित्तानि, यः परेभ्यः प्रयच्छति।
- जो दयालु करते सदा, दीन जनों को दान। सदा प्रशंसा कंठ में, उनका नाम महान्।	- गृहकर्मणापि निचितं कर्म विमार्ष्टि खलु गृह विमुक्तानाम्। अतिथीनां प्रतिपूजा, रुधिरमलं धावते वारि॥

उत्तम आकिंचन्य धर्म

1. परिभाषा – होऊण य णिस्संगो, णियभावं णिग्गहित्तु सुहदुहदं।
णिद्दंदेण दु वट्टदि, अणयारो तस्स किंचण्हं। बारसाणुवेक्खा
अर्थात् जो मुनि सर्व प्रकार के परिग्रहों से रहित होकर और सुख-दुःख के देने वाले कर्मजनित निज भावों को रोककर निर्द्वंदता से अर्थात् निश्चिन्तता से आचरण करता है, उसके आकिंचन्य धर्म होता है।
– न अस्य किंचन अस्ति, इति आकिंचनः। तस्य भावः आकिंचन्यम्। सर्वार्थसिद्धि
– मूर्च्छा परिग्रहः। तत्त्वार्थसूत्र

2. मुनि का आकिंचन्य धर्म- 24 प्रकार के परिग्रह का त्याग रूप। पीछी, कमण्डलु, शास्त्र तथा शरीर में भी निर्ममत्व।
गृहस्थ का आकिंचन्य धर्म- परिग्रह में तृष्णा का अभाव, यथाशक्ति घटाना। परिग्रह दुःख ही है।

3. परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होने के कारण- अन्य के उपकरणों को देखने से, उनमें उपयोग लगाने से, उनमें मूर्च्छा भाव रखने तथा लोभ कर्म की उदीरणा होने से।

4. परिग्रह से बचने के लिये भावनायें- मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय विषय रागद्वेष वर्जनानि पंच।
एषु...हं धर्मदारा:--------------। बध्यते मुच्यते जीव:----------। दुर्ध्यानाम्रक्षेण------।

5. ममत्व छूटने पर दशा की विचित्रता-
- अग्नि परीक्षा के बाद रामचन्द्र जी के समझाने पर भी सीता जी का न मानना।
- ममत्व नष्ट होने जाने पर, हनुमान जी का घर परिवार छोड़ देना।
- बा.ब्र. शांतिसागर जी महाराज गृहस्थ अवस्था में दुकान पर हाथ से रुपये न छूते थे।
- लालच की दीवानी- रानियों को त्यागा, पर ममत्व न छोड़ा था।
- आचार्य धर्म सागर जी - चाँदी की माला को इन्कार करना। चौकीदारी कौन करेगा।
- क्षु. प्रशान्त सागर जी- चाँदी का कटोरा, निवेदन करने पर तुरन्त छोड़ दिया।

6. - निष्परिग्रहता का आनंद- छहढाला की कथा।
- हिन्दुओं में भी दारिद्रय प्रश्न- पैसे नहीं, भोजन नहीं, ऊपर भी आसमान, पत्थर नहीं पैदल, फिर यात्रा पूरी करते हैं।

7. - ममता परिणाम ही दुःख है- पं. केवलचंद का सपना।
- तपस्वी मुनि तथा श्रेणिक महाराज का गणधर देव से प्रश्न करना।
- मकान में आग, बिक चुका है, प्रसन्नता, नहीं बिका है फिर से रोना।
- ग्रह 10 हैं- दसवां ग्रह परिग्रह है। यह न हो तो कुछ नहीं है।
- चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बे परवाह, जिनको कछू नहिं चाहिये, वे शाहनपति शाह।

8. एक लंगोटी होने से, ऐलक महाराज सोलहवें स्वर्ग से ऊपर नहीं जा पाते हैं।
फांस तनक सी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुःख भाले।

9. वर्तमान की साधुसंस्था- उत्तम आकिंचन्य धर्म- परिग्रह का सद्भाव, मोबाइल, संस्था से संबंध, अपना क्षेत्र बनवाना, बड़ी-बड़ी पत्रिकायें, चातुर्मास राशि पहले से तय करना आदि।

10. हम क्या करें- न्याय से व्यापार, प्राप्त धन में संतोष, अपने से छोटों को देखें, साधु संगति करें, कर्म फल में विश्वास, त्याग परिग्रह श्रेष्ठ मानें।

11. निश्चय आकिंचन्य धर्म - अहमिक्को खलु सुद्धो दंसण णाण मइओ सदा रूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणु मित्तं पि।। समयसार
एगो मे सासदो अप्पा, णाण दंसण लक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा॥
कम्मे णोकम्मम्हि य, अहमिदि अहकं च कम्म णोकम्मं।
जा ऐसा खलु बुद्धी, अप्पडिबुद्धो हवदि ताव।।
पण्णाए घित्तव्वो, जो णादा सो अहं तु णिच्छयदो।
अवसेसा जे भावा, ते मज्झ परेत्ति णादव्वा॥

उत्तम आकिंचन्य धर्म

1. परिभाषा - होऊण य णिस्संगो, णियभाव णिग्गहित्तु सुहदुहदं।
णिद्दंदेण दु वट्टदि, अणयारो तस्स किंचण्हं। बारसाणुवेक्खा
अर्थात् जो मुनि सर्व प्रकार के परिग्रहों से रहित होकर और सुख-दुःख के देने वाले कर्मजनित निज भ
को रोककर निर्द्वंदता से अर्थात् निश्चिन्तता से आचरण करता है, उसके आकिंचन्य धर्म होता है।
- न अस्य किंचन अस्ति, इति आकिंचन्य:। तस्य भाव: आकिंचन्यम्। सर्वार्थसिद्धि
- मूर्च्छा परिग्रहः। तत्त्वार्थसूत्र

2. मुनि का आकिंचन्य धर्म- 24 प्रकार के परिग्रहों का त्याग रूप। पीछी, कमण्डलु, शास्त्र तथा शरीर में भी निर्ममत्व भ
गृहस्थ का आकिंचन्य धर्म- परिग्रह में तृष्णा का अभाव, यथाशक्ति घटाना। परिग्रह दुःख ही है।

3. परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होने के कारण- अन्य के उपकरणों के देखने से, उनमें उपयोग लगाने से, उनमें मूर्च्छा भाव रखने
तथा लोभ कर्म की उदीरणा होने से।

4. परिग्रह से बचने के लिये भावनायें- मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय विषय रागद्वेष वर्जनानि पंच।
वपुर्गृहं धनं दारा:-------------। बध्यते मुच्यते जीव:---------। दुर्ध्यानासुरक्ष्येण------।

5. ममत्व छूटने पर दशा की विचित्रता-
- अग्नि परीक्षा के बाद रामचन्द्र जी के समझाने पर भी सीता जी का न मानना।
- ममत्व नष्ट होने जाने पर, हनुमान जी का घर परिवार छोड़ देना।
- चा.च. शांतिसागर जी महाराज गृहस्थ अवस्था में दुकान पर हाथ से रुपये न छूते थे।
- लश्कर की सेठानी- साड़ियों को त्यागा, पर ममत्व न छोड़ा था।
- आचार्य धर्म सागर जी - चाँदी की माला को इन्कार करना। चौकीदारी कौन करेगा।
- क्षु. प्रगल्भ सागर जी- चाँदी का कटोरा, निवेदन करने पर तुरन्त छोड़ दिया।

6. - निष्परिग्रहता का आनंद- ब्रह्मगुलाल की कथा।
- हिन्दुओं में भी दारिद्रय व्रत- पैसे नहीं, भोजन नहीं, कपड़े भी अन्य के, चप्पल नहीं पैदल, फिर यात्रा पूरी करते हैं।

7. - ममता परिणाम ही दुःख है- पं. केवलचंद की चप्पलें।
- तपस्वी मुनि तथा श्रेणिक महाराज का गणधर देव से प्रश्न करना।
- मकान में आग, बिक चुका है, प्रसन्नता, नहीं बिका है फिर से रोना।
- ग्रह 10 हैं- दसवां ग्रह परिग्रह है। यह न हो तो कुछ नहीं है।
- चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ बे परवाह, जिन्हें कछू नहिं चाहिये, वे शाहनपति शाह।

8. एक लंगोटी होने से, ऐलक महाराज सोलहवें स्वर्ग से ऊपर नहीं जा पाते हैं।
फांस तनक सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुःख भाले।

9. वर्तमान की साधुसंस्था- उत्तम आकिंचन्य धर्म-परिग्रह का सद्भाव, मोबाइल, संस्था से संबंध, अपना क्षेत्र बनवाना, बड़ी-बड़ी पत्रिकायें, चातुर्मास राशि पहले से तय करना आदि।

10. हम क्या करें- न्याय से व्यापार, प्राप्त धन में संतोष, अपने से छोटों को देखें, साधु संगति करें, कर्म फल में विश्वास, त्याग परिग्रह श्रेष्ठ मानें।

11. निश्चय आकिंचन्य धर्म - अहमिक्को खलु सुद्धो दंसण णाण मइयो सदा रूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणु मित्तं पि।। समयसार
एगो मे सासदो अप्पा, णाण दंसण लक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा।।
कम्मे णोकम्मम्हि य, अहमिदि अहकं च कम्म णोकम्म।
जा ऐसा खलु बुद्धी, अप्पडिबुद्धो हवदि ताव।।
पण्णाए घित्तव्वो, जो चेदा सो अहं तु णिच्छयदो।
अवसेसा जे भावा, ते मज्झ परेति णायव्वा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

1. परिभाषा - सव्वंगं पेच्छंतो, इत्थीणं तासु मुयदि दुब्भावं।

सो मम्हचेर भावं, सुक्कदि खलु दुद्धरं धरदि॥ बारसाणुवेक्खा

अर्थात् - जो पुण्यात्मा, स्त्रियों के सुन्दर अंगों को देखकर भी उनमें रागद्वेष बुरे परिणाम करना छोड़ दे दुद्धर ब्रह्मचर्य को धारण करता है।

अंक स्थानं भवेच्छीलं, शून्य स्थानं व्रतादिकम्।

अंक स्थाने पुनर्नष्टे, सर्व शून्य व्रतादिकम्॥

सव्वेसिं इत्थीणं, जो अहिलासं ण कुव्वदे णाणी।

मण वाया काएण य, बंभवई सो हवे सदओ॥

2. मुनि का ब्रह्मचर्य महाव्रत- 18000 भेद, मन-वचन-काय x कृत-कारित-अनुमोदना से त्याग। आत्मरमण।

3. गृहस्थ का ब्रह्मचर्य- स्वदार संतोष, सिनेमा-टी.वी. से बचना, गंदे साहित्य से बचना, पर्व में पूर्ण ब्रह्मचर्य।

4. ब्रह्मचर्य के लिये 5 भावना- स्त्रीरागकथाश्रवण------------।

5. शील की नौ बाढ़-पाँच भावना, स्त्री संगति त्याग, पेट भरकर भोजन त्याग, स्त्री की सेज पर बैठने का त्याग, स्त्रियों में बातचीत करने का त्याग।

6. ब्रह्मचर्य की दुर्लभता- सहैं बान वर्षा बहु सूरे, टिकें न नैन बान लखि कूरे।

7. अब्रह्म से हानि- शरीर नाश, आयुनाश, कर्मबंध, रोगों से ग्रसता, धननाश। ચારિત્રનાશ, બુદ્ધિનાશ,

8. करने योग्य 4 कार्य- स्वस्थ मानसिकता, इन्द्रियविजय, खोटे निमित्तों से बचें, अच्छे मित्र व संगति। नहीं करने यो सबके साथ टी. वी. देखना, गंदा साहित्य व पत्रिकायें पढ़ना, गलत संगति।

9. वर्तमान दशा- अखबारों में नित्य गंदी घटनायें, सहशिक्षा (अधिकांश का शील नष्ट), गंदा भोजन, पत्रिका अश्लीलता, पाश्चात्य वेषभूषा, त्यागी का भी बचना मुश्किल, लवमैरिज से धर्मनाश।

10. निश्चय ब्रह्मचर्य एदम्हि रदो णिच्चं । आत्मानुभव निष्पत्ति- । मा सिद्ध या जरह------

11. उदाहरण - वर्णी जीवन गाथा, द्रौपदी का प्रकरण

- कीचक-द्रौपदी-भीम। पिटाई लगने पर लाज आना, मुनि बनना, मोक्ष प्राप्ति।
- शुकदेव तथा उनके बूढ़े पिता की कथा।
- जम्बूस्वामी का पूर्व भव, शिवकुमार की जबरन शादी करना, 12 वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य।
- टार्किन्स के राजा की काम पिपासा, मारा गया, राज्य छिना। .... —— -
- एडवर्ड अष्टम ने सिंपसन से शादी करने को राज्य ठुकराया।
- वेश्या सेवी सेठ ने छल से सोमा को ब्याहा, वेश्या ने अपनी पुत्री के भविष्य के लिये सांप भेजा, पुष्प-माला बना।
- राम के भाई भरत, पिछले भव में जबरन 3000 कन्याओं से विवाह, 64000 वर्ष तक ब्रह्मचर्य, इस भी 150 रानी थी पर राग न था।
- विशल्या का प्रभाव शादी होते ही खत्म हो गया था।
- धवल सेठ ने रयणमंजूषा पर नियत खराब की। देवों ने मारा। बाद में नरक गया। -
- वर्णी जी की धर्म माता- चिरोंजाबाई की कथा।
- बम्बई के सेठ, बहिन विधवा हो गई, खुद की शादी हो गई पर पूर्ण संयम। पहले बहिन की शा पत्नी परिचय।
- शिवाजी ने परस्त्री का न छुआ। (મુઝે આપ જૈસા બચ્ચા ચાહિએ)
- वसंतगुप्त बौद्ध भिक्षु, कोशावेश्या, 1000 हीरे लाया, कोशा ने नाली में फेंक दिये।
- सौतेली माँ तिष्यरक्षित बेटे पर रीझी। कुणाल ने समझाया। झूठा पत्र लिख आंखे निकाली।

विभिन्न दोहे

धरती पर सोता हूँ, आसमान ओढ़ता हूँ,
देह की माटी से अमृत निचोड़ता हूँ।
इसलिये वैभव से नहीं, विराग से नाता जोड़ता हूँ।

मैं हूँ कौन कहाँ से आया, किस दर पै है जाना।
इस दुनियाँ में क्या है मेरा, किसे साथ ले जाना।

छाया माया एक सी, घटत बढ़त दिन रैन।
जो या का सरणा गहे, सो ना पावे चैन।

ज्ञान सरुपी मैं अहो, और कछु मैं नाहिं।
जब ऐसा अनुभव करे, आकिंचन कहांहिं।

नहीं चाहे त्रैलोक्य को, अन्य वस्तु जो कोय।
ध्यावे देखे आत्म निज, परम अकिंचन होय।

तन ही जब मेरा नहीं, नाहिं अन्य मम कोय।
फिर हूँ माने आपनी, आकिंचन नहीं होय।

तीर्थंकर होते सभी, आकिंचन को धार।
इसके बिन होवे नहीं, कोई भव से पार।

न संति बाह्या मम केचनार्था, भवामि तेषां न कदाचनाहं।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र मुक्त्यै:॥
यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्धं, तस्यास्ति किं पुत्र कलत्रमित्रै:।
पृथक्कृते चर्मणि रोम कूपा, कुतो हि तिष्ठति शरीर मध्ये।

चाहत है धन होय किसी विध, तो सब काज सरे जियराजी।
गेह चिनाय करूं गहना कछु, ब्याह सुतासुत बांटिये भाजी॥
चिंतत यों दिन जायें चले, जम आन अचानक देत दगा जी।
खेलत खेल खिलाड़ि गये, रह जाय रुपी शतरंज की बाजी॥

कोई सोया हो जैसे डूबती किश्ती के तख्ते पर।
अगर कुछ है तो बस, यही दुनियां की हकीकत है॥

तन की दिगंबरता से बेहतर है नहीं कोई लिबास।
यह वो जामा है जिसका न उल्टा है न सीधा है॥

इस दर्द भरी दुनियां में कौन किसी के आंसू पोंछेगा।
जिसको देखो उसी का दामन भीगा लगता है॥

गुल चढ़ायेंगे लहद पर जिनसे ये उम्मीद थीं।
वो भी पत्थर रख गये सीने पे दफनाने के बाद॥

जिसका जहाँ में एक भी दोस्त या दुश्मन नहीं।
उस शहंशाहे जहां को रोज के सौ सौ सलाम॥

इलाही वह नजर दे, आंशियां को कफस समझूं।
न कम निगाही दे, कफस को आंशियां समझूं॥

नयनों से देखे जगत, नैना देखत नाहिं।
ताहिं देख जो देखता, नयन झरोखे मांहिं॥

क्षमावाणी पर्व

1. क्षमावाणी पर्व क्यों?

दशलक्षण पर्व में आयी विशुद्धि के कारण, पुराने गलत प्रसंगों को भूलने के लिए।

2. क्षमावाणी पर्व वर्ष में कितनी बार और क्यों?

वर्ष में 3 बार। दशलक्षण के बाद। ताकि कषाय अनंतानुबंधी न बन जाये।

3. कैसे मनायें-

जिनके साथ दूरी बन गई है, उस दूरी को समाप्त करें।

स्वयं आगे आयें। अन्य की चिन्ता न करके अपनी आत्म विशुद्धि करें।

4. आजकल कैसे मनाई जाती है-

सब स्थानों पर अलग अलग तरीका। पर वास्तविकता का अभाव। कार्ड छपाकर डाल देते हैं, बल्कि का जो
जो पत्र आते है उनको भी देखने की फुर्सत नहीं, मात्र [illegible] अप देख लेते हैं। क्षमा मांगने के समय, जिनसे मां
उनसे नहीं मांगते। सब कोरम पूरा किया जाता है। आगरे का ढंग श्रेष्ठ था। यह तो विश्व मैत्री का पर्व है।
बिना शर्त क्षमा मांगनी चाहिये।

5. क्षमा के उदाहरण-

- रफी अहमद किदवई- मित्र ने शादी पर नहीं बुलाया। बिना निमंत्रण पहुँच गये।
- तिरुवल्लुवर- कपड़े फाड़ना।
- सिंहोदर को वज्रकर्ण ने क्षमा किया था।
- काशी का राजा दीर्घायु, ब्रह्मदत्त ने हराया, गर्भ के बालक को क्षमा।
- सत्यघोष अगंधन सर्प- राजकुमार को काटा, मरना मंजूर पर जहर नहीं चूसा।

6.
- क्षमा जब है जब बुरा, बुरा सा लगने लगे।
- क्रोध करना अर्थात किसी की गलती की सजा अपने को देना।
- विराधकः क्षमी इन्ती ......!
- अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यं चेतनं ततः।
  क्व रुष्यामि, क्व तुष्यामि, मध्यस्थोऽहं भवाम्यतः।
- तीर्थंकर पूज्य कि जो खोटे सहै क्यों नहिं जीयरा।
- उत्तम क्षमा जहां मन होई, अंतर बाहिर शत्रु न कोई।
- क्षमा रूपी चिंतामणि रहती जिसके पास।
  तीन लोक की सम्पदा, बनती है फिर दास॥
- क्षमावाणी पर्व पर सब मन की घुण्डी खोल दो।
  एक बार सब प्रेम से, भगवान् की जय बोल दो॥

22 मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ि, कहते जिसे धर्मों का मूल।
बिन इसके तो देव दुःखी हैं, इसके सहित नरक अनुकूल॥
सम्यग्दर्शन

23 मोक्षपुरी प्रभु ने पाई, प्रभु हुआ परिपूर्ण ज्ञानी।
उस दिन का तुम नाम बताओ, नहीं रहोगे तुम अज्ञानी॥
दीपावली

24 ऐसे शाश्वतपर्व बताओ, महिने में दो दो आते।
संयम भाव जगाते, साधक के मन भाते॥
अष्टमी चतुर्दशी

25 मेरा मस्तक सबसे ऊंचा, बोलो क्या है मेरा नाम।
मैं रावण को नरक ले गया, सब लोगों में मेरा धाम॥
मान

26 चार अक्षर का मेरा नाम, छह खण्डों में मेरा धाम।
पूर्वार्द्ध में रह रह जाता, मुझको गाते दौलतराम॥
छहढाला

27 छह अक्षर का मेरा नाम, समवशरण में मेरा धाम।
सबको मुक्तिमार्ग बताता, कितना सुन्दर मेरा काम॥
दिव्यध्वनि

28 दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूं मुक्ति के काम।
प्रथम कटे तो रम बन जाऊं, अंत कटे तो धर जाऊं॥
धर्म

29 तीन अक्षर का मेरा नाम, अंत कटे तो मैं ही सब हूं।
मुझमें लोकालोक झलकते, मैं हूं अनन्तगुणों का धाम।
सर्वज्ञ

30 दो अक्षर का मेरा नाम, पाप भाईयों का हूं मैं बाप।
मुझको जो अपनाता है, वह नरकों में जाता है॥
पाप

31 चार अक्षर का मेरा नाम, चेतन से मुझको क्या काम।
फिर भी साथ सदा रहता हूं, सारे जग में मेरा धाम॥
पुद्गल

32 दो अक्षर का मेरा नाम, बिना आहार ही आराम।
नाम अमर है इसा मेरा, अमृत पीने का है काम॥
देव

33 सब लोगों का माल हड़पना, सबको मैं पहुंचाती जेल।
सबकी बदनामी करवाती, बतलाओ ये कैसा खेल॥
चोरी

10. मैं हूँ सब पापों का बाप, नाम बताए मेरा आप।
सारा जग मेरे आधीन, सब कुछ है फिर भी मैं दीन॥

लोभ

11. सब पापी मेरे घर आते, सात घरों में दुःख पाते।
तिल-तिल करे देह के खण्ड, भूख प्यास भी लगे प्रचण्ड॥

नरक

12. मान नहीं है अज्ञान नहीं है, सुख या दुःख की याद नहीं है।
पांच भाई हैं मेरे जग में, जीव शब्द भी रहता मुझसे॥

अजीव

13. जो जीवों को दुःख देता है, वह मुझको धारण करता है।
मैं ले जाती नरकों बीच, मुझमें है पापों का बीज॥

हिंसा

14. मैं सबको कसकर दुःख देती, सबकी सुख शान्ति हर लेती।
मैं हूँ आकुलता की माता, मेरा नाम किसे है आता॥

कषाय

15. दो अक्षर का मेरा नाम, रहता हूँ मैं सुख के धाम।
काम धाम से हूँ बेकार, नाम बताए मेरा आप॥

सिद्ध

16. तीन अक्षर का मेरा नाम, संसार बढ़ाना मेरा काम।
कर्मों का मैं द्वार बनाता, बोलो भाई मेरा नाम॥ आस्रव

17. चार अक्षर का मेरा नाम, चार घातकर आया हूँ।
चार साथ में लाया हूँ, फिर भी पूज्य कहलाया हूँ॥

अरहन्त

18. छियासठ दिन तक मौन रहे, प्रभु अवसर का इंतजार किया।
इन्द्रभूति गणधर आया तो, जीवों का उद्धार किया॥

महावीर स्वामी

19. दो अक्षर का मेरा नाम, सारे जग के आता काम।
मुख्य गौण करके मैं जानूं, जिनागम में मेरा आधार॥

नय

20. सीमंधर के पास गए जो, उनसे अनुभव शास्त्र रचे जो।
पंचम युग के देव कहाए, उनका नाम आप बताए॥

कुन्दकुन्द आचार्य

21. ऐसा शाश्वत पर्व बताओ, वर्ष में तीन बार आता।
उत्तम सहित चारित्र जगाता, श्रावक मुनि के मन भाता॥

दशलक्षण

Notes →

तीर्थक्षेत्रों की वंदना

1. हाथी का पर्यायवाची - गज - गजपंथा
2. महाभारत के समय के एक गुरु - द्रोण - द्रोणगिरी
3. एक धातु का नाम - सोना - सोनागिर
4. चन्द्रमा का अन्य नाम - चन्द्र
5. 100 - 48 - 52 - बावनगजा
6. एक परमेष्ठि - सिद्ध - सिद्धाचल
7. आधे का आधा - पाव - पावापुर
8. भोजन का पर्यायवाची - आहार - आहार जी
9. एक उदुम्बर फल - बड़ - बड़वानी
10. द्रव्य में अनन्त होते हैं - गुण - गुणावा
11. एक राशि - कुम्भ - कुम्भोज बाहुबली
12. एक प्रकार के जीव - मुक्त - मुक्तागिरी
13. ज्योतिष देवों का इन्द्र - चन्द्र - चन्द्रागिरी

Notes

ज्ञान पहेली

1. शब्दों का वह अमरदीप है, सार प्रवचनों का अनमोल।
मोक्ष प्रकाशक मोक्षमार्ग को, इष्ट उपदेश का क्या है तोल॥
भक्तामर, प्रवचनसार, मोक्षमार्ग प्र., इष्टोपदेश

2. एक अक्षर का मेरा नाम, सम्पूर्ण जिनागम का मैं सार।
पंच प्रभु का मैं हूं धाम, बोलो क्या है मेरा नाम॥
ॐ

3. पांच अक्षर का मेरा नाम, शुद्धातम का मुझमें धाम।
कुन्दकुन्द का मुझमें नाम, बोलो क्या है मेरा नाम॥
समयसार

4. तीन अक्षर का मेरा नाम, आता हूं सबके काम।

Notes

मुझसे बड़ा न जग में कोई, जग बनाओ मेरा कोई॥
आकाश

5. चार अक्षर का मेरा नाम, ज्ञानी मनि में मेरा धाम।
सच्ची श्रद्धा मेरा काम, सारा जग मुझसे परेशान॥
सिद्धान्त

6. पांच अक्षर का मेरा नाम, जानूं जग के सब पदार्थ।
मैं रहता हूं अपने अंदर, फिर भी दुनिया मेरे अंदर॥
केवलज्ञान

7. एक पुरुष जिनवर ने देखा, पांव पसारे खड़ा हुआ।
हाथ कमर पर रखे हुए, काल अनन्त से खड़ा हुआ॥
लोक

8. आठ अक्षर का मेरा नाम, मैं शास्त्रों का मुझमें धाम।
मैं सारा तो अपूर्ण हूं, पर कहलाता पूर्ण हूं॥
मोक्षमार्ग प्रकाशक

9. चार अक्षर का मेरा नाम, मुझको क्या दुनिया से काम।
ज्ञान ध्यान ही मेरा व्यापार, मुक्ति पाने को तैयार।
दिखने को लगता कंगाल, फिर भी हूं मैं मालामाल॥
मुनिराज

(10) मरकत व्याधि रोग से, लिया मुनिधर्म छोड़
पुन मुनि पद धारिके, मिले मोक्ष सजोर

— समंत भद्राचार्य

(11) अंतमुहूर्त मे किया, घाति कर्म का नाश
पाया केवलज्ञान वीर, लोकालोक प्रकाश

— भरत जी

(12) श्रुतदाताजी जीव जो, और तिनकी [illegible] तीन
आत्मानुकूल क्रिया करें पावें निजगुण मान

— [illegible]

कौन बनेगा विद्वान

→ द्वितिय राउन्ड
→ वर्णानुसार उत्तर

"अ वर्ण"

(1) आकाश द्रव्य का 1 भेद - अलोकाकाश
(2) 14 गुणस्थानों में से एक - अविरति
(3) तत्वार्थ राजवार्तिक के रचियता - अकलंक देव
(4) जिसमें मोक्ष जाने की पात्रता न हो - अभव्य
(5) मिथ्यात्व के पाँच प्रकारों में से एक - अज्ञान
(6) महावीर भगवान का एक उपनाम - अतिवीर
(7) सा॰ गुणों में से एक गुण - अगुरुलघुत्व

"च वर्ण"

(1) जीव द्रव्य का एक विशेष गुण - चेतना
(2) वासुपूज्य भगवान की मोक्षस्थली - चंपापुर
(3) 8 प्रातिहार्यों में से एक - चमर
(4) जीव द्रव्य का पर्यायवाची - चेतन
(5) महावीर भगवान की मौसी - चंदनबाला
(6) 8 वें तीर्थंकर का चिन्ह - चकवा
(7) ज्योतिषी देवों का एक विमान - चन्द्र

ज वर्ण

(1) परस्पर अभिवादन में बोला जाने वाला पद - जय जिनेन्द्र
(2) समयसार ग्रंथ के एक टीकाकार - जयसेन
(3) षट्खण्डागम ग्रंथ की टीका का नाम - जयधवला
(4) स्थावर जीवों का भेद - जलकायिक
(5) क्षत्रचूड़ामणि ग्रंथ के नायक - जीवंधरकुमार

* नियम *

(1) इसमे पाँच टीमे बनाई जायेंगी।

(2) सभा मे कुछ प्रश्न पूछे जायेंगे जो उत्तर देगा वही व्यक्ति लिया जायेगा।

(3) टीम मे एक छात्र (बच्चा) एक महिला और एक पुरुष इन तीनों को लिया जायेगा।

(4) पहले Round मे तीन प्रश्न पूछे जायेगें पहला गलत होने पर कदाचित दूसरा पूछा जा सकता है। परन्तु दूसरा गलत होने पर तीसरा प्रश्न नही पूछा जायेगा।

(5) दर्शकों को जवाब नही देना है। उनमे भी प्रश्न पूछे जाये

(6) पहली बार गलत आने पर दोबारा नही दूसरी बार का उत्तर सही नही माना जायेगा।

(7) निर्णायक का निर्णय ही सर्वमान्य होगा।

(8) प्रत्येक प्रश्न पाँच नम्बर का होगा और टोटल 45

जिन	—	जिसने मोह-राग-द्वेष और इन्द्रियों को जीत लिया है।
भव्य	—	जिसमें मोक्ष जाने की पात्रता हो, उसे भव्य कहते हैं।
अभव्य	—	जिसमें मोक्ष जाने की पात्रता नहीं हो, वह अभव्य है।
मिथ्यात्व	—	उलटी मान्यता को मिथ्यात्व कहते हैं।
क्षमा	—	क्रोध का अभाव क्षमा है।
अनुजीवी गुण	—	भावस्वरूपी गुण को अनुजीवी गुण कहते हैं।
प्रतिजीवी गुण	—	वस्तु के अभावस्वरूपी धर्म को प्रतिजीवी गुण कहते हैं।
द्रव्यसंग्रह	—	आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा लिखित ग्रन्थ।
समयसार	—	आचार्य कुन्दकुन्द का प्रसिद्ध अध्यात्म ग्रन्थ।
प्रवचनसार	—	आचार्य कुन्दकुन्द का प्रसिद्ध अध्यात्म ग्रन्थ।
मोक्षमार्गप्रकाशक	—	आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ।
आप्तमीमांसा	—	आचार्य समन्तभद्र का प्रसिद्ध न्याय ग्रन्थ।
मोक्षशास्त्र	—	आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित संस्कृत भाषा का प्रथम जैन ग्रन्थ।
छहढाला	—	दौलतरामजी द्वारा लिखित महान ग्रन्थ।
पञ्चपरमागम	—	समयसार, नियमसार, प्रवचनसार, अष्टपाहुड़ और पञ्चास्तिकाय।
गिरनारजी	—	यहाँ से नेमिनाथ भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी।
सम्मेदशिखर	—	यहाँ से बीस तीर्थंकरों ने मुक्ति प्राप्त की थी।
पावापुर	—	यहाँ से महावीर भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी।
कैलाशगिरि	—	यहाँ से आदिनाथ भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी।
चम्पापुर	—	यहाँ से वासुपूज्य भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी।
दीपावली	—	इस दिन भगवान महावीर को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी।
रक्षाबन्धन	—	इस दिन मुनि विष्णुकुमार ने सात सौ मुनिराजों की रक्षा की थी।
अक्षय तृतीया	—	इस मुनि ऋषभदेव को सर्वप्रथम आहार प्राप्त हुआ था।
श्रुतपञ्चमी	—	इस दिन प्रथम श्रुतस्कन्ध की रचना पूर्ण हुई थी।
अष्टाह्निका	—	इन दिनों नन्दीश्वरद्वीप के जिनालयों की विशेष पूजन की जाती है।
अर्द्धकथानक	—	पण्डित बनारसीदासजी द्वारा लिखित हिन्दीसाहित्य की प्रथम आत्मकथा।
अयोध्या	—	चौबीसों तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि।
निमित्त	—	कार्य की उत्पत्ति में जिस पर अनुकूल होने का आरोप आये।
कर्म	—	आठ होते है।

SHOT ON REDMI NOTE5 PRO
DUAL CAMERA

नोट : प्रश्नों के उत्तर दिये हुये बॉक्स में ही लिखें।

(1) श्री

(2) टो

(3) ड

(4) र

(5) म

(6) ल

(7) हि

(8) ग

(9) म्ब

(10) र

(11) जे

(12) न

(13) सि

(14) द्धा

(15) त

(16) ग

(17) हा

(18) वि

(19) द्या

(20) ल

(21) य

(22) ज

(23) य

(24) पु

(25) र

ON REDMI NOTE 5 PRO
L CAMERA

ज्ञान पहेली

(1) पंचम तीर्थंकर का नाम
(2) मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रंथ के रचनाकार
(3) आ. कुन्दकुन्ददेव द्वारा रचित एक ग्रंथ
(4) सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र का पर्यायवाची
(5) आ. कुन्दकुन्ददेव की एक रचना
(6) एक समुद्र का नाम तथा नमक का पर्यायवाची
(7) वर्तमान काल के प्रथम तीर्थंकर का नाम
(8) जिनके बिना दिव्यध्वनि नहीं खिरती
(9) जैन धर्म का एक भेद
(10) नय का प्रमुख भेद
(11) जो जिन की आज्ञा को माने सो
(12) जिनागम जिसके माध्यम से जाने जाते है
(13) जिनके आठ गुण होते हैं
(14) जिसका अन्त सिद्ध तक हो उसे कहते हैं
(15) जैनधर्म का प्रमुख सिद्धांत
(16) डॉ. हुकमचन्दजी द्वारा रचित एक ग्रंथ
(17) उत्तम को कहते हैं
(18) श्रुत का पर्यायवाची शब्द
(19) एक पंडितजी का नाम
(20) अरहंत परमात्मा
(21) ------ चाह दावानल दह्यो
(22) जन्म का एक प्रकार
(23) ज्ञान का एक भेद
(24) जहाँ 700 मुनिराजों पर उपसर्ग हुआ
(25) चरणानुयोग का एक ग्रंथ

नाम ----------------------------

पता ----------------------------

जैन सुडोकु-3

	दान							
उपभोग	दर्शन					चारित्र	लाभ	
				भोग	सम्यक्त्व			उपभोग
ज्ञान			वीर्य	सम्यक्त्व			चारित्र	
	भोग	दान	लाभ		उपभोग	वीर्य	सम्यक्त्व	
	उपभोग				चारित्र			दान
दान			सम्यक्त्व	उपभोग				
	वीर्य	चारित्र					उपभोग	ज्ञान
							दर्शन	

नियम – 1. वर्ग में 9 लब्धियों के नाम ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ
3X3 के बॉक्स में सम्यक्त्व से वीर्य तक कोई भी नाम पुनः नहीं आ
2. आधा भरा हुआ स्वीकार नहीं किया जायेगा।

शब्द रचना पहेली

नाम -

(1) आ.......पु.......ण

(2) प......मे.......ठी

(3) ......यं.....र.....न

(4) गु.....स्था......

(5) चै......ल......

(6) के..... ...ज्ञा......

(7) ष.....आ... ....क

(8) ....क्ष.....र्ग......का...... ......

(9) टो..........म..........

(10) गं.......ह.......म.......भा.. ....

(11) त.... ....सू.........

(12) पं.......ल्या.....क

(13) प्र......य.....म........र्त.....

(14) अ......त......... चा.......

(15).........न........णी

(16) कु.........न्दा........

(17) पु... .....र्थ... ....पा......

(18) पं.... ...क्रा......संग्र......

(19) का.... ......या.......प्रे......

(20) छ....ढा.....

(21) नि..........म........र

(22) श्लो.... ...र्ति.....

(23) स..... ....सि......

(24) स.....क् ....र्शन

(25) अ........रा........त

नोट : इसमें आपको रिक्त स्थानों को भरना है ।

SHOT ON REDMI NOTE5 PRO
DUAL CAMERA

जैन सुडोकु-2

		अजीव	पाप		पुण्य	बंध		
पाप			अजीव		मोक्ष			संवर
	निर्जरा			संवर			मोक्ष	
		निर्जरा	जीव		संवर	आस्रव		
	जीव						संवर	
		मोक्ष	पुण्य		अजीव	निर्जरा		
	अजीव			आस्रव			बंध	
आस्रव			संवर		बंध			मोक्ष
		पाप	निर्जरा		जीव	संवर		

नियम – 1. वर्ग में 9 पदार्थों के नाम ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ
3X3 के बॉक्स में जीव से पाप तक कोई भी नाम पुनः नहीं आये
2. आधा भरा हुआ स्वीकार नहीं किया जायेगा।

N REDMI NOTE5 PRO
CAMERA

जैन सुडोकु–1

		आस्रव		पाप		पुण्य		
निर्जरा	पुण्य		संवर		जीव		मोक्ष	बंध
मोक्ष	आस्रव		बंध		अजीव		संवर	पाप
जीव								अजीव
			मोक्ष		पुण्य		बंध	जीव
पाप	मोक्ष		अजीव		आस्रव		जीव	निर्जरा
		बंध		मोक्ष		अजीव		

नियम – 1. वर्ग में 9 पदार्थों के नाम ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3X3 के बॉक्स में जीव से पाप तक कोई भी नाम पुनः नहीं आये।

2. आधा भरा हुआ स्वीकार नहीं किया जायेगा।

EDMI NOTES PRO

अक्षर पहेली

नाम : ......

पिता श्री....

नोट :- समस्त प्रश्नों के उत्तर उनके आगे लिखे अक्षर से प्रारंभ होंगे -

अ. कुन्दकुन्दाचार्य के पंच परमागम में से एक -.....................

आ. एक राजा का नाम -.....................

इ. तीर्थंकर बालक को सर्वप्रथम गोद में कौन लेता है -.....................

ई. मतिज्ञान का एक भेद - ....

उ. निर्विचिकित्सा अंग में प्रसिद्ध - ....

ऊ. एक सिद्ध क्षेत्र - ....

ए. शुक्ल ध्यान का एक भेद - ....

ऐ. 16 स्वप्नों में से एक - ....

ओ. तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होती है -.....................

औ. भावकर्म के उदय से होने वाला भाव - ....

अं. साधु किस पात्र में आहार लेते है - ....

क. जिसने जिन प्रतिमा का अनादर किया था - ....

ख. चन्द्रनखा के पति का नाम - ....

ग. भगवान अजितनाथ के चिन्ह का पर्यायवाची - ....

घ. काल का एक प्रमाण - ....

च. जो संख्या में 64 होते हैं -.....................

छ. भगवान का एक प्रातिहार्य - ....

ज. जो मथुरा से मोक्ष गये - ....

झ. जर, जोरु और जमीन क्या कराते हैं - ....

त. श्रावक का एक आवश्यक - ....

थ. तिर्यंच गति के जीव का एक भेद - ....

द. रानी मनोवती प्रसिद्ध हुई - ....

ध. आचार्य गुणभद्र द्वारा रचित एक चरित्र ग्रंथ - ....

न. प्रमाण द्वारा गृहीत वस्तु का एक अंश ग्राही - ....

प. जिसका आदि, मध्य और अंत न होने पर भी अस्तित्व है - ....

ब. पुण्य और पाप दोनों से होता हैं - ....

भ. जिसमें सम्यग्दर्शन प्रकट करने की योग्यता हो - ....

म. वर्तमान में जिनका शासन चल रहा हैं - ....

य. साधु का पर्यायवाची - ....

र. नन्दीश्वर द्वीप में ये 32 है - ....

ल. जो आठवे नारायण थे - ....

व. एक संहनन - ....

श. तीर्थंकर चक्रवर्ती आदि प्रसिद्ध पुरुष कहलाते है -.....................

ष. इसकी उत्पत्ति द्वादशांग श्रुतस्कंध से हुई - ....

स. पं बनारसीदास की अद्वितीय आध्यात्मिक रचना - ....

ह हरि क्षेत्र की एक प्रसिद्ध नदी - ....

पर्यूषण पर्व के पावन प्रसंग पर चौबीस तीर्थंकरों पर आधारित

तीर्थंकर ज्ञान प्रतियोगिता

1) भगवान आदिनाथ के समवशरण में प्रथम श्रोता कौन थे ? ....
2) भगवान श्री अजितनाथ के वैराग्य का क्या कारण था ? ....
3) भगवान श्री सम्भवनाथ के जन्म का स्थान बताइए। ....
4) श्री अभिनन्दननाथ भगवान ने कितने वर्षों तक तप किया था ? ....
5) श्री सुमतिनाथ भगवान को केवलज्ञान कौनसी तिथि को हुआ था ? ....
6) श्री पद्मप्रभु भगवान की माता का नाम बताइए। ....
7) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान ने कौनसे नगर में दीक्षा ली थी ? ....
8) श्री चन्द्रप्रभ भगवान के शरीर का वर्ण बताइए। ....
9) श्री पुष्पदन्त भगवान की ऊँचाई कितनी थी ? ....
10) भगवान शीतलानाथ कौनसे वंश में हुए थे ? ....
11) भगवान श्रेयांसनाथ की पूर्व पर्याय का क्या नाम था ? ....
12) भगवान वासुपूज्य के पाँचों कल्याणक एक ही स्थान पर कहाँ हुए हैं ? ....
13) श्री विमलनाथ भगवान के दीक्षावृक्ष का नाम बताइए। ....
14) भगवान अनन्तनाथ के जन्मस्थान अयोध्या नगरी का दूसरा नाम बताइए। ....
15) धर्मनाथ भगवान का प्रथम आहार किस नगर में हुआ था ? ....
16) भगवान शान्तिनाथ कौनसे नम्बर के कामदेव व चक्रवर्ती हुए थे ? ....
17) श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकर कहाँ से च्युत होकर माता के गर्भ में आये थे ? ....
18) स्वयं चक्रवर्ती अरहनाथ भगवान के काल में कौन दूसरे चक्रवर्ती हुए ? ....
19) श्री मल्लिनाथ भगवान ने सर्वप्रथम किस वस्तु का आहार लिया था ? ....
20) भगवान मुनिसुव्रत का जन्म किस वंश में हुआ था ? ....
21) श्री नमिनाथ भगवान के शरीर की ऊँचाई कितनी थी ? ....
22) श्री नेमिनाथ भगवान के समवशरण के प्रथम श्रोता कौन थे ? ....
23) भगवान पार्श्वनाथ के कितने गणधर हुए थे ? ....
24) श्री भगवान महावीर के कितने अनुबद्ध केवली थे ? ....

नियम –

1. सभी प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में ही होने चाहिए।
2. प्रश्नों के उत्तर आगे दी हुई जगह में लिखिए।

नाम ....

EDMI NOTES PRO

अक्षर प्रतियोगिता

नाम ....

....

अ	एक आचार्य का नाम	----------------
आ	सात तत्त्वों में से एक तत्त्व	----------------
इ	तीर्थंकर बालक को जो गोद में लेती है	----------------
ई	मतिज्ञान का एक भेद	----------------
उ	आठ अंग में से एक अंग	----------------
ऊ	एक सिद्ध क्षेत्र का नाम	----------------
ए	शुक्लध्यान का एक भेद	----------------
ऐ	16 स्वप्नों में से एक सपना	----------------
ओ	तीर्थंकर परमात्मा की दिव्यध्वनि होती है	----------------
औ	एक शरीर का प्रकार	----------------
अं	एक कर्म का नाम	----------------
क	पार्श्वनाथ पर उपसर्ग किया था वह	----------------
ख	आकाश का पर्यायवाची शब्द	----------------
ग	जम्बूद्वीप की एक नदी का नाम	----------------
घ	एक वात वलय तथा एक समुद्र का नाम	----------------
च	चार अनुयोगों में से एक	----------------
छ	4 से 12 गुणस्थान तक के जीव होते हैं	----------------
ज	पद्मश्री, कनकश्री, विनयश्री, रूपश्री जिनकी पत्नियाँ थी	----------------
झ	परम गुरू अर सत ज्ञान.........	----------------
त	एक नरकभूमि का नाम	----------------
थ	तिर्यच गति के जीव का एक भेद	----------------
द	सोलह कारण भावनाओं में से एक भावना	----------------
ध	एक आचार्य का नाम	----------------
न	जो पदार्थ के एक अंग को ग्रहण करता है	----------------
प	एक ग्रन्थ का नाम	----------------
फ	नरेन्द्र ....सुरेन्द्रं अधिपं	----------------
ब	सात तत्त्वों में से एक तत्त्व का नाम	----------------
भ	सभी जीव स्वभाव से	----------------
म	जम्बूस्वामी जहाँ से मोक्ष पधारे, उस भूमि का नाम	----------------
य	सम्यक का एक पर्यायवाची	----------------
र	सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को एक अक्षर मे कहा जाये तो	----------------
ल	एक समुद्र का नाम	----------------
व	मूलाचार ग्रन्थ के रचियता का नाम	----------------
श	नो कर्म जिसे कहा जाता है वह	----------------
ष	एक ग्रन्थ का नाम	----------------
स	निर्जरा का एक प्रकार	----------------
ह	जिनके गिरने से शिला टूट कर चकनाचूर हो गई	----------------
क्ष	जो रक्षा करते हैं तथा जिनका दशहरा पर्व होता है	----------------

नोट : सभी के उत्तर आगे दिये गये अक्षर से ही लिखना है।

EDMI NOTES PRO

प्रश्नों के उत्तर नीचे दिये हुए बॉक्स में लिखिए। अक्षर साफ एवं स्पष्ट होने चाहिए।

1		23	
2		24	
3		25	
4		26	
5		27	
6		28	
7		29	
8		30	
9		31	
10		32	
11		33	
12		34	
13		35	
14		36	
15		37	
16		38	
17		39	
18		40	
19		41	
20		42	
21		43	
22		44	

नियम :

प्रतियोगिता में उम्र का बन्धन नहीं है।

एक व्यक्ति अपने नाम से एक ही प्रतियोगिता पत्र भर सकता है।

निर्णायक मण्डल का अन्तिम निर्णय मान्य होगा।

धर्मपहेली प्रतियोगिता

नाम ______________________________

पता ______________________________

निम्नलिखित प्रतियोगिता के प्रथम २२ प्रश्नों के जवाब अक्षरों में एवं २२ प्रश्नों के जवाब संख्या में लिखिए।

1. आठों कर्मों में सबसे दुःखदायी कर्म कौनसा है ?
2. किस समुद्र का जल दूध के समान है ?
3. नरकगति में कौनसा संस्थान होता है ?
4. णमोकार मंत्र सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में लिखा गया ?
5. आठवीं पृथ्वी का नाम क्या है ?
6. वर्तमान में सीमन्धर स्वामी कौनसी नगरी में विराजमान हैं ?
7. उपसर्ग केवली के रूप में कौनसे तीर्थंकर प्रसिद्ध हैं ?
8. गोम्मटसार ग्रन्थ के रचयिता का क्या नाम है ?
9. एक ऐसे पंडित विद्वान आगे [illegible] भगवान होनेवाले [illegible]
10. महारानी प्रियकारिणी के पति का नाम क्या था ?
11. श्री जम्बूस्वामी कहाँ से मोक्ष पधारे ?
12. [illegible] जिनको [illegible] ?
13. आचार्य वादीभसिंहसूरि कृत क्षत्रचूड़ामणि ग्रन्थ में किसका चरित्र-चित्रण है ?
14. [illegible] किस कर्म का उदाहरण है ?
15. वस्तु के अनेकान्त स्वरूप को बतानेवाली पद्धति को क्या कहते हैं ?
16. राजा [illegible] की वे दो सन्तानें जो जुड़वा भाई-बहन थे ?
17. जो तीसरे भव तक [illegible] का काम करते हैं ?
18. आचार्य कुन्दकुन्द पूर्वभव में क्या थे ?
19. वह कौनसी नारी है, जिसका श्रीकृष्ण ने हरण किया था ?
20. सुमेरु पर्वत की जड़ कौनसी पृथ्वी है ?
21. सबसे बड़ी अवगाहना कौनसे जीव की होती है ?
22. एक ऐसा अभक्ष्य पदार्थ "जो राजा के राज में नहीं, माली के बाग में नहीं, खाओ तो स्वाद नहीं, फोड़ो तो गुठली नहीं ?"
23. मुनिराज का आहार कितने ग्रासप्रमाण होता है ?
24. मनुष्य गति में सम्यग्दर्शन की पात्रता कितनी उम्र के बाद आती है ?
25. अज्ञानवादियों के कितने मत प्रचलित हैं ?
26. भगवान के शरीर में कितने लक्षण चिह्न होते हैं ?
27. णमोकार मन्त्र में कितने अक्षर होते हैं ?
28. पानी की एक बूँद में कितने जीव होते हैं ?
29. कितने परमेष्ठी कपड़े पहनते हैं ?
30. अ, इ, उ, ऋ, लृ के उच्चारण बराबर कौनसा गुणस्थान का काल है ?
31. सिद्धशिला का विस्तार कितना है ?
32. रुद्र कितने होते हैं ?
33. पुरुषार्थ कितने प्रकार के होते हैं ?
34. अरहंत भगवान कितने दोषों से रहित होते हैं ?
35. मध्यलोक में कितने अकृत्रिम जिनालय हैं ?
36. सर्वार्थसिद्धि के देवों की आयु कितनी होती है ?
37. [illegible] पुष्प कौनसे काल में होते हैं ?
38. स्वाध्याय के कितने भेद होते हैं ?
39. कर्मों की कितनी प्रकृतियाँ होती हैं ?
40. रज्जु कितनी होती है ?
41. कितने सिद्ध संसार में वापस जन्म लेंगे ?
42. सीमन्धर भगवान की आयु कितनी है
43. ढाई द्वीप में कितनी कर्मभूमियाँ हैं ?
44. निगोदिया जीव का एक श्वास में कितनी बार जन्म-मरण होता है ?

सभी आत्माओं में ज्ञान है, पर धन्य हैं वे आत्मा जिनके ज्ञान में आत्मा है।

घर-घर चर्चा रहे धर्म की।

अभिवादन में जय जिनेन्द्र ही बोलिए।

हाँ का ना, ना का हाँ

१. इस प्रतियोगिता में सभी भाग ले सकते हैं।
२. प्रतियोगियों के नाम पर्ची के माध्यम से निकाले जायेंगे।
३. प्रतियोगियों को पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे –

प्रथम तीन प्रश्नों के उत्तर सही देने हैं और सिर गलत हिलाना है।

अन्तिम दो प्रश्नों के उत्तर गलत देने हैं और सिर सही हिलाना है।

निर्णायक का निर्णय ही सर्वमान्य या अन्तिम निर्णय होगा।

१. परमेष्ठी पाँच होते हैं।
२. कषाय चार होती हैं।
३. रात में नहीं खाना चाहिए।
४. नरक गति अच्छी है।
५. तीर्थंकर २४ होते हैं।
६. तत्व चार होते हैं।
७. देवताओं की मूछें होती हैं।
८. अनुयोग चार होते हैं।
९. हम गधे भी हुए हैं।
१०. तुम जैन हो।
११. अनछना जल पीना चाहिए।
१२. इन्द्रियाँ पाँच होती हैं।
१३. तुम अज्ञानी हो।
१४. आज उत्तम क्षमा का दिन है।
१५. तुमने आज नहाया है।
१६. तुम मनुष्य हो।
१७. विदेह क्षेत्र में २० तीर्थंकर होते हैं।
१८. कोई किसी का कर्ता-धर्ता नहीं है।
१९. हम अनादि काल से मिथ्यादृष्टि हैं।
२०. पाण्डव पाँच होते हैं।
२१. पंचकल्याणक पाँच होते हैं।
२२. तुम बहुत पापी नहीं हो।

		गो शाश्वत सुख....।
शाश्वत	—	लहर–लहर लहराए .....।
लहर	—	केवली के वाङ्मय गये....।
वाङ्मय	—	चरणों में आ पड़ा हूँ.....।
द्वादशांग वाणी	—	वीर हिमाचल तें निकसी....।
वीर	—	तिहारे ध्यान की मूरत....।
ध्यान	—	आतम को हित....।
सुख	--	ऐसे साधु सुगुरु....।
साधु	—	मिथ्यातम नासवे को.....।
मिथ्यातम	—	मैं ज्ञानानन्द.....।
ज्ञानानन्द	—	

३. मुखड़ा–अन्तरा राउण्ड

इस राउण्ड में हम आपके लिये एक मुखड़ा या अन्तरा बोलेंगे। यदि हम मुखड़ा बोलते हैं तो आपको अन्तरा बोलना है एवं यदि हम अन्तरा बोलते हैं तो मुखड़ा बोलना है।

१. आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग्य कि हम आये पूजन को।

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती जिनेन्द्र झलक मुनिराज झलकती।

भावना अपनी का फल हम पा गये।। मुखड़ा।।

३. हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये, भावना अपनी का फल हम पा गये।। मुखड़ा।।

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में, किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।।

ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये, हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।। अं०।।

४. भावे भजो भावे भजो जिनराया, चौबीस जिनवर पाया जी पाया।। मुखड़ा।

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व पद वन्दन।।

आतम में अपनापन करके मिथ्यातम को दूर भगाया, जिनवर भजूँ आतम लखूँ, जिनराया।। अं०।।

५. पंखिड़ा ओऽऽऽ पंखिड़ा... पंखिड़ा रे उड़ के जाओ कुण्डलपुर में

तीर्थङ्कर जन्मे आज भरतक्षेत्र में।। मुखड़ा।।

माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने, उनका फल बताया सिद्धार्थराज ने।

तेजवान बुद्धिमान लाल होयेगा, ज्ञानवान तीर्थङ्कर बाल होयेगा।। अं०।।

६. लिया प्रभु अवतार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।

त्रिशला नन्दकुमार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार। मुखड़ा।

आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।

खुशियाँ अपरम्पार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।। अं०।।

७. परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।

आनन्द उल्लसित होता है, होऽऽऽ सम्यग्दर्शन होता है।। मुखड़ा।

वास जिनका उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।

वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमें।। अं०।।

(७) धन्य-धन्य जिनवाणी माता

१८. मान लीजिए आप नरक में हैं उस समय आप क्या कर रहे होंगे बोलकर बताइये।

१९. मान लीजिए आपके मित्र ने आपको तमाचा मार दिया तब आप उसके प्रति कैसा व्यवहार करेंगे।

२०. मन्दिर जी में भक्ति संध्या पर आपके भाव नृत्य करने के हुए तो आप कैसे करेंगे।

२१. मन्दिर जी में महिलाएं घर की चर्चा किस प्रकार करती हैं बताइए।

२२. आपकी मम्मी ने आपको मारा तो आप किस प्रकार रोयेंगे।

२३. आपके गांव में मुनिराज आए हैं तब आप उन्हें आहार के लिए पड़गाएंगे कैसे। बताइए।

२४. सास बहु में झगड़ा कैसे होता है बताइए।

२५. यदि आप भारत के प्रधानमंत्री होते तो जैनो के लिए क्या क्या करवाते।

२६. यदि कोई आपको गाली देगा तो आप उसे क्या देंगे।

२७. प्रवचन समाप्त होते ही आप क्या बोलते हैं बोलकर बताइए।

२८. आपका मित्र जैन है वह जैनत्व जैसे एक भी आचरण नहीं करता उसे आप किस प्रकार समझाएंगे।

२९. सम्मेद शिखर जी वंदना करते समय आप क्या बोलेंगे बोलकर बताइए।

३०. आपका छोटा भाई धूम्रपान करने लगा है उसे आप किस प्रकार समझाएंगे।

३१. यदि आप नेता होते तो किस प्रकार भाषण देते।

३२. आपने पर्युषण पर्व में एवं पर्युषण पर्व के समय क्या अंतर देखा है समझाइए।

३३. अष्टमी चतुर्दशी को हरि का त्याग करना चाहिए यह आप किस प्रकार समझाओगे।

३४. लिपिस्टिक, रेशम की साड़ी का त्याग किस प्रकार करायेंगे।

३५. आज कौन सा दिन है पर्युषण पर्व का उस पर दो मिनिट बोलिए।

३६.

(प्रश्न :-)

✳ "पार्सल गेम" ✳

DAILY NOTES

DATE

पार्सल गेम :- 1. प्रतियोगिता के नियम

(क) अधिक छात्र होने पर यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की जायेगी -

1. छोटे बच्चों का ग्रुप 2. बड़े बच्चों का ग्रुप

(ख) प्रति 30 सेकण्ड में एक घण्टी बजेगी जिसके बीच आपको हाथ में दिया गया पात्र आगे आने प्रतियोगियों को देना है।

(ग) जिसके हाथ में घंटी बजने पर पात्र आयेगा उसे यहाँ आकर पर्ची में जो नम्बर लिखा होगा उसके अनुसार एक्टिंग करनी पड़ेगी।

(घ) यदि किसी प्रतियोगी के हाथ से पात्र गिर जायेगा तो उसे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाएगा।

(ङ) प्रतियोगिता में पुरस्कार विजेता, उपविजेता एवं जो सबसे अच्छी एक्टिंग करेगा उसे पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

प्रतियोगिता में एक्टिंग :- 1. यदि आप कवि होते तो कौन सी कविता सुनाना पसंद करते एवं उस कविता को सुनाये।

2. आप पर्युषण पर्व में प्रवचन किस प्रकार करेंगे।

3. आपको पाठशाला में बच्चों को पढ़ाना है किस प्रकार पढ़ायेंगे, पढ़ाकर बताइये।

4. मान लीजिए आपका बच्चा पाठशाला व मन्दिर जी नहीं जाता है तो उसे आप किस प्रकार समझाएंगे।

5. अहिंसा के नारे जुलूस में किस प्रकार लगवाएंगे।

6. जो भजन आपको अत्यन्त प्रिय लगता हो वह सुनाइये।

~~7. आपके मम्मी पापा झगड़ रहे हो तो कैसे समझाएंगे।~~

8. शाकाहार के प्रति जो आप जानते हैं उसे बोलकर समझाइये।

9. यदि कोई रात्रि भोजन करता हो तो उसे हानि बताकर त्याग करने की प्रेरणा किस प्रकार देंगे।

10. जैन धर्म से संबंधित प्रेरणादायक एक छोटी सी कहानी सुनाइए।

11. अपना स्वयं अपनी दिनचर्या बताइए।

12. आपको वैराग्य हो गया और दीक्षा देना चाहते हैं तो परिवार वालों से किस प्रकार स्वीकृति लेंगे।

13. आप देव दर्शन कैसे करते हैं करके बताइए।

14. आपके यहाँ जो भईया जी आये हैं वह आपको किस प्रकार पढ़ाते हैं पढ़ाकर बताइये।

15. आपके पति टी.वी. देख रहे हैं और तभी आपको स्वाध्याय करना है तो आप अपने पति को स्वाध्याय के प्रति किस प्रकार प्रेरित करेंगी।

16. वर्तमान में लोग माला किस प्रकार फेरते हैं और किस प्रकार फेरना चाहिए। करके दिखाए।

17. अचानक आपके सामने मन्दिर में शेर आ गया तो क्या प्रतिक्रिया करेंगे।

भजन की दूसरी पंक्ति मे – कौन बनेगा विद्वान

M

P

आन – निरखत जिनचन्द्र वदन....

चिद्घन – अशरीरी सिद्ध भगवान

आसन – देखो जी आदीश्वर स्वामी

जिनवर – रोम-रोम पुलकित हो जाय

जग जन – चाहै मुझे है दर्शन की

आनन्द – पंच परम परमेष्ठी देखे

शरण तुम जैसा नाथ तुम्हारी पूजा मे सब स्वाहा

जीवादिक – हमको भी बुलवालो स्वामी

वासना निजातम – तिहारे ध्यान की मूरत. अजब छवि

भगवन – मेरे मन मन्दिर मे आन, पधारो महावीर भगवा

दर्शन – आओ जिन मंदिर में आओ

सिद्धों – धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है

काल अनादि – जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिए

कर्मस्वभाव – जिन बैन सुनत मोरी भूल भगी..

कहानी – साँची तो गंगा यह वीतरागवाणी

कहानी – धन्य धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी ज

मिथ्या त्यजन – परम गुरु बरसत ज्ञान झरी, ह...

मोक्ष.. – संत साधु बन के विचरूँ..

आज – होली खेलें मुनिराज शिखर वन मे रे.

बलवान – एक तुम्ही आधार हो जग मे अय मेरे भ

तो क्या हुआ बकरों पर दया करनी चाहिए । हे [redacted]
चिन्तामणी पारसनाथ ! दया करो ।
किसी कन्या को मेरे ऊपर प्रसन्न करो ।

८- लायक -
अभी आपने देखा कि कितने भक्त आये और वीतरागी भगवान से माँगने - अपने स्वार्थ की बातें करकर चले गये । ये तो घर-२ घर-२ की कहानी है दर्शन करने आते हैं जैन कहलाते हैं । भगवान के नाम से और जैनी कहलाते हैं और जैन के किराना भण्डार, वर्तन भण्डार वस्त्र भण्डार चलाते हैं ; पर देवदर्शन की विधी क्या है यह भी ठीक से नहीं जानते ।

७- विद्यार्थी -
तो आप ही बता दो देवदर्शन की विधी क्या है।

लायक - - - - - - - - - (देवदर्शन की विधी)

युवा -
स्वाध्याय करने से क्या लाभ है ?

लायक -
स्वाध्याय करने से हिताहित, घटाघटय, पुन्य T ON REDMI NOTE 5 PRO बुद्धि का ज्ञान होता है, षट् द्रव्यों व सात तत्वों का UAL CAMERA ज्ञानपूर्वक बोधज्ञान से सम्यक्दर्शन प्राप्त होता है।

सभी एक साथ -
भैया आपने तो हमारी आँखें खोल दी ।

लायक -
भैया आप सब लोग भी भगो लेकर आते हैं क्या आपको यह पता है कि जिन मिथ्यालय नहीं शिवालय है और -और और पता कि हमारे भगवान न तो लेते हैं न देते हैं जैन है और क्यों जैन का सच्चा स्वरूप ही मा नहीं है, जिनवाणी मिली, उत्तम कुल मिला भी धर्म से वंचित हो रहे हैं हमसे ज्यादा कौन होगा ।

जय जिनेन्द्र

• • • •

पं. विकास जैन

विकारिन जैन टीकमगढ़

जिनमंदिर भिक्षालय नहीं शिक्षालय है।

पात्र – विद्यार्थी, व्यापारी, युवा
रिश्वतखोर, बेरोजगार, गायक

विद्यार्थी :-

1- good morning my god

हे प्रभो आनंद दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
हमको कुछ आता नहीं जो पास हमको कीजिए।

हे भगवान। देखो आपको पता है कि मैं क्रिकेट का फैन हूँ और अभी-2 भारत पाकिस्तान की सीरीज चल रही है, तो समझलो भगवान भारत की इज्जत दाव पर है। लगी है। तो इसलिए मेरा देखना जरूरी है। और आपको पता ही है। कि बोर्ड की परीक्षा सिर पर आन पड़ी है, अब मैं पढ़ाई करूँ या मैच देखूँ। तो भगवान सम्भाल लेना। मेरी इज्जत अब आपके हाथ में है, मैं यदि पास हो गया तो मैं अपने पाकेट मनी से रू दान पात्र में जरूर डालूंगा।

याद रहे भगवान भूल मत जाना।

2- व्यापारी :-

अति पुण्य उदय मम आया।
सौ सौ की गड्डी पाया।।
चत्तारि मंगलं सोना मंगलम चाँदी मंगलम।
रूपया मंगलं चैक मंगलम।।

तो क्या हुआ भक्तों पर दया करनी चाहिए । हे [redacted]
चिन्तामणी पारसनाथ । दया करो ।
किसी कृपा को मेरे ऊपर प्रसन्न करो ।

८- नायक -

अभी आपने देखा कि कितने भक्त आये और वीतरागी भगवान के सामने अपने रुपा की बातें करकर चले गये । ये तो गाँव-२ घर-२ की कहानी है दर्शन करने जाते है जैन कहलाते है । भगवान के नाम से और जैनी कहलाते है और जैन के किराना भण्डार, बर्तन भण्डार वस्त्र भण्डार चलाते है. पर देवदर्शन की विधी क्या है यह भी ठीक से नही जानते ।

९- विद्यार्थी -

तो आप ही बता दो देवदर्शन की विधी क्या है।

नायक - - - - - - - - - (देवदर्शन की विधी)

युवा -

स्वाध्याय करने से क्या लाभ है ?

नायक -

स्वाध्याय करने से हिताहित, भक्ष्याभक्ष्य, पुण्य पाप का ज्ञान होता है, षट् द्रव्यों व सात तत्वों का ज्ञानपूर्वक श्रद्धान से सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है ।

सभी एक साथ -

भैया आपने तो हमारी आँखे खोल दी ।

नायक -

भैया आप सब लोग भी मांगें लेकर आते है क्या आपको यह पता है कि जिनमंदिर भिखालय नही शिवालय है और और पता है कि हमारे भगवान न तो लेते है न देते है हम जैन है और हमें जैन का सच्चा स्वरूप ही मालूम नही है, जिनवाणी मिली, उत्तम कुल मिला फिर भी धर्म से वंचित हो रहे है हमसे अभागा कौन होगा ।

जय जिनेन्द्र

• • • •

पं. विकास जैन

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

हे भगवान ! आप नाराज क्यों हो। गए हैं कि इस बार बिल्कुल भी सीजन नहीं चल रहा है। अरे आपको चावल चढ़ा सकूं इतनी भी कमाई नहीं हो रही। अरे जब हमें खाना खाने को नहीं मिलेगा तो हम आपको क्या चढ़ावें भगवान जरा दया करो आप तो दया निधान हो हमारी दुकान अच्छी चलती लग जावे और अपने मजे हो जावें। भगवान तो फिर अपनी यह बात पक्की रही की अपने मजे तो आपके मजे। एक जोरदार विधान (दशलक्षणविधान कराऊंगा अब तो भगवान आपके ही भरोसे हैं।

रिश्वतखोर ÷

हे भगवान आप तो सर्वज्ञ हैं। मैंने जो अर्जी लगाई है। वो तो आप समझ ही गए होंगे न यदि समझे न हो तो भगवान मैं फिर से बता रहा हूँ कि मैं तो रिश्वत खोरी की के चक्कर में पकड़ा गया हूँ लोगों ने कह दिया है। मैंने लाख रू. की रिश्वत ली मगर राज की बात बताऊँ भगवान ली तो लाख की है पर आप ही इस झंझट। मुसीबत से छुड़ा सकते हैं। अगर मैं कोर्ट से बाइज्जत बरी हो गया तो आपको दूंगा साथ ही 25%
10% चढ़ाऊंगा भी।

4- बेरोजगार ÷

इधर उधर देखते हुए।

वाह भगवान वाह। आपके मंदिर में फर्श मार्बल का दीवारों पर ऑयल पेंट वेदी पर सोने का पेंट छत्र चंवर चांदी के आपका तो क्या कहना भगवान! अपरिग्रही भगवान के पास इतना परिग्रह। और एक मैं आपका भक्त बेरोजगार घूम रहा हूँ किसी को कहना मत भगवान ये पेंट भी मैंने दूसरों की पहिन रखी है। अरे भगवान कुछ तो सोचो हमारे बारे में हम जैसे बेरोजगारों पर कृपा करो बस एक छोटी सी नौकरी दिला दो भगवान पहली वेतन आपको ही चढ़ाऊंगा। ज्यादा क्या कहूँ भगवान। और तो आप समझ ही गए होंगे।

5- युवा ÷

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा तुम तो करवा दो ब्याह हमारा॥

हे पारसनाथ भगवान। मैं कब से रविवार का व्रत रख रहा हूँ। पर आप सुनते ही नहीं हो। मैं एक शादी ही तो कह रहा हूँ। भगवान आपकी ही कृपा से चक्रवर्तियों की तो 96-96 हजार शादियां हो गई मेरी तो आधी एक भी नहीं हुई और आप मेरी एक शादी ही नहीं करवा सकते।

T ON REDMI NOTE 5 PRO
UAL CAMERA

जैन
टीकमगढ़ जिनमंदिर मिसालय नहीं शिक्षालय है।

पात्र – विद्यार्थी, व्यापारी, युवा
रिश्वतखोर, बेरोजगार, गायक

विद्यार्थी :- good morning my god

हे प्रभो आनंद दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
हमको कुछ आता नहीं जो पास हमको कीजिए।

हे भगवान। देखो आपको पता है कि मैं क्रिकेट का फैन हूँ और अभी-२ भारत पाकिस्तान की सीरीज चल रही है, तो समझलो भगवान भारत की इज्ज दाव पर है। लगी है। तो इसलिए मैच देखना जरूरी है। और आपको पता ही है। कि बोर्ड की परीक्षा सिर पर आन पड़ी है, अब मैं पढ़ाई करूँ या मैच देखूँ। तो भगवान सम्भाल लेना। मेरी इज्जत अब आपके हाथ में है, मैं यदि पास हो गया तो मैं अपने पाकेट मनी से रु ॥ दान पात्र में जरूर डालूंगा।

याद रहे भगवान भूल मत जाना।

व्यापारी :-

अति पुण्य उदय मम आया।
सौ सौ की गड्डी पाया॥
चत्तारि मंगलं सोना मंगलम चाँदी मंगलम।
रूपया मंगलं चैक मंगलम॥

:: प्रतियोगिता के नियम ::

- इस प्रतियोगिता में कुल 22 खिलाड़ी भाग लेगें ।
- प्रतियोगिता में दो टीम्स बनेंगी प्रत्येक टीम में 11-11 खिलाड़ी भाग लेगें।
- खिलाड़ियों को चयन के आधार पर टीम में सम्मिलित किया जायेगा।
- टीम्स के चयन के बाद टॉस फेंका जायेगा जो टीम टॉस जीतेगी वह बल्लेबाजी या बॉलिंग में से किसी एक को स्वीकार करेगी एक बर्तन में बॉलिंग की बाल स्वरूप कुछ पर्ची रखी जायेगी ।
- बॉलिंग टीम का, एक खिलाड़ी आकर बॉलिंग करेगा तथा बैंटिंग टीम का भी एक खिलाडी बैंटिंग करने आयेगा।
- बॉलर एक पर्ची निकालेगा उस पर्ची में जो रन अर्थात् जिस नम्बर का प्रश्न उस पर लिखा होगा वह बल्लेबाज से पूछेगा ।
- यदि बल्लेबाज सही उत्तर देता है तो उसे उतने रन प्रदान किये जायेंगे यदि उत्तर नहीं देता है तो डाट बाल मानी जायेगी ।
- प्रत्येक टीम में आठ-आठ ओवर निर्धारित किये गये हैं।
- एक खिलाडी एक ओवर अर्थात् छः पर्ची ही निकालेगा।
- जितने रन पहली टीम बनाती है उससे एक रन ज्यादा दूसरी टीम को बनाना होगा तभी उसकी जीत मानी जायेगी।
- उत्तरमाला में लिखे उत्तर ही मान्य होगें ।
- स्कोर वाले महानुभाव समय समय पर दोनों टीम्स का स्कोर बताते रहेंगें ।
- अगर दोनों टीम बराबर रन बनाती हैं तो मैच रद्द न होकर एक अतिरिक्त ओवर डाला जायेगा।
- जब आउट की पर्ची निकलेगी तो खिलाडी आउट माना जायेगा।
- गलत उत्तर देने पर भी खिलाडी आउट माना जायेगा।

नोट:- निर्णायक का निर्णय ही अन्तिम और सर्वमान्य होगा।

:: उत्तरमाला ::

प्रश्न 1 रन के उत्तर

1.पंचपरमेष्ठी को 2.पं.दौलतराम जी 3.चार 4.णमोकार मंत्र 5.चार 6.मधु(शहद) 7.प्राकृत भाषा 8.जुआ खेलना 9.तीन 10.पार्श्वनाथ 11.पांच12.आ.विद्यासागर जी 13.जुगलकिशोर14. हाथी15.आर्या छन्द16.सिद्धपरमेष्ठी17.आ.मानतुंग18.शूर्पणखा 19.46 20.देवपूजा 21.आ. उमास्वामी 22.उपाध्याय परमेष्ठी 23.सात 24.क्षीरोदधि 25.तीनलोक 26.आ.समन्तभद्र 27. आदिनाथ 28.नाभिराय-मरूदेवी 29.गिरनार 30.दीप 31.16 32.जिनाभिषेक 33.तीन 34. नियमसार 35.श्रेणिक 36.रेशमी 37.14
38.वसन्त-तिलका 39.दो 40.मथुरा।

प्रश्न 2 रन के उत्तर

1.हिंसा,झूठ,चोरी,कुशील,परिग्रह 2.नरक,तिर्यंच,मनुष्य,देव 3.वीर,अतिवीर,सन्मति,वर्द्धमान महावीर 4.अश्वसेन-वामादेवी 5.जो आत्मा को कसे कष्ट दे उसे कषाय कहते है।6.लवकुश 7 जो सर्वज्ञ वीतरागी और हितोपदेशी होते हैं 8.श्रीरामचन्द्र,मॉगीतुंगी 9.पांच-पृथ्वी जल अग्नि वा और वनस्पति 10.20तीर्थकर 11.मुनि आर्यिका श्रावक श्राविका 12.अभव्य जीव 13.दो इन्द्रि से लेकर पांच इन्द्रिय तक के जीव त्रस होते हैं 14.आर्यिका समयमति जी 15.जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश और काल 16.सम्मेदशिखर 17.सौधर्मेन्द्र जन्माभिषेक के समय 18.गिरनार उ 19.36450,अनंत 20.चामुण्डराय 21.नेमिनाथ 22.विभीषण 23.द्रोणगिरि 24.एकत्वभावना 2 राजा श्रेयांस,इक्षु रस 26.ईशत्प्राग्भार भूमि 27.जिओऔरजीने दो 28.उपाध्याय परमेष्ठी 2 ब्राम्ही,सुन्दरी 30.आर्जवधर्म 31.आचार्यविद्यासागर.विरागसागर.पुष्पदन्त साग विभवसागर,विशुद्धसागर 32 उत्तमशौचधर्म 33.सांगानेर 34.जीवन्धरस्वामी 35. पुष्पदन्त 3 समन्तभद्राचार्य 37.मधु (शहद) 38.दीवान अमरचन्द 39.श्रवणकुमार 40.सुकुपाल मुनि ।

प्रश्न 3 रत्न के उत्तर

1.जीव अजीव आश्रव बन्ध संवर निर्जरा और मोक्ष 2.आचार्य मानतुंग,भक्तामर स्तोत्र 3.भागानेर,पदमपुरा,चमत्कार जी,तिजारा जी,महावीर जी,पपौरा जी 4.35 अक्षर 58 मात्राएँ पद 5.सम्मेदशिखर चम्पापुर पावापुर गिरनार सोनागिरि 6,अष्टमी चतुर्दशी 7.आहार औषधि अभय और ज्ञान 8.जम्बूद्वीप 9.देवपूजा,गुरूउपासना स्वाध्याय,संयम,तप और दान 10.तत्वार्थसूत्र कुल सूत्र357 11.जो पापों को गलाता है और पुण्य को लाता है वह मंगल कहलाता मंगल चार होते हैं 12. राजा श्रेणिक आगे प्रथम तीर्थंकर होंगे 13,कमठ के जीव संवरदेव ने 14.खट्टा मीठा कड़वा कषायला चरपरा 15,चारोंगतियों के दुखका16,मीठागाती कर्णइन्द्रियसे,कालीकाया चक्षु इन्द्रिय से 17,सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यग्चारित्र 18,शान्ति कुन्थु अरनाथ पदवी तीन तीर्थंकर चकवर्ती कामदेव19. वर्तमानस्थान ( ) 20.उसी नगर के जिन मन्दिर संख्या 21,नमोस्तु 22,कुण्डलपुर 23 एसोपंचणमो......24द्रव्यसंग्रह गाथा 58,25. सामान्य केवली,सिद्ध,मुनिअवस्था की मूर्ति

प्रश्न 4 रत्न के उत्तर

1.जल,चन्दन,अक्षत,पुष्प,नैवेध,दीप,धूप,फल 2.माता सुनन्दा की पुत्री सुन्दरी,पुत्र बाहुबलि, माता नन्दाकी पुत्री ब्राम्ही,भरतादि सौ पुत्र,पिताऋषभदेव । 3.जाते समय निःसहि-3 बार, आते समय असहि-3बार 4.गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण 5.ज्ञानावरणी दर्शनावरणी,वेदनीय,मोहनीय,आयु,नाम,गोत्र अन्तराय 6.प्रथमानुयोग,करणानुयोग, चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग 7.सात तत्व और पुण्य व पाप 8.माता त्रिशला व पिता सिद्धार्थ 9. वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ,पार्श्वनाथ,महावीर,10.श्रीसमयसागर जी योगसागर जी नियमसागरजी क्षमासागर जी सुधासागर जी सरलसागरजी समता सागर जी 11. सुदर्शन,विजय,अचल मंदर ,विद्युन्माली,12.ज्ञानावरण, दर्शनावरण मोहनीय अन्तराय,13,भवनवासी,व्यन्तर,ज्योतिषी और वैमानिक 14.आरम्भी,संकल्पी,विरोधी, उद्योगी,15तीन जलचर थलचर नभचर,16.द्रव्य क्षेत्र काल भव भावपंच परावर्तन,17,आदिनाथ पुष्पदन्त महावीर,18 जैनी के तीन लक्षण-नित्य देव दर्शन,पानी छानकर पीना,रात्रिभोजन त्याग 19.जो श्रद्धावान,विवेकवान और क्रियावान हो 20.श्री ऋषभदेव-कैलाश पर्वत,वासुपूज्य-चम्पापुर,नेमिनाथ-गिरनार,महावीर-पावापुर शेष बीस सम्मेदशिखर 21.सातावेदनीय-असातावेदनीय 22.मतिज्ञान और श्रुतज्ञान 23.पंचस्थावर और त्रस 24.मति,श्रुत,अवधि 25.उच्च और नीच 26. लोकाकाश और अलोकाकाश 27. माया,मिथ्यात्व,निदान 28 इष्टवियोग,अनिष्टसंयोग,पीड़ाचिंतन,निदान29. मन वचन काय30 हिंसानन्दि,मृषानन्दि,चौर्यानन्दि,परिग्रहानन्दि31. असि,मसि,कृषि,विद्या,वाणिज्य,शिल्प 32.पीछी-कमण्डलु रखते हैं,नग्न रहते हैं,28मूलगुणों का पालन करते हैं33.णमोकार महामंत्र अपराजितमंत्र,अनादिनिधनमंत्र मूलमंत्र 34 खाद्य,स्वाद्य,लेह्य,पेय 35.अणुव्रत 5, गुणव्रत-3. शिक्षाव्रत-4

:: प्रश्न 6 रन के लिये ::

1.उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, शौंच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य 2. क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र 3. कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म, शुक्ल4. पंचपरमेष्ठी, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय 5.अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आश्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ, धर्म 6.धम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवा, माघवी 7.वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र 8.अशोकवृक्ष, तीनछत्र, चंवर, भामण्डल, सिंहासन, देवदुंदुभि, दिव्यध्वनि, पुष्पवृष्टि 9.अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतसुख अनंतवीर्य, 10.अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन 11.मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान, केवलज्ञान12.अनशन, ऊनोदर, वृतिपरिसंख्यान, रसपरित्याग विविक्तशय्यासन, कायक्लेश13. भोग, उपभोग, दान, लाभ, वीर्य, 14. औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण15.ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप, शरीर, 16चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन17.प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग, ध्यान18.गर्भ, उपपाद, सम्मूर्च्छन 19जुआखेलना, मांसभक्षणकरना, मद्यपानकरना, वेश्यागमनकरना, शिकारखेलना, चोरीकरना, परस्त्रीगमनकरना 20.अनुगामी अननुगामी वर्धमान हीयमान अवस्थित अनवस्थित, 21, सुषमासुषमा, सुषमा, सुषमादुषमा, दुषमासुषमा, दुषमा, दुषमादुषमा, 22, जो जीव और पुदगल को चलाने में सहायता प्रदान करे उसे धर्म द्रव्य कहते है जैसे जल मछली को, जीव और पुदगल को ठहरने में सहायता प्रदान करे उसे अर्धम द्रव्य कहते हैं जैसे वृक्ष की छाया पथिक को 23-निर्विघ्न समाप्ति, शिष्टाचार का परिपालन, नास्तिकता का परिहार, 24, जन्माभिषेक, राज्याभिषेक, दीक्षाभिषेक, जिन प्रतिमाभिषेक 25, विपरीत, एकांत विनय, संशय अज्ञान।

प्रश्न 15. आठ प्रकार के मदों के नाम बताओ।

प्रश्न 16. एक वर्ष में बारह आते, अलग अलग वे गीत हैं गाते।
बारह माह के नाम बताओ, हिन्दी के तुम भूल न जाओ।।

प्रश्न 17. छह अन्तरंग तपों के नाम बताओ।

प्रश्न 18. चउ गतियों में आना जाना, बार बार फिर जन्म को पाना।
तीनों जन्म के नाम बताओ, जन्म रहित सिद्धि को पाओ।।

प्रश्न 19. सप्त व्यसन के नाम बताओ।

प्रश्न 20. देव नारकी सब ही पाते, नर पशुओं में विरले नाते।
अवधिज्ञान छह भेद गिनाओ, भेद गिनाकर इनाम पाओ।।

प्रश्न 21. अवसर्पिणी काल के छह भेद बताओ।

प्रश्न 22. धर्म अधर्म है द्रव्य कहावे, जहां है जावे वहीं वे पावे।
इनकी तुम परिभाषा बताओ, सहित उदाहरण से समझाओ।।

प्रश्न 23. मंगलाचरण के तीन कारणों को बताओ अथवा मंगलाचरण क्यों करते हैं? कारण बताओ।

प्रश्न 24. पूजा का है अंग कहाया, अभिषेक कर पुण्य कमाया।
कितने भेद है कौन बताए, सही बताकर इनाम पाए।।

प्रश्न 25. मिथ्यात्व के पांच भेदों के नाम बताओ।

:: प्रश्न 6 रन के लिये ::

प्रश्न 1. दश धर्मों के नाम क्रम से बताओ।

प्रश्न 2. ऋषभ देव ने ज्ञान कराया, वंश कौनसा हमें बताया।
कौन से तीन वंश बताये, नाम बताकर इनाम पाये ।।

प्रश्न 3. लेश्या कितनी होती है नाम बताओ ।

प्रश्न 4. पूज्य वही आराध्य सही है, सब श्रावक के साध्य वही है ।
नवदेवों के नाम बताओ, पूजा कर उनकी सुख पाओ ।।

प्रश्न 5. बारह अनुप्रेक्षा (भावनाओं) के नाम बताओ।

प्रश्न 6. नरकगति में दुःख ही पाता पेप्सी पीता ब्रेड जो खाता ।
सात नरक के नाम बताओ इन्हे त्याग फिर नरक न जाओ ।।

प्रश्न 7. चार अघातिया कर्मों के नाम बताओ ।

प्रश्न 8. समवशरण में शोभा पाते, तीर्थंकर की महिमा गाते ।
प्रातिहार्य के नाम बताओ, आठ की संख्या पूर्ण कराओ ।।

प्रश्न 9. अनन्तचतुष्टय के नाम क्रम से बताओ।

प्रश्न 10. अंगारा सम क्रोध कहाता, निज पर दोनों को है जलाता।
भेद कौन से चार बताओ, क्रोध त्याग ज्ञानी बन जाओ ।।

प्रश्न 11. सम्यग्ज्ञान के पांच भेदों के नाम बताओ।

प्रश्न 12. तप से कटते कर्म हमारे, शिव साधन के बने सहारे।
बाह्य तपों के नाम बताना, तप कर जीवन सफल बनाना ।।

प्रश्न 13. अन्तराय कर्म के पांच भेदों के नाम बताओ।

प्रश्न 14. तन तो तन है कर्म का मारा चेतन है सुख का भण्डारा ।
पांच शरीर के नाम बताओ देह त्याग सिद्धालय जाओ ।।

:: प्रश्न 4 रन के लिये ::

प्रश्न 1. पूजन में चढ़ाये जाने वाले अष्ट द्रव्यों के नाम बताओ।

प्रश्न 2. ऋषभ देव पितु मात सुनन्दा और दूसरी माता नन्दा।
पुत्र पुत्री के नाम बताओ, किसके कौन हमें समझाओ ।।

प्रश्न 3. मंदिर में प्रवेश करते समय तथा बाहर जाते समय क्या और कितनी बार बोलना चाहिए।

प्रश्न 4. देवों में उत्सव है छाया, जन जन ने उल्लास मनाया।
कहे गये कल्याणक जिनके, पाँच कौन से तीर्थंकर के ।।

प्रश्न 5. आठ कर्मों के नाम बताओ।

प्रश्न 6. जिनकी वाणी है जिन वाणी, पार हुआ है जिससे प्राणी।
चार भेद है आप बताओ अनुयोगों को उर में लाओ ।।

प्रश्न 7. नौ पदार्थों के नाम बताओ।

प्रश्न 8. कुण्डलपुर में बजी बधाई जन जन में खुशियाँ है छाई।
मात पिता के नाम बताओ वीर प्रभु का दर्शन पाओ ।।

प्रश्न 9. पंच बालयति तीर्थंकरों के नाम बताओ।

प्रश्न 10. श्रमण पूज्य है परम दिगम्बर रखते जो न कुछ आडम्बर।
सात नाम मुनिवर के बतायें विद्यागुरू से जो दीक्षा पाये ।।

प्रश्न 11. पंचमेरू कौन कौन से है नाम बताओ।

प्रश्न 12. चार घातिया कर्म नशाया प्रभु ने केवल ज्ञान है पाया।
नाम घातिया के बतलाये, अरिहंत प्रभु जय कार लगायें ।।

प्रश्न 13. चार प्रकार के देवों के भेदों के नाम बताओ।

प्रश्न 14. हिंसा पाप है बड़ा कहलाता दुर्गतियों में वो ले जाता।
चार भेद हैं कौन बताए त्यागी बन कर सुख पा जाए ।।

:: प्रश्न 3 रन के लिये ::

प्रश्न 1. सात तत्वों के नाम क्रम से बताओ।

प्रश्न 2. टूट गये थे ताले सारे, सभी लगाते जय जय नारे।
मुनिवर का तुम नाम बताना, उनकी रचना ज्ञात कराना।।

प्रश्न 3. किन्ही पांच अतिशय क्षेत्रों के नाम बताओ।

प्रश्न 4. णमोकार को जो नित जपता पाप पंक में कभी न फसता।
अक्षर, मात्रा, पद बतलाओ, शुभ कर्म कर मुक्तिपाओ।।

प्रश्न 5. किन्ही पांच सिद्ध क्षेत्रों के नाम बताओ।

प्रश्न 6. पक्ष में दो अरू माह में चार, पर्व हैं आते सदाबहार।
नाम पर्व का हमें बताना, संयम धर जीवन सफल बनाना।।

प्रश्न 7. दान कितने प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 8. योजन एक लाख विस्तारा, जीव द्रव्य से भरा है सारा।
नाम द्वीप का कौन बताए, बीच सुमेरू उसके पाए।।

प्रश्न 9. श्रावक के षट् आवश्यक कर्मो के नाम बताओ।

प्रश्न 10. उमास्वामी मुनिवर की रचना, दशाध्याय पढ़ पाप से बचना
कुल सूत्रों की गणना गाओ, तथा ग्रन्थ का नाम बताओ।।

प्रश्न 11. मंगल किसे कहते हैं कितने होते हैं।

प्रश्न 12. रानी चेलना ने समझाया, सम्यग्दृष्टि किसे बनाया।
उस राजा का नाम बताओ आगे क्या होगा बतलाओ।

प्रश्न 13. भगवान पाश्र्वनाथ पर उपसर्ग किसने किया।

प्रश्न 14. विषयों को जो चखकर जाने, रसना इन्द्रिय वो पहचाने।
पॉच विषय हैं उसके होते नाम बताओ अब क्यो सोते।।

प्रश्न 15. छहढाला की पहली ढाल में किसका वर्णन है।

:: प्रश्न 2 रन के लिये ::

प्रश्न 1. पांच पापों के नाम क्रम से बताओ।

प्रश्न 2. भटक भटक कर दुख ही पाता, चउ गतियों में कही न साता।
इन गतियों के नाम बताओं, सबसे पहले इनाम को पाओ ।।

प्रश्न 3. भगवान महावीर के पांच नाम बताइये।

प्रश्न 4. पारस नाम महा सुखदाई, उपसर्गो पर विजय है पाई।
माता पिता कौन थे उनके, नाम बताओ भाग्य है चमके ।।

प्रश्न 5. कषाय किसे कहते हैं

प्रश्न 6. चाचा थे जिनके नारायण, युद्ध कला में थे पारायण।
युगल भाई के नाम बताओ, सबसे पहले इनाम को पाओ ।।

प्रश्न 7. सच्चे देव किसे कहते हैं

प्रश्न 8. कौशल्या के राज दुलारे सीता जी को सबसे प्यारे।
कौन कहाँ से मोक्ष पधारे, नाम बताओ वरना हारे ।।

प्रश्न 9. स्थावर के कितने भेद है नाम बताइये।

प्रश्न 10. गिरि सम्मेदशिखर है प्यारा जन जन का है तारन हारा।
हैं तीर्थंकर कितने सारे मोक्ष पधारे हमें सहारे ।।

प्रश्न 11. चतुर्विध संघ किसे कहते हैं

प्रश्न 12. कभी मोक्ष न वो पायेगा मुनि बन स्वर्ग भले जावेगा।
उसी जीव का नाम बताओ अपना है पुरूषार्थ जगाओ ।।

प्रश्न 13. त्रस जीव किसे कहते हैं

प्रश्न 14. देखो विद्याधर की माता, छोड़ा घर द्वारे से नाता।
आर्या जी का नाम बताओ श्रीमती जी को शीश झुकाओ ।।

- इस प्रतियोगिता में कुल 22 खिलाड़ी भाग लेंगे।
- प्रतियोगिता में दो टीम्स बनेंगी प्रत्येक टीम में 11-11 खिलाड़ी भाग लेगें।
- खिलाड़ियों को चयन के आधार पर टीम में सम्मिलित किया जायेगा।
- टीम्स के चयन के बाद टॉस फेंका जायेगा जो टीम टॉस जीतेगी वह बल्लेबाजी या बॉलिंग में से किसी एक को स्वीकार करेगी एक बर्तन में बॉलिंग की बाल स्वरूप कुछ पर्ची रखी जायेगी।
- बॉलिंग टीम का, एक खिलाड़ी आकर बॉलिंग करेगा तथा बैंटिंग टीम का भी एक खिलाडी बैंटिंग करने आयेगा।
- बॉलर एक पर्ची निकालेगा उस पर्ची में जो रन अर्थात् जिस नम्बर का प्रश्न उस पर लिखा होगा वह बल्लेबाज से पूछेगा।
- यदि बल्लेबाज सही उत्तर देता है तो उसे उतने रन प्रदान किये जायेगे यदि उत्तर नहीं देता है तो डाट बाल मानी जायेगी।
- प्रत्येक टीम में आठ-आठ ओवर निर्धारित किये गये हैं।
- एक खिलाडी एक ओवर अर्थात् छः पर्ची ही निकालेगा।
- जितने रन पहली टीम बनाती है उससे एक रन ज्यादा दूसरी टीम को बनाना है तभी उसकी जीत मानी जायेगी।
- उत्तरमाला में लिखे उत्तर ही मान्य होगें।
- स्कोर वाले महानुभाव समय समय पर दोनों टीम्स का स्कोर बताते रहेंगें।
- अगर दोनों टीम बराबर रन बनाती हैं तो मैच रद्द न होकर एक अतिरिक्त ओवर डाला जायेगा।
- जब आउट की पर्ची निकलेगी तो खिलाड़ी आउट माना जायेगा।
- गलत उत्तर देने पर भी खिलाडी आउट माना जायेगा।

नोट:-निर्णायक का निर्णय ही अन्तिम और सर्वमान्य होगा।

:: प्रश्न 1 रन के लिये ::

प्रश्न 1. णमोकार मंत्र में किसे नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 2. समयसार छोटा कहलाता, मुक्ति महल का पथ दिखलाता।
कवि का नाम बताओ भईया, छहढाला तो नाव खिवैया ।।

प्रश्न 3. गतियां कितनी होती हैं ।

प्रश्न 4. मंत्रों में जो महामंत्र है, सुख पाने का एक यंत्र है ।
उसी मंत्र का नाम बताओ, शुद्ध बोलकर हमें सुनाओ ।।

प्रश्न 5. कषायें कितनी होती हैं ।

प्रश्न 6. मक्खी का वह वमन कहाता, जीव सैकडों है उपजाता ।
भूल इसे तुम कभी न खाना, नाम इसी का हमें बताना ।।

प्रश्न 7. णमोकार मंत्र को कौन सी भाषा में लिखा गया हैं।

प्रश्न 8. हार जीत का खेल कहाता, नरकों में निश्चित ले जाता।
व्यसन बड़ा है यह दुखदाई, नाम बताओ मेरे भाई ।।

प्रश्न 9. वर्तमान में हमें कितने परमेष्ठी के साक्षात् दर्शन होते हैं।

प्रश्न10. नगर बनारस खुशियां छाई, घर घर देखो बजी बधाई ।
जन्में कौन से हैं तीर्थंकर, पुण्यशाली वे सर्व हितंकर ।।

प्रश्न11. इन्द्रियाँ कितनी होती हैं?

प्रश्न12. मूकमाटी महाकाव्य कहाता, अद्भुत अनुपम ज्ञान कराता।
रचना किनकी नाम बताओ, पढ़कर जीवन सफल बनाओ।।

प्रश्न13. मेरी भावना के रचयिता कौन हैं।

प्रश्न14. बड़ी मस्त है चाल वो चलता, कान है देखो जिसका हिलता।
चिन्ह कौन सा वह कहलाता, तीर्थंकर की याद दिलाता ।।

प्रश्न15. णमोकार मंत्र कौन से छन्द में लिखा गया है!

कविता :

सबकी चार दिनों की यारी
झूठे ऊँची नाते रिश्तेदारी
सब हैं स्वारथ के व्यापारी
दुनिया मतलब की - - - १

बेटा जिन पर जीवन लगावे
अब वह शादी न हो जावे
फिर वो एक नजर न भावे
दुनिया मतलब की - २

हो जब तक जेब में पैसा खनके
दुनिया रहेगी तेरी बनके
फिर वो लात मारे जमके
दुनिया मतलब की - - - २

मेरी अभी ऊँगली बाकि है, हाँ मानाकि वह पैसे देते थे तो पढ़ाई तो मैं करता था मेहनत तो मैं करता था। पैसे देने से क्या होता है मैं तो भीख माँगकर या किसी के यहाँ काम करके पैसा कमा सकता था। अरे इन्होंने पैसे कहाँ से कमाये, जिन्दगी भर चोरी ही तो की है। मैं यह दवाई नहीं पी सकता हूँ।

साधु - अरे तुम तो इसकी पड़ोसी हो तुम पी लो।

पड़ोसी - नहीं मैं क्यों पीऊँ, मैं इनकी कौन लगती हूँ। मेरा इनसे कोई नाता नहीं है।

साधु - अरे भाई। तुम्हारे साथ तो इन्होंने [illegible] चोरी की है तुम इसे पी लो।

चोर - अरे इनके लिए मैं अपनी जान दे दूँ। मैंने तो पहले ही सोच लिया था कि अगर मैं पकड़ा जाता तो फिर मैं तो बच के निकल जाता इसी को फंसा देता और अब तुम इसके लिए हमारी जान लेना चाहते हो। हट जाओ मेरे सामने से।

साधु - ओ माते अब कोई नहीं बचा एक मात्र तुम ही हो, तुम्हारे तो ये स्वामि है इनके बिना तुम क्या करोगी।

माँ - अरे यह आप क्या कह रहे हो, अगर ये चले गये तो फिर मैं भी जाऊँ ये तो चले गये लेकिन इस घर के लिए मैं तो

Teacher's Signature

सोने की ईंट (नाटक)

पात्र :

वृद्ध पिता - सेठ धनीराम

चार पुत्र

बड़ा - छगन

छोटा - मगन

छोटा - सोहन

छोटा - मोहन

बहू - छगन की पत्नि

बहू - मगन की पत्नि

मित्र - ज्ञानचन्द

'पहला दृश्य'

स्थान - (सेठ धनीराम का मकान। वृद्ध धनीराम अपनी चार पाई पर बैठा है सामने से ज्ञानचन्द आते हैं।)

धनीराम - आईये पण्डित जी! मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था?

ज्ञानचन्द - कहिये धनीराम जी क्या सेवा है आपके

धनीराम - (खांसते हुये) सेवा कुछ नहीं। सलाह लेनी है।

ज्ञानचन्द - किसी व्यापार के विषय में ?

धनीराम - अरे पण्डित जी। व्यापार तो जिन्दगी भर करता रहा और धन भी संग्रह किया अब जीवन के अन्तिम क्षणों में इस भार से मुक्त होना चाहता हूँ!

ज्ञानचन्द - मैं आपका अभिप्राय समझा नहीं।

धनीराम - तो समझ लीजिए मित्र, बात यह है कि अपनी सारी सम्पत्ति अपने चारों आज्ञाकारी पुत्रों में बाँटना चाहता हूँ जिससे मेरे मरने के बाद उनमें लड़ाई न हो।

ज्ञानचन्द - बात तो ठीक है, लेकिन विचारणीय है।

धनीराम - वह कैसे ?

ज्ञानचन्द - ऐसे कि जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। दम एक क्षण में निकल जाये नहीं तो दस वर्ष तक न निकले, ऐसी अवस्था में [illegible] का पैसा ही काम आता है। बुढ़ापे में किस[illegible] पर जानबूझ कर आश्रित होना, बुद्धिमानी नहीं है

REDMI NOTE 5 PRO
CAMERA

(सोने की ईंट)

मोहन- नहीं भैया, अन्तिम संस्कार में खर्च होगा, इसलिए आपन लोग पिता जी को नदी में बहा देते हैं।

सोहन- ठीक कहते हो भैया।

मगन - चलो! तो ले चलो जल्दी।

[अभी पिता जी को नदी मे फेंक आते हैं और पेटी खोलते ही है कि इतने मे ज्ञानचन्द पण्डित जी भी वहां आ जाते हैं]

श्लोक:

1. मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वंदे तद्गुणलब्धये॥

अर्थ:- जो मोक्षमार्ग के नेता हैं, कर्मरूपी पर्वतों के भेत्ता हैं और सर्व तत्त्वों के ज्ञाता हैं, उनको मैं उन गुणों की प्राप्ति के लिए प्रणाम करता हूँ!

2. "भवबीजाङ्कुरजनना रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै॥"

अर्थ:- जिसने संसार के कारणभूत रागादि को क्षय कर दिया है, उसे हो नमस्कार हो, चाहे वह ब्रह्मा हो, विष्णु हो, हर हो या जिन हो।

3. पक्षपातो न मे वीरे न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रहः॥

अर्थ:- मुझे महावीर जिनेन्द्र से कोई पक्षपात नहीं है और अन्य कपिलादि से कोई पक्षपात अर्थात् द्वेष नहीं है, परन्तु जिसके वचन युक्तिसंगत हों उसी का ग्रहण करना चाहिए।

I NOTES PRO
RA

सामान्य

प्रश्न

01 पंच परमेष्ठी कौन से एक शब्द में गर्भित है?
02 सोलहकारण, दश लक्षण, रत्नत्रय, वर्ष में कितनी बार आते है ?
03 अष्टान्हिका पर्व वर्ष में कितनी बार आते है ?
04 भारत में बूचड़ खाने किस जैन त्यौहार के दिन बंद रहते है ?
05 जिस घर में जिनवाणी नही होती उसे क्या कहते है ?
06 तत्वार्थसूत्र में कितने अध्याय तथा सूत्र है व दूसरा नाम क्या है ?
07 चौबीस तीर्थंकरों में पांच तीर्थंकर के नाम लिखिये जिनके जीवन में समानता हो तथा उनके नम्बरों का योग 100 हो?
08 पांच इन्द्रियों की [illegible] में कौन–कौन प्रसिद्ध है ?
09 महावीर जी अतिशय क्षेत्र में मूलनायक प्रतिमा कौन सी है?
10 उपाध्याय परमेष्ठी की मूर्ति कहां पर है ?
11 गोम्मटेश की मूर्ति का निर्माण किसने कराया था ?
12 सबसे ऊंची खड्गासन मूर्ति कहां पर है ?
13 सबसे ऊंची पद्मासन प्रतिमा कहां पर है ?
14 छः महीने आठ समय में कितने जीव मोक्ष जाते है ?
15 पर्व पर्युषण कौन से होते है एवं कब आते है ?
16 हरित वर्ण के तीर्थंकरों के नाम लिखो ?
17 प्राणी जीव दूसरों के प्रति व्यवहार करते है, सुखी जनों से, दुखियों से दुर्जनों से?
18 क्रोध, मान, माया, लोभ का स्वरूप क्या है ?
19 तीर्थंकर आदिनाथ जी को वैराग्य का क्या कारण था ?
20 तीर्थंकर महावीर को किस पर्याय में सम्यक दर्शन हुआ ?
21 363 मत किसने चलाये ?
22 भगवान महावीर का नाम सन्मति क्यों पड़ा ?
23 राजकुमार महावीर ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?
24 राजकुमार महावीर का वंश कौन सा था?
25 वे कौन थे जिन्होंने धार्मिक वादियों से शास्त्रार्थ कर जैन धर्म का डंका बजाया ?
26 वे कौन थे जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिये प्राणों का बलिदान दिया?

निम्न प्रश्नों के 4 विकल्प दिये गये है सही उत्तर पर रेखांकन कीजिये —

27 जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है ?
28 श्रमण संस्कृति मानव को बनाती है ?
29 क्या खो जाने से सब कुछ खो जाता है ?
30 इस प्राणी का हितकारी कौन है ?
31 श्रमण संस्कृति हमें सिखाती है ?
32 श्रमण संस्कृति प्रेरणा देती है ?
33 श्रमण संस्कृति का सर्वोपरी लक्ष्य है ?
34 कुसंगति मानव को बनाती है ?
35 श्रमण संस्कृति सिखाती है ?
36 भगवान कहलाते है ?
37 संसार में सुखी है ?
38 मनुष्य जीवन की सफलता क्या करने से है ?
39 सुसंस्कृती का अर्थ है ?
40 संसार में वे भाग्यवान है ?
41 कर्मोदय तथा बंद के समय ज्ञानी जीव कैसा भाव रखते है?
42 श्री क्षुल्लक गणेश प्रसाद जी वर्णी का जन्म स्थान कहां है ?

उत्तर

ॐ (ओम)
भादों, माघ, चैत्र मास में तीन बार
कार्तिक, फाल्गुन, आषाढ़ के अंतिम आठ दिनों में तीन बार।
महावीर जयंती
श्मशान
मोक्ष शास्त्र, सूत्र – 357 तथा अध्याय – 10
वासुपूज्य, मल्लिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमीनाथ, महावीर ये सभी बाल ब्रह्मचारी थे, 12+19+22+23+24 = 100
स्पर्श में हाथी, रसना में मछली, घ्राण में भौंरा, चक्षु में पतंगा और कर्ण में हिरण।
भगवान महावीर स्वामी।
देवगढ़
चामुण्डराय
बावनगजा बड़वानी भगवान आदिनाथ जी।
गोपाचल सिद्धक्षेत्र (ग्वालियर) भगवान पार्श्वनाथ
608 (छः सौ आठ)
अष्टमी चतुर्दशी प्रतिमाह दो–दो बार।
भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान सुपार्श्वनाथ
गुणियों में प्रेम, दुःखियों में करूणा, दुर्जनों में माध्यस्थ भाव रखते है।
क्रोध – अंधा, मान–बहरा, माया–गूंगी, लोभ –नकटा होता है।
नीलांजना का नृत्य।
सिंह की पर्याय में।
मारीची (महावीर का पूर्व भव का जीव)
संजय, विजय मुनिराज की शंका दूर होने के कारण।
शाल वृक्ष के नीचे।
नाथ वंश
श्री अकलंक देव।
निकलंक देव।

गरीबी, एकाकी जीवन, कुसंस्कार, शारीरिक कमजोरी
कर्मठ, भाग्यवादी, उदारवादी, रूढ़िवादी
धन, स्वास्थ्य, परिजन, सदाचार।
पैसा, प्रतिष्ठा, सम्यग्दर्शन, प्रदर्शन।
परोपकार, आत्मनिर्भरता, परस्पर सहयोग, तीनों
अच्छा सोचें, अच्छा करें, समता भाव रखें, तीनों।
त्याग, समभाव, आत्मदर्शन, मुक्ति।
भटकाती है, कुकर्मों में प्रेरित करती है, दुःखी बनाती है, तीनों।
श्रेष्ठ विचार, विश्व मैत्री, करूणा, तीनों।
निर्माता, दृष्टा, रक्षक, विनाशक।
स्वर्गवासी, सम्पत्ति वाले, भोगसम्पन्न, सम्यग्दृष्टी।
पद प्राप्त करने, पैसा, प्रतिष्ठा, तप करना।
पढ़लिखा होना, चतुर, सदाचारी, सुंदर।
सम्पत्ती वाले, सन्तान वाले, कुटुम्ब वाले, सफलसुखी।
कर्मोदय में समता व कर्म बंद के समय सावधानी।
ग्राम हसेरा (ललितपुर)

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता

नियम

— इस प्रतियोगिता में पाँच राउण्ड रखे जायेंगे— अक्षर, शब्द, मुखड़ा-अन्तरा, [illegible]न एवं परिस्थिति राउण्ड।

— प्रतियोगी दो या तीन के समूह में नाम लिखायें।

— तत्काल बनाया गया भजन मान्य नहीं होगा।

— अत्याधुनिक फिल्मी तर्जों के भजन मान्य नहीं होंगे।

— आपका भजन प्रामाणिक होना चाहिए।

— सही बोलने पर दस अंक मिलेंगे।

— नहीं बोलने पर शून्य मिलेगा।

— गलत बोलने पर माइनस दस एवं बोनस पर भी दस अंक मिलेंगे।

— निर्णायक का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

१. अक्षर राउण्ड

— अक्षर राउण्ड में अन्तिम अक्षर पर गीत बोलना होगा।

— श ष एवं स एक समान चल सकते हैं।

— क्ष = क ष, त्र = त र, ज्ञ = ग चलेंगे।

२. शब्द राउण्ड

आपको एक शब्द दिया जायेगा; वह शब्द भजन, पूजन या स्तुति की पहली पंक्ति में आना चाहिए।

मङ्गल	—	मङ्गलं भगवान् वीरो.......।
अशरीरी	—	अशरीरी सिद्ध भगवान......।
जिनराज	—	आज हम जिनराज.......।
मुनिराज	—	होली खेलें मुनिराज....।
परमेष्ठी	—	पञ्च परम परमेष्ठी.....।
मन्दिर	—	मेरे मन मन्दिर.......।
महापुण्य	—	मैं महापुण्य उदय......।
महिमा	—	महिमा है अगम....।
वाणी	—	सुनकर वाणी जिनवर.....।
परम दिगम्बर	—	परम दिगम्बर मुनिवर देखे...।
मुद्रा	—	है परम दिगम्बर मुद्रा....।
जीयरा	—	जीयरा हो जीयरा.....।
संत	-	संत साधु बन के विचरू.....

२३. हमें देव-शास्त्र-गुरु की पूजा करनी चाहिए। √
२४. नरक सात होते हैं।
२५. तुम ब्रह्मचारी हो।
२६. तुम भगवान आत्मा हो।
२७. तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता उमास्वामी हैं।
२८. छहढाला के रचयिता बनारसीदास हैं।
२९. सुकुमार मुनि ने उपसर्ग किया था।
३०. तुम भूत हो।
३१. मुनि ईसीसागर में है।
३२. बाहुबली पाँचवें तीर्थंकर हैं।
३३. व्यसन सात होते हैं।
३४. जिनवाणी सुनना चाहिए।
३५. परिग्रह पाँच होते हैं।
३६. प्रमाद के १५ भेद होते हैं।
३७. माता १६ स्वप्न देखती है।
३८. गाय के सींग दो होते हैं।
३९. बारह भावनायें होती हैं।
४०. जैनधर्म महान नहीं है।
४१. जियो और जीने दो आदिनाथ का संदेश है।
४२. सम्यग्दर्शन के बिना मोक्ष नहीं होता।
४३. लोभ पाप का बाप नहीं है।
४४. १४ गुणस्थान होते हैं।
४५. धर्म दस नहीं होते, लक्षण १० होते हैं।
४६. हमें प्रवचन में सोना चाहिए।
४७. हमें प्रश्न का उत्तर गलत देना चाहिए।
४८. हमें रात्रि में भोजन करना चाहिए।
४९. तुम्हारे घर में आलू-प्याज नहीं बनते।
५०. तुम्हारा नाम ब्रह्म है।
५१. तुम्हें मोक्ष जाना है।
५२. अरहंत पिता हैं, जिनवाणी माता है।

५३. हमें पूरे जीवन भर पाप करना चाहिए।
५४. काना होना पुण्य कर्म का उदय है।
५५. भगवान हमारा भला करते हैं।
५६. सिद्ध भगवान लौटकर संसार में आते हैं।
५७. कमठ ने पार्श्वनाथ भगवान का उपसर्ग दूर किया।
५८. तुम काले पापकर्म के उदय से हो।
५९. तुम बहुत झूठ बोलते हो।
६०. चोरी करना पाप है।
६१. हमें माता-पिता को आश्रम में छुड़वा देना चाहिए।
६२. तुम्हें प्रवचन में आना चाहिए।
६३. तुम अभव्य हो।
६४. सीता लव-कुश की सास थी।
६५. रावण ने राम को मारा।
६६. तुम जानते-देखते हो।
६७. पापा को मम्मी से लड़ना चाहिए।
६८. तुम्हारी मम्मी मंदिर आती है।
६९. औरतें मंदिर में जाकर घर-गृहस्थी की चर्चा करती हैं।
७०. भगवान महावीर का चिह्न सर्प है।
७१. केवली भगवान चारों लोकों को स्पष्ट जानते हैं।
७२. तुम बहुत धर्मात्मा हो।
७३. साधु परमेष्ठी २८ मूलगुणों का अनाचार पूर्वक पालन करते हैं।
७४. हमें टी.व्ही. देखने से बहुत ज्ञान मिलता है।
७५. प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र व स्वाधीन है।
७६. द्वारिका नगरी कृष्ण ने जलाई।
७७. नेमीनाथ की शादी शानदार हुई।
७८. पार्श्वनाथ के माता-पिता सिद्धार्थ और त्रिशला हैं।
७९. हाथी नारकी जीव हैं।
८०. अमृतचन्द्राचार्य ने समयसार लिखा।
८१. २+२=४ होते हैं।
८२. भरत ने १ वर्ष तक तप किया।

1) पहले पांच अंक करने पर = मैंने मंदिर की नींव रख दी

→ मेरा शिखर बन गया।

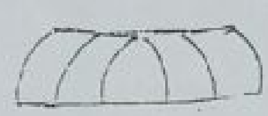 → मैंने छत्र चढ़ा दिया।

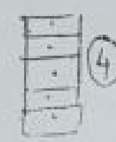 (4) → मेरे चारो स्तंभ खड़े हो गये।

→ मेरा भामंडल बन गया।

→ मैंने प्रभु की आरती उतारी।

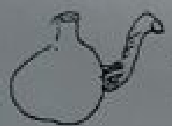 → प्रभुजी के कलश कीये (8) 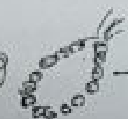 → मैंने माला फेरी

→ प्रभु को श्रीफल चढ़ाया।

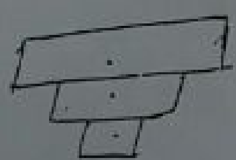 → मैंने मंदिरजी की सीढ़ीयां चढ़ी !

I. → मैंने मंदिरजी की स्थापना कर दी।

II → हम सिद्धालय पहुंच गये।

ON REDMI NOTE 5 PRO

आओ करें नवदेवता पूजन

जिन धर्म		सर्व साधु			जिनागम			जिन चैत्यालय
						उपाध्याय		
उपाध्याय						जिन चैत्य	सिद्ध	
	अरहंत	जिन चैत्यालय	सिद्ध		आचार्य			
			उपाध्याय		जिन चैत्य	अरहंत	जिन धर्म	
	जिन चैत्यालय	आचार्य						जिन चैत्य
		उपाध्याय						
सर्व साधु			आचार्य			जिन धर्म		सिद्ध

नोट –1. प्रत्येक पंक्ति में पूरे नौ देवता के नाम भरे जाना आवश्यक है।

2. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एक 3 × 3 के वर्ग में किसी भी नव देवता का नाम दुबारा ना आये।

नाम ________

रिक्त स्थान पहेली:

....

....

तुम को बिन जाने जो .... पाये सो तुम जाणत जिनेश ।

............ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः ।

.... जीव न हणनुते, सब विधी दरवहिंसा टरी ।

.... महाबल सेनानी उस क्षण को टाल सकेगा क्या ।

हे .... भव दुःख मेटो याते मै पुजो प्रभा पाय ।

तुमको पूजे .... अहिपति नरपति देव ।

जो .... हुँ या, सम्यग्दर्शन बिन दुःख पाय ।

हुँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम ज्ञाता दृष्टा .... ।

वे .... महान जिन विचरे हमारे ध्यान में ।

.... सिद्ध भगवान आदर्श तुम्ही मेरे ।

मुनि सकलव्रती ...., भव भोगन में वैरागी ।

जजु भावना .... रत्नत्रय जा बिना शिव नहीं कदा ।

.... जह तरंग उछलत सुखदानी ।

युगपत होते हुँ प्रकाश .... ते होई ।

सो जिनवर वाणी .... त्रिवचनमार्न। पुज्य भई ।

वीतराग सर्वज्ञ .... भविजन की अब पुरो आस !

देह जीव को एक गिने .... तत्त्व मुधा है ।

सुख विस्तार वे को, यही .... है ।

है अजेय ....का हर्ता, णमोकार यह मंत्र महा !

.... में ज्ञान न लह्यो तरुण समय तरुणीरत रह्यो ।

ऐसे प्रभु की .... को नद्धन जलते करे ।

राजा राणा ....; हथियन के असवार ।

.... तेरी वाणी शुभनय के झरणे झरते हैं ।

मंगल .... यह भवसागर दृढ़पोत ।

.... मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।

सभी के उत्तर इसी में ही लिखना है ।

भेदाभेद पहेली

नाम - ____________________

(1) मिथ्यात्व ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(2) लब्धि ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(3) मेरु ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(4) स्वाध्याय ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(5) संवाय ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(6) परमागम ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(7) समिति ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(8) पंचाचार ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(9) भाव ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(10) बालयति ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(11) अभक्ष्य ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(12) उदुम्बर ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(13) परावर्तन ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(14) वर्गणायें ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(15) आस्रव ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(16) स्थावर ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(17) अनर्थदण्ड ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(18) अनुत्तर ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(19) शरीर ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(20) चारित्र ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(21) अजीव ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(22) अन्तराय ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(23) वर्ण ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(24) रस ---------- ---------- ---------- ---------- ----------
(25) अस्तिकाय ---------- ---------- ---------- ---------- ----------

नोट : इसमें आपको अभेद और भेदरूप दोनों शब्दों की पूर्ति करना है।

ऐसे 15 प्रकार के घर हैं। प्रत्येक में 4-4 सदस्य हैं, जिसमें 3 सदस्य उसी घर के मूल निवासी हैं तथा एक अतिथि है। आपको उस अतिथि को पहचानना है, साथ ही आपको यह भी बताना है कि ये घर किन-किन के हैं?

जैसे — सिद्धक्षेत्र
- सम्मेदशिखर | गिरनार
- कैलाशगिरि | मह.वीरजी √

1-
- द्वेष | क्रोध
- मान | माया

2-
- हिंसा | झूठ
- कुशील | मिथ्यात्व

3-
- अर्थ | अर्थी
- [illegible] | [illegible]

4-
- क्षमा | कषाय
- मार्दव | आर्जव

5-
- महावीरजी | तिजारा
- पद्मपुरा | कुण्डलपुर

6-
- वाचना | पृच्छना
- आम्नाय | देशना

7-
- कृष्ण | [illegible]
- कापोत | नील

8-
- अन्तरात्मा | बहिरात्मा
- परमात्मा | धर्मात्मा

9-
- देव | शास्त्र
- दौलतराम | गुरु

10-
- जयसेन | अमृतचन्द्र
- आशाधर | ज्ञानसागर

11-
- दौलतरामजी | बनारसीदासजी
- कुन्दकुन्दजी | टोडरमलजी

12-
- अरनाथ | शान्तिनाथ
- कुन्थुनाथ | मल्लिनाथ

13-
- जलकाय | पृथ्वीकाय
- अग्निकाय | त्रसकाय

14-
- ज्ञानावरण | दर्शनावरण
- मोहनीय | आयु

प्रस्तुति :
बीना लुहाड़िया
संजय शास्त्री

कौन बनेगा विद्वान

DATE / /
PAGE NO

(1)- यह गेम 5 भागों में विभक्त होगा -
(1) संख्यात्मक राउंड | (3 प्रश्न)
(2) कात्मिक राउंड | (3 प्रश्न)
(3) आओ जानें प्रथमानुयोग | (3 प्रश्न)
(4) सुलझाओ पहेलियाँ | (2 पहेली)
(5) विकल्पात्मक राउंड | (3 प्रश्न)

(2) - इस गेम में 5 टीम बनाई गई है -
(1) टोड़रमल जी (2) भूधरदास जी (3) दौलतराम जी
(4) द्यानतराम जी (5) वृंदावन जी
प्रत्येक टीम में 2-2 विद्यार्थी रहेंगे।

(3)- 1, 2, 3 = 3-3 प्रश्न
4 = 2 पहेली
5 = 3 प्रश्न

(4) प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक रहेंगे, सही उत्तर देने पर पूरे अंक मिलेंगे, नहीं बताने पर (00) अंक रहेंगे, व गलत बताने पर -5 हो जाएगे।

(5) इस प्रत्येक प्रश्न को सोचने का समय 10 सेकेंड रहेगा।

(6) निर्णायक का निर्णय सर्वमान्य रहेगा।

समय सीमा मात्र 10 second

M 11 12 13 14 15 16 17

कौन बनेगा विद्वान

प्रथम राउन्ड -

संख्यात्मक प्रश्न -

(1) वर्गणाओं के कितने भेद हैं - 22
(2) एक काल में कितने चक्रवर्ती होते हैं - 12
(3) भ. महावीर के बाद कितने जीव मोक्ष गये - 3
(4) अरहंत भगवान के कितने मूलगुण होते हैं - 46
(5) "काल" कितने प्रकार के होते हैं - 3
(6) प्रमाण लक्षण में कितने विशेषण दिये गये हैं - 5
(7) परोक्ष ज्ञान के कितने भेद हैं - 5
(8) लक्षणाभास कितने प्रकार के होते हैं - 3
(9) अनुमान के कितने भेद हैं - 5
(10) दृष्टांत के कितने भेद हैं 2
(11) कुन्दाकुन्दाचार्य के प्रचलित नाम - 5
(12) जीव के असाधारण भाव - 5
(13) जम्बूकुमार की कितनी पत्नियाँ थी - 4
(14) काल द्रव्य कितने हैं प्रदेशी हैं - 1
(15) जम्बूद्वीप की कितनी मुख्य नदियाँ हैं - 14
(16) नंदीश्वर द्वीप कौन से नंबर का द्वीप है - 08
(17) पूजन के कितने अंग हैं - 05
(18) चारित्र के भेद - 04
(19) महावीर स्वामी का मुनि अवस्था काल - 12 वर्ष
(20) उपाध्याय परमेष्ठि के मूलगुण - 25
(21) सिद्ध परमेष्ठि के मूलगुण - 08
(22) समयसार में कितनी गाथाऐं हैं - 415
(23) राजा बलि द्वारा हस्तिनापुर में कितने मुनियों पर उपसर्ग हुआ था - 700
(24) कितने क्षेत्रों में 24 तीर्थंकर होते हैं 2
(25) पंचम गुणस्थान में होने वाली शुद्धि को आचार्य ने कितने दर्जों में विभक्त किया है - 11
(26) 813 योग होते हैं।

Teacher's Signature

"न वर्ण"

(1) गोम्मटसार ग्रंथ के रचयिता - नेमीचंद्राचार्य
(2) समुद्रविजय के पुत्र नेमीनाथ
(3) किसकी मृत्यु को देखकर आदिनाथ को वैराग्य हुआ था - नीलांजना
(4) मुनिराज के सात शेष गुणों मे से एक - नग्नता
(5) सात तत्व व बारह भावनाओं मे से एक .. निर्जरा
(6) षट्-लेश्याओं मे से एक - नील
(7) वह स्थान जहाँ के जीवों ने अनादि से त्रस पर्याय प्राप्त नहीं की - नित्य निगोद

प - वर्ण

(1) नियमसार ग्रंथ के टीकाकार -- पद्मप्रभमलधारी देव
(2) षट्खण्डागम ग्रंथ के रचयिता -- पुष्पदंताचार्य
(3) दौलतराम जी ने किनके फल में हर्ष-विषाद करने को निषेध किया है - पुण्य-पाप
(4) सामान्य गुणों मे से एक -- प्रदेशत्व
(5) सुमेरु पर्वत का एक वन - पांडुक वन
(6) योगिन्दुदेव द्वारा रचित एक ग्रंथ - परमात्म प्रकाश
(7) अरहंत भगवान का शरीर - परम औदारिक
(8) काम बाण के विध्वंस के लिए चढ़ाया जाने वाला मंगल द्रव्य - पुष्प

तृतीय राउंड आओ जानो प्रथमानुयोग

वे कौन थे

1 वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने पैर के अँगूठे से कैलाश पर्वत को ~~दबाया~~ दबाया था। - बाली मुनि

2 वे कौन थे जिन्होंने कठिन परिश्रम के बल पर कन्नड भाषा का ज्ञान किया था - टोडरमल जी

3 वे कौन थे जिन्होंने अर्द्धकथानक लिखा है - बनारसी दास जी

वे कौन थे जिन्होंने सभा में 45 बार समयसार का स्वाध्याय किया है - पूज्य गुरुदेव श्री

(5) 4 वे कौन थे जिन्होंने 47 नय व 47 शक्तियों का वर्णन किया - आचार्य अमृतचंद्र

(6) 5 वे कौन थे जिनके निमित्त से द्वारिका जली - द्वीपायन मुनि

(7) 6 वे कौन थे जिन्हें दीक्षा के अन्तर्मुहूर्त बाद ही केवलज्ञान हो गया था - भरत

(8) 7 वे कौन थे जो इस युग के प्रथम कामदेव थे - बाहुबली जी

(9) 8 इस युग के प्रथम आहारदाता कौन थे - राजा श्रेयांस

(10) वे कौन थी जिनके ब्रह्मचर्य के प्रभाव से उनसे स्पर्शित जल से समस्त रोग दूर हो जाते हैं - विशल्या

(11) 9 वे कौन थे जिन्होंने संस्कृत प्राण का प्रथम जैन ग्रंथ लिखा - भारतमुनि

(12) वे कौन थी जिन्होंने अपने पिता के स्वाभिमान की रक्षा के लिए विवाह नहीं किया था - ब्राह्मी, सुन्दरी

(13) 10 वे कौन थे जिन्होंने भगवान महावीर के समवशरण में 60,000 प्रश्न पूछे थे - राजा श्रेणिक

(14) 11 वे कौन थे जिनके चरणों की पूजा देवों के द्वारा की गई थी - पूज्यपाद आचार्य

(15) वे कौन थे जिनको तत्वों के बारे में शंका हुई थी, जो बालक वर्धमान को देखने मात्र से नष्ट हो गई थी - संजय, विजय मुनिराज

11 वी शताब्दी मे बाहुबली की मूर्ति बनाई

(16) 12 वे कौन थे जिन्होंने श्रवणबेलगोला में बाहुबली भगवान की मूर्ति बनवाई थी - चामुण्डराय जी (1)

(17) वे कौन थी जिन्होंने युद्ध में अपने पति की सहायता की थी - ।

(18) वे कौन थी जिनके शील के प्रभाव से पैर के अंगूठे से नगर का दरवाजा खुल गया था - मनोरमा । (5)

(19) वे कौन थे जो वैश्या पर मोहित होकर उसी के घर पर ही रहने लगे थे ? - सेठ चारुदत्त (3)

(20) 13 इस युग के अन्तिम मोक्षगामी कौन थे - जम्बूस्वामी । (5)

उनके पिता का क्या नाम

(21) 14 वे कौन थे जिनके जन्म के समय उनको उनका शत्रु उठाकर ले गया था - बालक प्रद्युम्न । (5)

(22) 15 वे कौन थे जिनको जंजीर से बाँधा गया - मानतुंगाचार्य (6)

(23) वे कौन थे जिन्होंने श्रीपाल को समुद्र मे फेंक दिया था -

(24) वे कौन थे जिन्होंने शेर को जलेबी खिलाई थी - अमरचंद दिवान (1)

(25) श्रीराम के सेनापति का नाम बताइये - कृतांतवक्र

(26) 16 वे कौन थे वो योद्धा थे जिन्होंने राम व लक्ष्मण को भी अपनी युद्ध कला से आश्चर्य (संशय) में डाल दिया था - लवकुश (2)

17 अंक नाम कौन कौन तीर्थंकर के है।

18 गुरु महावीर भगवान ने कितने वर्ष तक तप किया है

19 कौन कौन से क्षेत्र मे चौबीस तीर्थंकर होते है।

20. कुल कितने भरत क्षेत्र है।

होड हाथार घोडे, 84 लाख हाथी इत्यादि संपति बहु तेरी 6

चतुर्थ खण्ड

पहेलियाँ सुलझाओं

(1) छह अक्षर का मेरा नाम
जड़ से निर्मित होकर भी
पूजते तीर्थंकर भगवान . समवशरण

(2) जिस शक्ति के योग से रहे सदा आकार
सभी द्रव्य का गुण यही, जानत सुख अपार - प्रदेशत्वगुण

(3) जाने लोकालोक को, गुण पर्याय अरु द्रव्य
ज्ञानावरण के अभाव से प्रगट होय वह गुण।
- केवलज्ञान

(4) चार अक्षर का मेरा नाम, छह खण्डों में मेरा धाम
मैं लघु समयसार कहलाता जाने मुझको दौलतराम
- छहढाला

(5) मैं सबको रुलाकर दुख देती, सबकी सुख शांति हर लेती
मैं हूँ चार पुत्रों की माता, मेरा नाम किसे है आता।
- कषाय

(6) जिस शक्ति के योग से, सदा रहे परिणाम
धारक जिसके द्रव्य सभी, बूझो जिसका नाम
- अस्तित्व गुण

(7) जो श्रुतज्ञान के अंश हैं, वक्ता के अभिप्राय
करे मुख्य और गौण जो, जानत चित हर्षाय
- नय

-> कुंदकुंद ने शास्त्र बनाया. अमृतचंद्र ने कलश चढ़ाया
~~[illegible]~~
-> कहान गुरु ने ~~इसे है गाया~~ ने गाया इसको अनुशीलन दादा ने कराया
समयसार

जाने मन की बात को, मुनियों का यह ज्ञान
रूपी पदार्थ ही ज्ञेय हैं, अद्भुत ज्ञान ~~[illegible]~~
- मनःपर्यय ज्ञान

Notes

34. मुझे चाहिए रुपया पैसा, बोलो मेरा रूप है कैसा।
तृष्णा देवी मेरी माता, तीन लोक की सम्पत्ति खाता॥

परिग्रह

35. जिसके सर पे मैं चढ़ जाता, उसकी होवे पूजा फजहाता।
जो मुझसे अंधा हो जाता, छोटा बड़ा उसे न सुहाता॥

क्रोध

36. तीन अक्षर का मेरा नाम, पूरे लोक में मेरा धाम।
सारी दुनिया चलकर सकती, दुनिया कहती मेरा काम॥

अधर्म द्रव्य

37. सब नायक रत्नों का हार, मैं अविनाशी सुख का द्वार।
रत्नत्रय के तरु पर फलता, बोलो क्या है मेरा नाम॥

मोक्ष

38. वही गुरु है वही शिष्य है, वही उपास्य वही उपासक।
स्वयं ध्येय है स्वयं ही ज्ञाता, बोलो मेरा नाम जो ज्ञाता॥

आत्मा

39. नौ नाली जिस नगर में, सदा रहे उत्पात।
गली गली में रोग है, सदा करे दिन रात॥

शरीर

40. स्वर्गों के राजा कहलाएं, तीर्थंकर को न्हवन कराएं।
चिह्न देखते सबसे पहले, हम सब उनका नाम बताएं॥

सौधर्म इन्द्र

41.

42.

Notes

प्रश्नावली

1. आदिनाथ का जन्म कहा हुआ था - अयोध्या
2. उनकी माता का नाम क्या था - मरुदेवी
3. उनके पिता का नाम क्या था - नाभिराय
4. कितने कर्मों का उपदेश दिया - षट्कर्मों
5. प्रथम आहार किसका हुआ - इक्षु रस
6. प्रथम आहार से कौनसा पर्व प्रारंभ - अक्षय तृतीया

1. पुद्गल के विशेष गुण - 4
2. पुद्गल के प्रदेश कितने - संख्यात , असंख्यात , अनन्त
3. पुद्गल के कितने भेद - दो
4. सबसे छोटा पुद्गल - परमाणु
5. छः द्रव्यों में से एक मुर्तिक द्रव्य - पुद्गल
6. जीव के समान क्रियाशील द्रव्य - पुद्गल

1. तीर्थंकर कितने है - 24
2. बालब्रह्मचारी कितने हैं - 5
3. उपसर्ग विजेता कितने हैं - 2

दोहा

घास पात जे खात हैं, तिन्हें सतावे काम।
माल मलीदा जे भखें, तिनकी जानें राम॥

अभवच्चित्तविक्षेप, एकान्ते तत्त्वसंस्थितः।
अभ्यस्येदभियोगेन, योगी तत्त्वं निजात्मनः॥36॥

गुरूपदेशादभ्यासात्संवित्तेः स्वपरान्तरम्।
जानाति यः स जानाति, मोक्षसौख्यं निरन्तरम्॥37॥

निशामयति निःशेषमिन्द्रजालोपमं जगत्।
स्पृहयत्यात्मलाभाय, गत्वान्यत्रानुतप्यते॥39॥

एदम्हि रदो णिच्चं, संतुट्ठो होहि णिच्चमेदम्हि।
एदेण होहि तित्तो, होहदि तुह उत्तमं सोक्खं।

सुदपरिचिदाणुभूदा, सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो, णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।

णमोकार सा मंत्र नहिं, वीतराग सा देव।
ब्रह्मचर्य सा व्रत नहीं, यात्रा शिखर सम्मेद॥

देखत ही नवयौवना, लेश न चिंता निदान।
समझें पुतली काठ की, ते भगवान् समान॥

फूल रहे पर गंध नहीं, तो क्या सुंदर से सुख होगा।
नारी में यदि शील नहीं, तो क्या जीवन मधुबन होगा॥

अंगार सदृशी नारी, नवनीत सम: [illegible]
तत्तत्सान्निध्य मात्रेण, द्रवेत्पुंसां हि मानसम्॥

विपर्यासक्तं चित्तानां, गुण: को वा न नश्यति।
न वैदुष्यं न मानुष्यं, नाभिजात्यं न सत्यवाक्।

गांभ लाग विवेकः च, वैभव मानिता प्रपि।
कामार्ता:-खलु मुञ्चन्ति-किमन्यै: स्वं च जीवितम्।

काम न देखे, जात कुजात, भूख न देखे झूंठा भात।
नींद न देखे टूटी खाट, प्यास न देखे धोबी घाट॥

जग में जेती नारि हैं, तीनों गतियों मांहि।
रति इच्छा उनमें नहीं, ब्रह्मचर्य कहलाहिं॥

कर अभाव तिहुं वेद को, रमें सु आतम रूप।
प्रगट होय ब्रह्मचर्य तब, पावे मोक्ष अनूप॥

कुंडले नैव जानामि, नैव जानामि कंकणे।
नूपुरमेव जानामि, नित्यं पादाभिवंदनात्॥

जिसप्रकार आँख बंद करके भी अपने पिता को देखा जा सकता है परन्तु पिता के उ [illegible]
को नहीं देखा जा सकता उसी तरह आँख खोलकर कभी देखा ही नहीं तो आँख बंद [illegible]
के कैसे देखें। [illegible] जिसने आत्मा आँख खोलकर नहीं लिया तो आँख
बंद करके आत्मा कैसे प्राप्त कर पावे॥

- राजा रणजीत सिंह का चित्र बनावा- एक काना, ऊपर दोनों आंख सही, तीसरा निशाना लगाते हुये।
- अकबर बीरबल सबसे भोला कौन बताओ। रानी को दावत पर बुलाया, बाद में कपड़ा धोने को कहा

दोहे

- कोयल काको देत है, कागा काको लेत।
  मीठी वाणी बोलकर, जग अपनो कर लेत॥

- वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोए।
  औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

- सत्य अहिंसा प्रेम का, हमसे इतना नाता है।
  दीवालों पर लिख जाता है, दिवाली पर पुत जाता है॥

- पर की निन्दा सरल है, कठिन स्वयं की जान।
  जो अपनी निन्दा करे, जग में वही महान्॥

- बोली बोल अमोल है, बोल सके तो जान॥
  हिये तराजू तोलकर, पीछे बाहर खोल॥

- शब्द संभल कर बोलिये, इसके हाथ न पांव।
  एक शब्द अमृत करे, एक हृदय में घाव॥

- शब्द संभलकर बोलिये, शब्द खींचते ध्यान।
  एक शब्द मोहित करे, एक निकाले म्यान॥

- सत्य हर मुश्किल को आसान बना देता है।
  सत्य इंसान को भगवान् बना देता है॥
  सत्य मानव के जीवन की कसौटी है।
  सत्य इंसान को भगवान् बना देता है॥

- जान बूझकर अंध भये हैं, आंखन बांधी पाटी।
  भैया, यह जग धोखे की टाटी॥

- देखे, वैसी ही कहे, जैसा न आप मिलाय।
  न्यूनाधिक भी न करे, सत्य वचन कहलाय॥

- मधुर वचन हैं औषधि कटु-वचन-हैं तीर।
  स्रवन द्वार ह्वै संचरैं सालैं सकल शरीर॥

- वाणी ऐसी बोलिये मन का आपा खोय।
  औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

- बातें तो सब एक सी हैं कहने का ढंग
  सुने चना जीने लागे गमक मिर्च के संग

- मधुर वचन है औषधि कटु वचन है तीर।
  स्रवन द्वार ह्वै संचरैं सालैं सकल शरीर॥
  शब्द संभलकर बोलिये, शब्द के हाथ न पांव।
  एक शब्द अमृत करे, एक हृदय में घाव।